

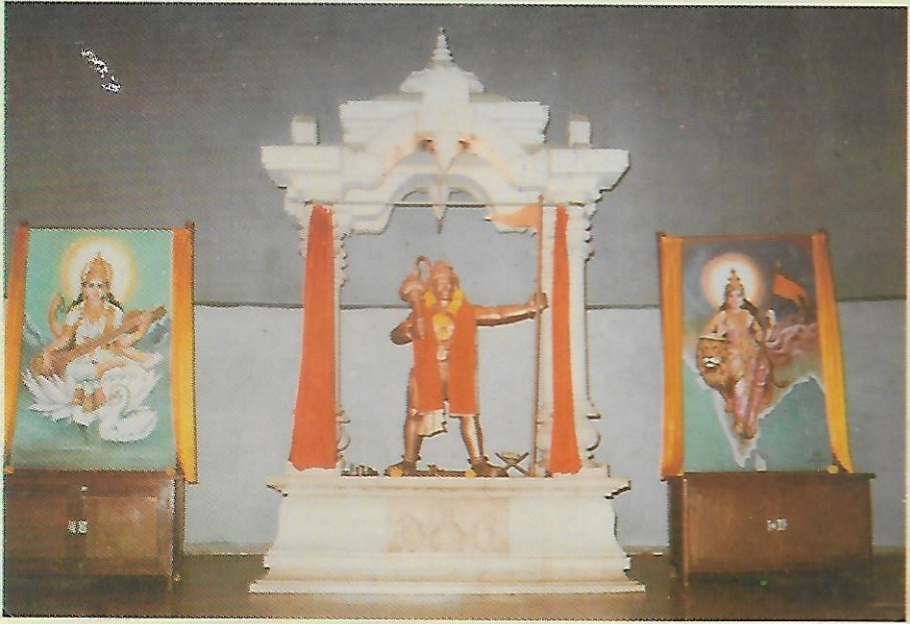
नीराजन

वार्षिक पत्रिका
२०००-२००१



पं० दीन दयाल उपाध्याय शनातन धर्म विद्यालय
कानपुर

हमारे आराध्य



प्रचण्ड तेजोमय शारीरिक बल, प्रबल
आत्म-विश्वास-युक्त बौद्धिक क्षमता
एवं निस्सीम भाव सम्पन्ना मनः
शक्ति का अर्जन कर, अपने
जीवन को निस्पृह भाव
से भारत माँ के चरणों
में अर्पित करना ही
हमारा परम
साध्य है ।

नीराजन्

वार्षिक पत्रिका

२०००-२००१



२८ वाँ अंक

पं० दीन दयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय

कानपुर

सम्पादकीय

अबकी देश का गणतंत्र-दिवस एक हादसे के साथ आया गुजरात में भूकम्प ने कुछ ऐसी तबाही मचाई कि पूरा देश काँप गया। पूरा देश एक भयानक सदमें में डूब गया। त्रासदी की एक अशुभ रेखा राष्ट्र के माथे पर खिंच गई। केवल कुछ क्षणों में ही सब कुछ बदल गया। बचपन की किलकारियाँ, यौवन की उमंगों और बुढ़ापे की वात्सल्यमयी आशायें भयंकर हादसे की भेंट चढ़ गई। प्रकृति के प्रकोप के समक्ष विज्ञान बौना हो गया। वैज्ञानिक प्रगति के आँकड़े मनगढ़ंत लगने लगे। ऐसा लगा कि प्रकृति जब प्रकोप करती है तो ध्वंश का इतिहास लिख जाता है। वैसे तो वह मानव की सहचरी है; लेकिन तभी तक, जब तक मानव उससे तालमेल करके चलता है। आजकल मनुष्य ने उसे जीतने का - उसे अनुचरी बनाने का अभियान चलाना प्रारम्भ कर दिया है। मनुष्य अप्राकृतिक होता जा रहा है। यानि के अपने ही नाश का बीज बो रहा है।

वेदों का कवि नदी, जलाशय, उषा, पूषा, मेघ, पर्वत वृक्ष और वनस्पतियों तक की वन्दना करता है। उन्हें पूजनीय मानता है। यानि कि वह पूरी तरह प्राकृतिक है। वह धर्म पर पूरी आस्था रखता है। वह अपने कल्याण के लिये प्रकृति से याचना करता है। औषधि के लिये भी वृक्षों से प्रार्थना करके ग्रहण करता है।

पौराणिक काल में भगवान कृष्ण ने एक महान उद्देश्य के लिये द्वारिका की स्थापना की थी। इसके लिये समुद्र से भूमि की याचना की थी और अपने उद्देश्य की पूर्ति के बाद नगर समेत पूरी भूमि समुद्र की समर्पित कर दी थी। यह था प्रकृति के प्रति श्रद्धा और सहयोग का भाव। लेकिन आजकल ऐसा कुछ नहीं है। वह प्रकृति से बलात् छीनने में विश्वास करने लगा है। वनों की अंधाधुंध कटाई कर रहा है। खनिजों का आवश्यकता से अधिक उत्खनन कर रहा है। परिणामतः प्रकृति के कोप का भाजन बन रहा है।

ईश्वर उसे सद्बुद्धि दे कि वह अधिक से अधिक प्राकृतिक रह कर ऐसी प्राकृतिक आपदाओं से बच सके। नीराजन परिवार प्रभु से यह प्रार्थना करता है कि वहाँ के लोगों को धैर्य और सहन शक्ति दे।

अबकी नीराजन के इस अंक को प्रस्तुत करते हुये मैं अपने सहयोगी आचार्य बन्धुओं का हृदय से आभारी हूँ। वस्तुतः इसको यह रूप देने में श्री कैलाश जी, श्री मनोज शुक्ल, श्री दिनेश भदौरिया और श्रीमती शारदा राव का विशेष योगदान रहा है। सबसे अधिक आभारी तो मैं अपने प्रधानाचार्य जी का हूँ जिन्होंने हर क्षण हमें प्रेरित किया है पूरे अंक को सजाने-सँवारने के लिये सम्पादक का दायित्व भी निभाया है।

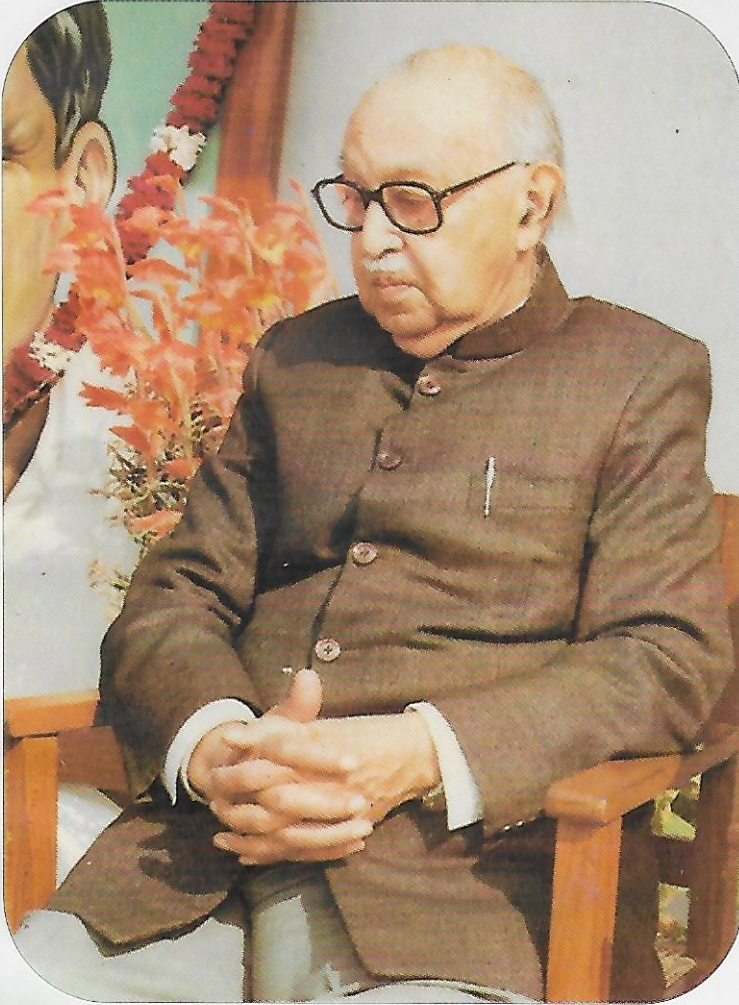
सुमन दुबे

अनुक्रमणिका

लपट को खुला निमंत्रण देता हूँ।	- श्री ओमशंकर त्रिपाठी	1 - 3
अपनापा	- डॉ० विश्वम्भरनाथ द्विवेदी	4 - 7
संस्कार एवं उपनयन	- श्री लक्ष्मी शंकर द्विवेदी	8 - 13
संचार-क्षेत्र में धमाका-इण्टरनेट	- आशीष प्रताप सिंह	14 - 15
बहुत ही चुका संघर्ष - विराम!	- संजय सिंह	16 - 17
भूल का एहसास	- शिवनाथ सिंह	17
चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में भौतिक विज्ञान का महत्व	- संजय सिंह	18 - 19
विनाश को आमन्त्रित करता मानव	- मयंक कुमार	20 - 21
स्वामिभक्त कुत्ता	- गौरव कटियार	22 - 23
ठाकुर साहब का जाना	- दुर्गेश वाजपेयी	24 - 25
रंग बदलती राजनीति	- विनय द्विवेदी	26 - 27
समाजशिल्पी पं० दीनदयाल उपाध्याय	- आलोक चतुर्वेदी	28 - 29
हमारी गाँव यात्रा : एक संस्मरण	- रवीन्द्र प्रताप सिंह	30 - 33
दुर्घटना : एक संस्मरण	- चन्द्रेश श्रीवास्तव	34 - 35
भारतीय बाजार चीनी ड्रैगन की चपेट में	- कुशाग्र द्विवेदी	36 - 37
बहुत घातक है धूम्रपान	- सोमकान्त मिश्र	38
सूचना प्रौद्योगिकी राष्ट्र के विकास के लिए अपरिहार्य है।	- अभिषेक अग्निहोत्री	39 - 41
लहू से लथपथ कश्मीर	- प्रतीक पाण्डेय	42 - 43
वृक्ष और कुल्हाड़ी	- गौरव मिश्र	44
आतंकवाद के साये में : अमरनाथ यात्रा	- मनोज कुमार त्रिपाठी	44 - 45
ऐसा था गुरुजी का बचपन	- सुमित जायसवाल	45
चरित्र निर्माण ही राष्ट्र निर्माण है।	- मोहित कटियार	46
अलौकिकताओं से भरा वनस्पति जगत्	- प्रखर वर्धन	47 - 48
सच्चा मित्र	- प्रफुल्ल श्रीवास्तव	49 - 50
गतिविधि	- ऋषि तिवारी	51 - 58
गुजरात में प्रकृति का कोप और मजहबी जुनून	- प्रणय कुमार	59 - 61
वार्षिकोत्सव : एक रिपोर्टाज	- प्रसून गुप्त, संजय सिंह	62- 66
ये ऐसा क्यों हुआ?	- मयंक मणि	67 - 68
अभिमान देश का यौवन है	- अभिषेक अग्निहोत्री	69
गुजरात की धरती	- कुलदीप सिंह राजपूत	70 - 71
गुजरात काँप उठा	- उत्कर्ष पाण्डेय	72
कश्मीर नहीं जाने पाये	- सुमित जायसवाल	73
भारत देश	- गौरव मिश्र	73
स्वतन्त्र भारत की कहानी	- रंजीत सिंह	74
हे तुलसी	- निखिल सचान	74

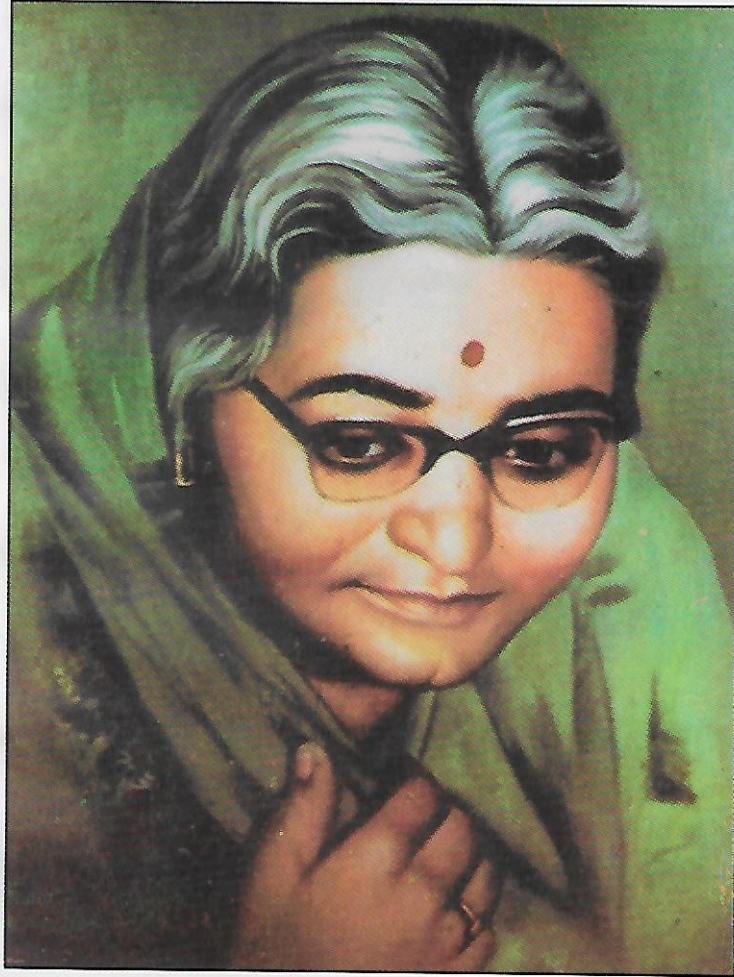
सैनिक का संकल्प	- पुलकित अग्रवाल	75
गंगा तू है बड़ी महान	- आशीष पाल	75
शौर्य की परिभाषा	- अमित कुमार गुप्ता	76
पंचशील से और शान्ति के सिद्धान्तों से	- ओम कुमार शुक्ल 'साहिल'	77
भारत की अभिट निशानी है।	- प्रशान्त द्विवेदी	78
चिरन्तन शान्ति	- शौर्यजीत सिंह "अंकुर"	79
महात्मनस्तुलसीदासस्य युगबोधः	- डॉ० विश्वम्भरनाथ द्विवेदी	80 - 81
अनुशासनम्	- सोम कान्त मिश्रः	82
अस्माकं मातृभूमिः	- रोहित कटियार	82 - 83
आदर्शः गुरुः	- सुबोध राजपूत	84
संस्कृत भाषायाः माहात्म्यम्	- शरद कश्यप	85
AUTOBIOGRAPHY OF COPPER COIN	- VIRENDRA SINGH PANDEY	86-88
GRAMMAR FAMILY	- VARUN KUMAR MISHRA	89
MY GOAL	- DURGESH VAJPEYI	89
FAILURE	- ASHISH TIWARI	90
HARD WORK AND PRACTICE	- VIKAS SHUKLA	91
DON'T INVITE THE BIG DELUGE	- MAYANK GUPTA	92-93
HEALTH IS WEALTH	- G. P. VERMA	94
DIVISION IS DISTURBING	- ABHAYA MISHRA	95
MORAL EDUCATION	- SRI AUROBINDO GHOSH96	
HOW TO GET SUCCESS	- RAMJI SHUKLA	97
AUTHOR'S GALORE	- ASHISH SHUKLA	97
POINTS TO PONDER	- SOMKANT MISHRA	97
COMPUTER	- PUSHKAR SINGH	98-99
POWER OF WORDS	- HIMANSHU VERMA	99
A VISIT TO CENTRAL INSTITUTE OF MEDICINAL AND AROMATICAL PLANTS (CIMAP)	- AMIT RANJAN TRIVEDI	100-101
IMMORTAL THOUGHTS OF GREAT MEN	- THOMAS BROOKS	101
BIOTERRORISM	- ASHISH KUMAR	102-103
SECRET OF SUCCESS	- SRI U. C. TIWARI	104
"NOTHING BUT EVERYTHING"	- ANUBHAVA NIGAM	105
OUR SWEETEST SONGS ARE THOSE THAT TELL OF SADDEST THOUGHT'	- SHARDA RAO	106-107
A VISIT TO BHAKRA DAM	- VINOD KUMAR	107
APPLICATION OF SCIENCE IN EVERYDAY LIFE	- SHAILENDRA PORWAL	108-109
GOOD HEALTH	- PRADEEP AWASTHI	110
THE FLOWERS	- PRADEEP AWASTHI	110
OUR INDIA	- PRADEEP AWASTHI	10
INDIA : OF MY DREAMS	- MANIKANT KISHOR	111-112
पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर		113 - 118
उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद की हाईस्कूल परीक्षा में सम्मिलित होने वाले विद्यालय के विद्यार्थी		119 - 120
उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद की इण्टरमीडिएट परीक्षा - 2001 में सम्मिलित होने वाले विद्यालय के विद्यार्थी		121 - 122
विद्यालय-परिवार		123 - 124

त्याग और तितिक्षा की मूर्ति



प्रेरणापुंज बैरिस्टर साहब
(बैरिस्टर नरेन्द्र जीत सिंह)

समर्पण की परिभाषा



ममतामयी बूजी
(श्रीमती सुशीला नरेन्द्रजीत सिंह)

लपट को खुला निमंत्रण देता हूँ।

कवि युग का चारण होता है। उसकी आवाज युग की आवाज होती है। इसी में कवि और कविता की सार्थकता है। कभी वह तुलसी के स्वर में ऐसे राजा को नरक का अधिकारी बताता है, जिसके राज्य में प्रजा दुखी रहती है, कभी कुम्भनदास के स्वर में "जिनको मुख देखे दुख उपजत, तिनको करिबे परी सलाम" कह कर दरबारी चाटुकारिता की भर्त्सना करता है। कभी दिनकर के स्वर में "दिल्ली में तो है खूब ज्योति की चहल-पहल, पर भटक रहा है सारा देश अँधेरे में" कह कर अपना आक्रोश व्यक्त करता है। युग-कवि के ऐसे ही धर्म का निर्वाह ओम शंकर जी की इस कविता में हुआ है।

सम्पादक

युग-चारण हूँ क्रान्ति-कथा के लिये निमंत्रण देता हूँ
और भोग की चिता जलाने का आमंत्रण देता हूँ।
जहाँ दूध के बिना विलखता बचपन हुचकी भरता हो
और बुढ़ापा बिना मौत के घुट-घुट भूखों मरता हो,
भरी जवानी बदहवास हो दुविधा के चौराहे पर
सत्ता ने शामत ढाई हो हर निरीह हलवाहे पर
उस दुनिया को आग लगाने का आमंत्रण देता हूँ। 9।
युग चारण हूँ.....

जहाँ जन्मते ही छाती पर बोझ कर्ज का भारी हो
खुद्दारी दर-बदर दीन, पर मस्त मगन मक्कारी हो,
जहाँ सुहाग दफ़न होता हो चाँदी के शमसानों में,
मर्यादा सिसकी भरती हो चकला बने मकानों में
उस दुनिया के लिये लपट को खुला निमंत्रण देता हूँ। 12।
युग चारण हूँ.....

जहाँ सत्य गुमनाम, नामवर झूठे चोर लफंगे हों,
धर्माधीश चलाते चोरी-चुपके काले धन्धे हों,
न्याय दलालों के हाथों सत्ता गुण्डों की बंधक हो,
जनता के पीछे खाई हो आगे गहरा बन्धक हो
उस दुनिया को स्वाहा करने का अभिमंत्रण देता हूँ। 13।
युग चारण हूँ.....

जहाँ कुर्सियों के खातिर माँ के आँचल का सौदा हो,
देश-प्रेम होंठों पर उर में लिप्सा भरा मसौदा हो,
बचपन जहाँ भटक रोता हो जाति-पथ के मेले में
उलझा-पुलझ मेघा बेसुध हो दौलतमन्द झमेले में,
ऐसी दुनिया को ज्वालाओं का अनुमंत्रण देता हूँ।४।

युग चारण हूँ.....

शिक्षा जहाँ नौकरी, शिक्षक नौकर जैसा होता हो,
अपना खून जहाँ अपने ही मग में काँटे बोता हो,
हत्यारों का जहाँ मंच-मालाएँ स्वागत करती हों
हर निरीह व्याकुल असमत रो-रो अपना घर भरती हो,
अग्नि वंश को उस दुनिया के लिये निमंत्रण देता हूँ।५।

युग चारण हूँ.....

व्यवसायी मशगूल जहाँ मारक जहरीले धन्धों में,
नैतिकता वाणी में निष्ठाएँ काले अनुबन्धों में,
गली-गली में मौत बेचने वाले हों निर्भीक जहाँ,
सत्ता की महफिल सजती हो अँधियारे में रोज जहाँ
अंगारों को उस दुनिया के लिये निमंत्रण देता हूँ।६।

युग चारण हूँ.....

जहाँ गुलामी के चिन्तन का रोम-रोम अभ्यासी हो,
धन-यश, सुविधा लोभ-लाभ में फँसा जहाँ संन्यासी हो,
महल-दुमहले जहाँ उठ रहे सेवा के अनुदानों पर,
हवश बढ़ी इस कदर कि कुछ की आँखें लगी मसानों पर,
उस दुनिया को भस्मसात् करने का मंत्रण देता हूँ।७।

युग चारण हूँ.....

जहाँ गरीबी की चर्चा -चिन्ता सत्ता की सीढ़ी हो,
अविश्वास के दलदल में फँस गयी समूची पीढ़ी हो,
बर्बरता को माफी देना शासन की मजबूरी हो,
और दरिन्दों के सीनों से बन्दूकों की दूरी हो,
उस दुनिया को क्षार-क्षार करने का मंत्रण देता हूँ।८।

युग चारण हूँ.....

लोकतन्त्र का चौथा खम्भा जहाँ भीख पर पलता हो
स्वाभिमान पूँजीपतियों के पैरों तले कुचलता हो
लालपरी आँखों में मन पर अबुझ वासना छाई हो
आदर्शों की चिता बुझाकर हँसती पीत कमाई हो
ऐसी गन्द गलीज़ फूँकने का आमंत्रण देता हूँ।६॥
युग चारण हूँ.....

जहाँ निराशा की बातें करते घर बैठ मनस्वी हों,
और युद्ध की आशंका से चिन्ता ग्रस्त जयस्वी हों,
जहाँ जवानों के सपनों में आती परी कथाएँ हों,
कर्मठता के रोम-रोम पर हावी रूढ़ प्रथाएँ हों,
उस दुनिया को होम-हुताशन का आमंत्रण देता हूँ।१०।
युग चारण हूँ.....

उठो कर्मवीरो! बलि पथ का प्रथम निमंत्रण देता हूँ।
बढ़ो धर्मवीरो! आहुतियों का आमंत्रण देता हूँ।।
युग-चारण हूँ क्रान्ति-कथा के लिये निमंत्रण देता हूँ।
और भोग की चिता जलाने का आमंत्रण देता हूँ।
युग चारण हूँ.....

श्री ओमशंकर त्रिपाठी

प्रधानाचार्य

अपनापा

पेड़े का मजा पट्टी में ...केवड़े का मजा पट्टी मेंआदि तुकबन्दियों द्वारा अपनी कविता जैसी पट्टी का प्रचार करता हुआ बसन्त, सायकिल के टायरों वाली चार पहियों की ठिलिया के एक भाग को हथेलियों से थामे, रोज की आदत से सधी-सधाई, मँजी मँजाई ठिलिया टेल चाल में बिना रुके चला जा रहा था।

चाल एक किसी खास साँचे में ढली हुई थी। पैर कुछ इस प्रकार सम्हल-सम्हल कर उठते और गिरते थे, मानो मनो का बोझ उसके पैरों से घसिटा चला जा रहा होबिल्कुल स्वाभाविक और अनाकुल। पुरानी बेबसी आदत में बदल चुकी थी। बहुतों को उसकी चाल अजायब घर के किसी अजनबी जन्तु की चाल की तरह तमाशा सी लग रही थी, लेकिन वह अपनी चाल के इन मौन समालोचकों की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दे पा रहा था। शायद इस प्रकार की दुनियादारी से उसका कोई सरोकार नहीं था।

परिस्थितियों के साँचे में नियति ने उसे कुछ इस प्रकार ढाल दिया था कि वह अभ्यासवश हमारी आँखों को आदमी ही मालूम पड़ता था, पर काष्ठ-यन्त्र सा उसका व्यावहारिक जीवन इस झूठी प्रतिष्ठा का विरोध कर रहा था। किसी की आँखें उसे किसी भी रूप में देख सकती थीं, पर उसमें इसके वर्तमान जीवन के यथार्थ रूप का क्या दोष था?

पैर के सस्ते किरमिची जूते ... हाँ जिन्हें समझने समझाने के लिए जूता ही कहा जायगा, बसन्त के सच्चे अर्थों में सहायक और सुख-दुख के साथी थे। घसिट-घसिट और लिथड़-लिथड़ कर भी उन्होंने मानव की बेबसी में हिस्सा बँटाना सीखा था। पैरों के गिरते और उठते समय जूतों का जंरा जर्जर शरीर, पैर के तलवों से इस प्रकार सटता और हटता था, मानों एक सौ आठ वर्ष पुराना बूढ़ा उस भारी बोझ को जिसे ढोने से सारे सभ्य समाज ने इन्कार कर दिया हो। गिर-गिर कर भी आगे ढकेलता हुआ, हार हारकर भी अपनी धीरता से पराजित, पद दलित होते हुये भी प्रगतिशील, बन्धनमुक्त होते हुये भी व्यस्तबन्धन, कंगाल मात्र में शेष होते हुए भी सप्राणपौरुष का प्रतिनिधित्व करता हुआ इस नवीन रक्त पर अट्टहास कर रहा हो। जान तो उसमें जान भर में न थी, किन्तु हमारी स्वार्थ बुद्धि उस समय उन्हें बेजान मानने को न जाने क्यों तैयार न थीं।

भारत में अंग्रेजों के चले जाने पर भी भारत में ही अंग्रेजियत की पैर फैलाव जैसी उनकी इस हठधर्मी पर कुछ तथाकथित सुधारवादी नयन खीझ भी जाते थे, किन्तु उनकी यह खीझ अपनी यथार्थ दर्शन की मौलिक दुर्बलतावश चट्टान पर गिरे अंगारे की भाँति स्वयं ही बुझ जाती थी। पैरों में पड़ा पैजामा तथा शरीर पर पड़ी हाफ कमीज, उसके शरीर में किसी अनाज के खेत में, जंगली जीवों के डराने के लिए खड़े कर दिए 'धोख' का धोखा पैदा कर रहे थे। सचमुच वह अपने समूचे शरीर में एक ऐसा जीव था, जिसे स्थूल दृष्टि से मानवता का भ्रम या मानव जीवन

का उपहास ही कहना उचित होगा।

उसकी कण्ठनली-जो रोज की जी तोड़ कसरत से फैल गई थी, ऐसी गम्भीर ध्वनि निकाल रही थी, जैसे कोई नपे तुले शब्दों का लाउडस्पीकर, जो बजाने वाले की इच्छानुसार बज उठता हो और मौन हो जाता हो। गले की गहरी और घनी आवाज इस बात की गवाही दे रही थी कि उसने अपनी इन्द्रियों की सारी शक्ति बटोरकर केवल स्वर साधना में इसलिए लगा दी थी जिससे उसकी आवाज आज के 'हाय पैसा और हाय शान' की घोर चिल्लाहट से बहरे हो गए उन महानुभावों के कानों में पड़ सके, जिन्हें जनता-जनार्दन ने दीनोद्धार का प्रतिनिधि बनाकर भेजा है।

रात के अँधेरे में, टिलिया के एक कोने में पथप्रदर्शक के रूप में टिमटिमाता लैम्प अपनी क्षीण रोशनी से अपने स्वामी की बुझी सी जिन्दगी की सूचना दे रहा था। लैम्प में रोशनी की अपेक्षा धुआँ ही अधिक था, और अकुलाहट कम। अकुलाहट की आग अभावों की राख में इस प्रकार दबी-दबी सुलग रही थी, जिसके अस्तित्व का अनुमान केवल धुएँ से ही लग सकता था।

इस घोर प्रचार और प्रदर्शन के युग में, योजना और आवाज़ की विपुलता के बीच वस्तु और वास्तविकता जो स्थान पाये हुये है, उसकी टिलिया में रक्खी हुई पट्टी भी इसका अपवाद न थी। चार कोनेदार पट्टी की एक थकिया उस टिलिया के सम्पूर्ण क्षेत्रफल में कुछ इस प्रकार सजाकर रक्खी गई थी, मानो किसी आधुनिक धार्मिक विरागी ने अपने इष्टदेवता की चित्रमूर्ति को आगे रखकर भारत की धर्मप्राण जनता को सोई हुई धर्म भावना जागृत करने का व्रत ले लिया हो।

ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता कि बसन्त को कितने लोगों ने पहचाना था, पर उसके ग्राहकों की इतनी ही उदारता कम न थी, जो वे उसकी पट्टी खरीदते थे।

इस कर्म-भूमि में माया और ममता की पीठिका पर पनपने वाला कर्तव्य-बोध, एक ऐसी जड़ी है जो जड़ को चेतन बना देती है। वह संजीवनी बूटी है, किन्तु इसकी पहचान करने वाले सुषेण सरीखे वैद्य और पवन पूत सरीखे धीर-वीर सेवक समाज में उतने ही कम है, जितनी कि इस जड़ी की मात्रा।

कानपुर महानगर की जनकोलाहल पूर्ण बड़ी-बड़ी सड़कों से लेकर छोटी-छोटी गलियों तक में अपनी पट्टी की बिक्री करके हारे थके उस बसन्त ने जब उस रात साढ़े नौ बजे मेरी गली के छोर पर अपनी ध्वनि में अलापना शुरू किया तो गली के तमाम छोटे बच्चे उसकी गम्भीर ध्वनि से उसी प्रकार जाग उठे, जैसे बैंक से चेक भुनाने, रूपया पाने गये हुये लोग टोकेन कलेक्टर कैशियर की पुकार पर तत्परता के साथ चौकन्ने खड़े हो जाया करते हैं।

नहीं कहा जा सकता कि उनमें से कितने बच्चों को वह पट्टी मिल पाई थी, पर इतना अवश्य था कि वे सब उसकी पट्टी को घूर घूर कर और उसकी आवाज़ को सुन सुनकर एक काल्पनिक तृप्ति का अनुभव अवश्य कर रहे थे।

इस प्रकार युग के अनेक सत्यों को खुद में समेटे हुये बसन्त जब कुछ और आगे बढ़ा तो फुटपाथ पर ही अपने परिवार के साथ ऊधम मचाते हुए वंशी के बच्चों ने पट्टी के लिये टुनटुनाना शुरू कर दिया। बसन्त की टिलिया और आवाज़ जैसे-जैसे अधिक समीप और स्पष्ट होती जाती

थी वैसे ही वैसे वंशी के बच्चों की जिद बढ़ती जाती थी। वंशी को आज, अचानक यह स्थिति बहुत खटकने लगी। आज की कमाई में घरेलू खर्चों के बाद केवल दो ही पैसे बच पाए थे, फिर भी उसे कम से कम अपने हाथ पैरों को काबू में बनाए रखने वाली तम्बाकू की जुगाड़ करनी ही थी। इस धर्म संकट की इस स्थिति ने वंशी को कुछ क्षणों के लिए किंकर्तव्यविमूढ़ बना दिया।

एक ओर उसे अपने हृदय की स्वाभाविक विवशता की आन भी रखनी पड़ती थी, और दूसरी ओर उसे युग की तथाकथित सभ्यता की चोट से अपना बचाव भी करना था। ये दोनों ही परस्पर विरोधी दशाएँ उसके लिए बड़ी गम्भीर समस्याएँ बन गई थीं।

मानव का यह स्वभाव होता है कि वह अपनी शक्तिभर अपने ऊपर संकट नहीं आने देता। इसी स्वाभाविकता वश वंशी ने तुरन्त दूसरे क्षण उस पट्टी वाले से हिकारत भरे स्वर में कहा—“का यार तुमहू रोज रोज ऐसे चिल्लाय-चिल्लाय लरिकन कै ट्यांव बिगारा करत हो?”

वंशी के इस वाक्-वाण से बसन्त तार-तार हो गया। हतप्रभ से बसन्त ने अपने चारो ओर व्याप्त इतना घना अँधेरा देखा, जिसमें उसे प्रकाश की एक रेखा मात्र के भी पाने की आशा नहीं थी। वह नहीं समझ पा रहा था कि इतना घना अँधेरा मुझे अपनी ही दृष्टि की खराबी से मालूम पड़ रहा है, अथवा सचमुच मेरे लिए अब सारा संसार केवल अँधेरा भर है और कुछ नहीं। उस समय उसे अपनी जिन्दगी को परमात्मा की घोरोहर मानकर टिकाए रखने के लिए चुने गए रास्ते पर उतनी ही घोर निराशा मिली, जितनी किसी ऐसे व्यक्ति को मिलती है, जिसने नदी में डूबते समय सहारा पाने के लिए रस्सी के धोखे सर्प पकड़ लिया हो।

दो क्षण बाद बसन्त ने अपने को सम्भाल, बुझते हुए दीपक की भांति कुछ विशेष प्रकाशित होकर, गला साफ करते हुए उत्तर दिया - भैया? भला मैं क्या करता हूँ, यह सब तो दिल की वह प्यास करवाती है जो अपनापा की आँच से पैदा हुआ करती है। हम बदनसीबों की बदनसीबी का यह बोझ, तुम्हारी इस फटकार से हल्का न हो सकेगा। दुनियाँ में हम लोगों की जिन्दगी का यही वरदान है। आज मेरी आवाज जो तुम्हारे हृदय को चीरती है - इतनी भारी होती ही क्यों, अगर चुप रहने से मेरी रोटियाँ मुझे मिल सकती फिर भी अगर तुम यह कहो कि मैं चिल्ला चिल्ला कर बच्चों की आदतें खराब किया करता हूँ, तो अब तुम्हीं बताओ कि मैं कहाँ जाऊँ, कहाँ रहूँ और क्या करूँ?

अल्पशिक्षित बसन्त का यह उत्तर अपने अन्तर्गत सत्य की तुलना में बहुत छोटा था, किन्तु उसके संक्षिप्त पर निश्छल शब्दों ने वंशी को सोते से जगा दिया। वंशी उस समय बसन्त को एक ऐसे दार्शनिक के रूप में देख रहा था, जो दर्शन में स्वप्न किन्तु अनुभव से प्रत्यक्ष सत्य था।

मनोविज्ञान की भाषा में हृदय पुरातन संस्कारों की कमी निकालने लगता है, शायद ऐसी ही कोई वासना बसन्त के हृदय में भी सोई थी, जो एक सर्वथा सत्य के रूप में आज अचानक फूट पड़ी थी। बुद्धि से कोई मन्द हो सकता है, पर यह आवश्यक नहीं कि उसका हृदय भी रीता हो। बसन्त भी ऐसा ही एक चेतन था।

वंशी की यह सबसे बड़ी हार थी। बसन्त को इस प्रकार लाजछित कर वह स्वयं अपने आत्मा

की लाञ्छना का शिकार बन गया। आत्मा ने उसे धिक्कारा। अचानक इस पश्चाताप की निर्मल जल धारा में जब वंशी का वह सम्पूर्ण मोह या भय जो कि आज की थोथी-प्रदर्शनवादी सभ्यता की नींव पर खड़ा था ध्वस्त हो गया। उसके अन्तर्मन में वास्तविकता का प्रकाश हो गया था। अब उसे सब कुछ स्पष्ट दीखने लगा था कि मैं क्या हूँ, बसन्त क्या है, और क्या है वह जिसका मैं देवी-देवता की भावना से अन्धानुकरण कर रहा हूँ।

अभी दो क्षण पूर्व जो समस्या उसके लिए अत्यन्त कठिन हो गई थी, वही अब उसके लिए सरल निदान हो गई एक क्षणिक मौन के बाद वंशी एक पराजित विवश की भाँति बसन्त के सिद्धान्त का समर्थन देता हुआ बोला—“भैया तुम साँचौ सब ठीक-ठीक कहत हो, हम अब तक भटकते रहे रहन, मुला तुम हमका रस्ता बताय दिन्हेव। आपनि उमिरि भर मा आजै हम यहु जाना कि असली मा प्याट कै आगो तो मनई का जनाउरौ बनाय देति है, मुला अपनपो के आँच आपन फर्ज अदा करे वाला कहै का चही सुद्ध करमयोगी महतमा मनई बनाय देति है।”

वंशी का यह उपसंहार कितना सरल सारगर्भित और मीठा है कि इसके लिए कोई साहित्य की बाजार लगे या न लगे लेकिन मैं आज भी अपने चारो ओर इधर-उधर भाग-दौड़ मचाने वाली मानव मूर्तियों को देखता हूँ तो मेरे मस्तिष्क में अपने आप यह स्पष्ट हो जाता है कि - विश्व के अनेक लोग तो केवल इसीलिए शुद्ध कर्तव्य वादी हैं, क्योंकि उन्हें अपने से अधिक अपनों की चिन्ता सताती है। संसार के अनेक कर्तव्य तो केवल ममता के सूत्र में पिरोए हुए जीवित हैं।

- डॉ० विश्वम्भरनाथ द्विवेदी

आचार्य

मर्यादाओं के अन्तर्गत होने वाली क्रिया का नाम ही संयम है। भूखा मरना संयम नहीं, अपितु शरीर की आवश्यकता के अनुसार गुण और मात्रा में भोजन करना संयम है। बिल्कुल न बोलना, यहाँ तक कि अत्याचारी के विरुद्ध आवाज भी न लगाना अथवा किसी को सत्परामर्श भी न देना संयम नहीं। वाचाल और गूँगे के बीच संयमी पुरुष आता है। आवश्यकता पड़ने पर बोलता है और अवश्य बोलता है। अपने व्यवहार का यह नियमन व्यक्ति द्वारा तब हो सकता है जब व्यक्ति को अपने आदर्श की लगन हो तथा अपनी जिम्मेदारी का बराबर भाव हो।”

- पं० दीनदयाल उपाध्याय

संस्कार एवं उपनयन

वसन्तागम का एक सुहावन-मनभावन-पावन प्रभात जब मन्दिर में वैदिकों की मधुर श्रुतिसुभग वेदध्वनि सम्पूर्ण वातावरण को गुञ्जायमान करती हुई पवित्रता की वर्षा कर रही थी, यज्ञाग्नि से निर्गत हव्यवाट् धूम दूर-दूर तक अन्तरिक्ष को सुरभित कर रहा था, ब्रह्मचारियों का स्वाहाकार उपस्थित समस्त जन-समुदाय को अनिर्वचनीय आनन्द प्रदान कर रहा था, सभी अर्धोन्मीलित नेत्रों से अलौकिक दिव्यता की अनुभूति कर रहे थे, ब्रह्मचारियों के मांसल कन्धे व्रत-बन्धन (यज्ञोपवीत) से सुशोभित हो रहे थे और यह अनूठा एवं अपूर्व अनुष्ठान ऋषि कुल की प्राचीन वैदिक परम्परा की स्पृहणीय स्मृति को साकार कर रहा था।

आज वसन्त पञ्चमी का महापर्व है। दीनदयाल विद्यालय के आराधना-मन्दिर में छात्रावास के अन्तेवासी छात्रों के उपनयन का पावन आयोजन है। इस अवसर पर ६६ ब्रह्मचारियों ने उपनयन की दीक्षा ली है। गतवर्ष से छात्रों को सुसंस्कारित करने की दिशा में यह भी एक लघु प्रयत्न है। इसी आयोजन के परिणाम स्वरूप उद्दीप्त भावना से भावित होकर “संस्कार और उपनयन” को शब्दों में बाँधने का मेरा यह अकिञ्चन प्रयास सभी सुधी पाठकों के समक्ष सादर प्रस्तुत है।

सनातन वैदिक धर्म में मानव को सुसंस्कृत, धर्मपरायण एवं समाज-समर्पित बनाने के लिये षोडश संस्कारों का विधान किया गया है गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह (गृहस्थाश्रम) वानप्रस्थ, सन्यास और अन्त्येष्टि। इन्हीं संस्कारों के बल पर वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, भरद्वाज, कश्यप, जमदग्नि एवं अत्रि जैसे ऋषियों - गार्गी, मैत्रेयी, अनसूया, अरुन्धती, अपाला जैसी ऋषिकाओं - मान्धाता, अश्वपति, जनक जैसे राजर्षियों - राम, कृष्ण, युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, अभिमन्यु जैसे नर-रत्नों और सती, सीता, सावित्री, पाञ्चाली, मन्दालसा जैसे नारी-रत्नों का निर्माण सम्भव हो सका। पवन-सुत हनुमान, भीष्म, दयानन्द तथा विवेकानन्द जैसे आदित्य ब्रह्मचारी इन्हीं संस्कारों की देन थे।

दुर्भाग्य से आज ये संस्कार लुप्तप्राय हैं या उनके नाम पर केवल लीक पीटी जा रही है। संस्कारों के लुप्त होने के कारण हमारी श्रेष्ठ जीवन पद्धति, आचार-विचार सभी कुछ भ्रष्ट हो गया है। समाज-जीवन और व्यक्तिगत जीवन दोनों में सर्वत्र नैतिकता का अभाव, कदाचार, अनाचार और वाम आचरण दृष्टिगोचर होता है। यह सब संस्कार-दोष के कारण ही है।

ऋषियों का दृढ़ विश्वास था कि इन संस्कारों के द्वारा व्यष्टि-व्यष्टि का निर्माण कर सुव्यवस्थित और श्रेष्ठ समष्टि जीवन खड़ा किया जा सकता है। इन संस्कारों के द्वारा हम श्रेष्ठ व्यक्ति निर्मित कर सकते हैं और श्रेष्ठ समाज खड़ा कर सकते हैं। भगवान मनु ने उच्च स्वर से उद्घोष किया-

वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम् ।

कार्यः शरीर संस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च ॥

वेदोक्त पुण्यरूप कर्मों द्वारा द्विजन्मा अपने सन्तानों का गर्भाधान आदि संस्कार करें, जो मनुष्य

को इस जन्म और परजन्म में पवित्र करने वाला है।

इस संस्कारों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती अपनी संस्कार विधि में लिखते हैं “जिसे करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकता है और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं। अतः संस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित है।”

“शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्”

शरीर ही धर्म का प्रथम साधन है। अतः सर्वप्रथम शरीर का ही संस्कार होना चाहिये - इसी तथ्य को दृष्टिगत करते हुए ऋषियों में सर्वप्रथम संस्कारों का प्रारम्भ गर्भाधान संस्कार से किया। वर्तमान भोगवादी संस्कृति में पल रहा समाज इस बात को कठिनाई से समझ पायेगा।

मन्दालसा ने निश्चय किया मैं योगी पुत्र पैदा करूँगी। उसने और उसके पति जो राजा थे उन्होंने योगी पुत्र प्राप्त करने के लिये प्रबल इच्छाशक्ति जाग्रत की। मन्दालसा गर्भधारण के पूर्व और बाद में केवल एक ही पाठ दोहराती थी “शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरञ्जनोऽसि” और इस प्रकार उसने सात योगी-पुत्र पैदा किये। उसके पति को जब राजा के उत्तराधिकारी की चिन्ता हुई तो मन्दालसा ने ऐसा पुत्र उत्पन्न किया जो राजा बना।

भगवान् श्रीकृष्ण महाराज और उनकी धर्म-पत्नी महारानी रुक्मिणी को जब पुत्र-कामना हुई तो उन दोनों ने १२ वर्ष तक घोर तप किया। परिणामतः उन्हें जो प्रद्युम्न पुत्र प्राप्त हुआ। वह रूप तेज, बल और पराक्रम में अपने पिता के समान ही था। पिता-पुत्र में अन्तर कर पाना कठिन था। ऐसा इसलिये सम्भव हुआ क्योंकि महारानी रुक्मिणी ने अपने पति के समान ही तेजस्वी पुत्र की कामना की थी और भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने समान पराक्रमी पुत्र की। अतः पुत्र उत्पन्न करना एक साधना है। संस्कारक्षम सन्तानों से ही राष्ट्र और समाज निर्मित होते हैं। राष्ट्र और समाज निर्माण का यही प्रथम सोपान है।

ऋषियों की यह भी मान्यता है कि यदि पिता अथवा माता में कोई दोष है - तो उसे इन संस्कारों से दूर किया जा सकता है। मनु ने कहा -

गाभैहोमैर्जातकर्म चौलमौञ्जीनिबन्धनैः।

बैजिकं गर्भिकं चैनो द्विजानामपमृज्यते।।

अर्थात् द्विजों के बालकों में पैतृक और मातृक यदि कोई दोष है तो उन दोषों को संस्कारों द्वारा दूर किया जा सकता है और बालक श्रेष्ठ उत्तम संस्कारों से सम्पन्न किया जा सकता है।

उपनयन और वेदारम्भ संस्कार का स्थान क्रम में दसवाँ और ग्यारहवाँ है। बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था का यह अन्तिम संस्कार है। दोनों को मिलाकर हम यज्ञोपवीत संस्कार भी कहते हैं। संस्कार का नाम उपनयन इसलिये है कि उपनीयते अनेन्दन तत् उपनयनम् अर्थात् जिस संस्कार

के द्वारा बालक को गुरु के समीप ले जाया जाता है वही उपनयन है। गुरु के समीप ले जाने का अभिप्राय क्या है? आज भी यही होता है - विद्यालय और कालेजों में बालक पहुँचता है - प्रवेश के लिये आवेदन करता है - कुछ औपचारिकताओं के बाद उसका प्रवेश हो जाता है - उपनयन का दायरा इससे बड़ा है। अभी तक बालक के शरीर और आत्मा को दूसरे जन्म के लिये पिछले नौ संस्कारों द्वारा तैयार किया जा रहा था। यह बालक का दूसरा जन्म क्या है? बालक का पहला जन्म शरीर का जन्म है - जो माता पिता द्वारा प्राप्त होता है। उसका दूसरा जन्म गुरु के ज्ञान-गर्भ से होता है। गुरु के समीप जब बालक पहुँचता है - तो वह उसे माता की भाँति अपने ज्ञानरूपी गर्भ में धारण करता है और उस शिष्यरूप गर्भ की रक्षा उसी प्रकार करता है - जैसे एक माता अपने गर्भ की। बालक बालकों के गुरुकुल या विद्यालयों और कन्यायें कन्याओं के गुरुकुलों में अपने-अपने आचार्य - आचार्याओं के संरक्षण में पहुँच जाती हैं। गुरु अथवा आचार्य के समीप सम्पूर्ण विद्या का अध्ययन कर लेने पर उसका दूसरा जन्म होता है जिसे ब्रह्मजन्म की संज्ञा दी गई। जगत्प्रसिद्ध अपनी मनुस्मृति में भगवान मनु ने शरीर के जन्म की अपेक्षा विद्यारूप दूसरे जन्म को जिसे ब्रह्मजन्म कहा गया है श्रेष्ठ बतलाया है -

उत्पादकब्रह्मदात्रोर्गरीयान् ब्रह्मदः पिता।
ब्रह्मजन्म हि विप्रस्य प्रेत्य चेह च शाश्वतम्॥

अर्थात् शरीर का जन्म देने वाले पिता तथा विद्या या वेद ज्ञान देने वाले आचार्यरूप पिता में से विद्यादान या वेद-ज्ञान देने वाला आचार्य रूप पिता ही अधिक बड़ा और माननीय है क्योंकि द्विज का ब्रह्मजन्म ही इस जन्म और परजन्म में स्थिर रहने वाला है। शरीर तो इस जन्म के बाद ही नष्ट हो जाता है किन्तु ब्रह्मजन्म से प्राप्त विद्या, ब्रह्मचर्य और योग के संस्कार धर्म, अर्थ, काम से लेकर मोक्ष प्राप्ति तक साथ देते हैं।

इस ब्रह्मजन्म को प्राप्त कर लेने पर उस बालक की "द्विज" संज्ञा हो जाती है। 'द्विज' शब्द का अर्थ है - द्विजायते सः द्विजः - द्विजत्व प्राप्ति के पूर्व सभी बालक वे चाहे जिस कुल, वंश, परिवार में जन्म लिये हों, शूद्र ही कहलाते हैं - कहा भी गया है -जन्मनः जायते शूद्रः संस्काराद् द्विजोच्यते।

जन्म से सभी बालक-बालिकायें शूद्र ही होते हैं - उपनयन और वेदारम्भ संस्कार के बाद वे द्विज कहलाते हैं। शूद्र शब्द शोकार्थक शुच् धातु से बना है - जिसका अर्थ है - शूद्र वह व्यक्ति है, जो अज्ञान के कारण किसी प्रकार की उन्नति को प्राप्त नहीं हो सकता और जिसे अपनी निम्न स्थिति से उन्नत स्थिति में पहुँचने की चिन्ता सदा सताया करती है। वैदिक वाङ्मय में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य को द्विज कहा क्योंकि जिन्होंने उपनयन द्वारा व्रतपूर्वक अपने-अपने वर्ण की दीक्षा ली है और वेद्यारूप द्वितीय जन्म को प्राप्त हो गये हैं - वे ही ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य रूप द्विज कहलाते हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये शब्द न तो जातिपरक हैं और न जन्मपरक। ये चारो वर्णों के

बोधक शब्द गुण, कर्म और स्वभाववाची हैं। कोई व्यक्ति शूद्र तभी तक रहता है, जबतक उसे विद्यारूप 'ब्रह्मजन्म' प्राप्त न हो जाये। कोई भी किसी वर्ण का पुरुष अपने व्रत, तप, दीक्षा और पुरुषार्थ के बल पर कोई अन्य वर्ण प्राप्त कर सकता है, कहीं कोई पाबन्दी नहीं है - मनु ने लिखा है-

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चेति शूद्रताम्।

क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्यात् वैश्यात्तथैव च॥

शूद्र अपने कर्मों से ब्राह्मण बन सकता है। पतित होने पर ब्राह्मण शूद्र हो सकता है। यही व्यवस्था क्षत्रिय और वैश्य-कुलों में उत्पन्न होने वालों पर भी लागू होती है।

तो अब तक की मीमांसा से यह स्पष्ट हो गया कि उपनयन-संस्कार की पहली विशेषता है - द्विजत्व या ब्रह्मजन्म की प्राप्ति और इसमें जन्मगत या जातिगत कोई भेदभाव नहीं है। उपनयन द्वारा विद्या-प्राप्ति की दूसरी विशेषता है व्रत पूर्वक विद्यार्जन करना। विद्यार्जन की पहली शर्त है - व्रत में दीक्षित होना। सर्वप्रथम बालक ब्रह्मचर्यव्रत में दीक्षित होता है। ब्रह्म माने ईश्वर और वेद या सम्पूर्ण विद्या। ब्रह्मचर्य का व्रत लेने का तात्पर्य हुआ कि वह ईश्वरोपासना और विद्याध्ययन का व्रत लेता है कि वह तप और साधना द्वारा दोनों कार्यों को पूरा करेगा। उपनयन में आचार्य पूछता है - कस्य ब्रह्मचारी असि? ब्रह्मचारी उत्तर देता है - भवतः। बालक मानो कहता है कि आपके ज्ञान-गर्भ में रहकर मैं व्रतपूर्वक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए विद्याध्ययन करने का संकल्प लेता हूँ।

“अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि”

कहकर ब्रह्मचारी अग्नि में पाँच बार आहुति देता है और व्रत पूरा करने की प्रतिज्ञा करता है।

वर्तमान शिक्षा में इसी व्रत का अभाव है - सभी नौकरी के लिये पढ़ते हैं - सभी कैरियर के लिये पढ़ते हैं। जैसे भी परीक्षा का प्रमाण-पत्र मिल सके, प्राप्त करना चाहिये - यही एक मात्र उद्देश्य रहता है किन्तु उपनयन द्वारा शिक्षा में ब्रह्मचारी का व्रत होता है कि ब्राह्मण बनूँ तो राष्ट्र या समाज का ऐसा घटक कि समाज में कहीं अज्ञान न रहने दूँ। जैसा व्रत अगस्त्य ने लिया - सात समुद्र पार कर दिक्-दिगन्त में वैदिक धर्म का झण्डा फहरा दिया - जैसा व्रत स्वामी दयानन्द ने लिया सम्पूर्ण देश में अज्ञान-अन्धकार, ढोंग-ढकोसला की पोल खोलकर, धर्म के नाम पर आडम्बर और पाखण्ड पर प्रबल प्रहार कर वैदिक- धर्म का सर्वत्र डंका बजा दिया - यही उनके गुरु विरजानन्द की आज्ञा थी। क्षत्रिय का व्रत अगर उपवीती ब्रह्मचारी ने लिया तो समाज में कहीं अन्याय नहीं रहने देगा - जैसा व्रत राम ने लिया। वाल्मीकि रामायण के अन्तर्गत जब ऋषियों ने रावण और उसके सैनिक राक्षसों को मारे गये ऋषि-मुनियों की हड्डियों के ढेर राम को दिखलाये तो राम सीता-वियोग की व्यथ मूल गये और उनका क्षत्रियत्व पुकारने लगा -

भवतामर्थसिद्ध्यर्थमागतोऽहं यदृच्छया।

तस्य मेऽयं वने वासो भविष्यति महाफलः॥

तपस्विनां रणे शत्रून् हन्तुमिच्छामि राक्षसान् ।
पश्यन्तु वीर्यमृषयः सभ्रातुर्मे तपोधनाः ॥

मैं आप लोगों के प्रयोजन की सिद्धि के लिये अकस्मात् यहाँ आ गया हूँ - सो अब यह मेरा वनवास महान् फल देने वाला होगा। अब मेरी यह आकांक्षा है कि वनवासी तपस्वियों के शत्रु राक्षसों का मैं समूल संहार कर दूँ। ऐ तपस्वी महात्माओ! अब आप लोग मेरे अनुज लक्ष्मण सहित मेरे पराक्रम को देखो और फिर राम के क्षत्रियत्व ने जो कर दिखाया, वह सबको पता है।

वैश्यवृत्ति धारण करने वाले भामाशाह को कौन नहीं जानता जिन्होंने देश और समाज की स्वतन्त्रता की रक्षा हेतु महाराणा प्रताप के चरणों में अपना सम्पूर्ण धन अर्पित कर दिया। व्रतपूर्वक शिक्षा से ऐसे श्रेष्ठ राष्ट्रघटक तैयार किये जा सकते हैं।

उपनयन-संस्कार की तीसरी विशेषता है - गुरु और शिष्य का प्रगाढ़ सम्बन्ध। उपनयन के समय गुरु-शिष्य एक दूसरे के वक्षस्थल का स्पर्श करते हुए कहते हैं -

“मम व्रते ते हृदयं दधामि, मम चित्तमनुचितं ते अस्तु।”

मम वाचं एकमना जुषस्व, वृहस्पतिस्त्वां नियुनक्तुमहम् ॥”

गुरु-शिष्य एक दूसरे से कहते हुए संकल्प लेते हैं कि हम दोनों का व्रत एक है। हम दोनों के चित्त एक हैं। हम दोनों की वाणी एक रहे क्योंकि सर्वज्ञान के भण्डार उस परमात्मा ने हम-दोनों को गुरु शिष्य रूप में नियुक्त किया है। गुरु अपना समस्त अर्जित ज्ञान शिष्य को दे देने के लिये कृत संकल्प है और शिष्य उस ज्ञान-प्राप्ति के लिये सर्वस्व समर्पण के लिये तैयार है। समस्त शिष्य के इस आदर्श समर्पण ने ही अनन्त काल तक इस आर्यावर्त में एक व्रती समाज खड़ा किया।

गुरु-शिष्य का यही आदर्श सम्बन्ध अब गूलर का फूल हो गया है - इसी का परिणाम है शिक्षा की दुर्गति। न शिष्य में व्रत है और न गुरु में सत्संकल्प की अग्नि। गुरु-शिष्य से कोचिंग, ट्यूशन के माध्यम से धन हरने की फिराक में है और शिष्य ऐसे गुरु को मात्र शिक्षा-व्यवसायी मानकर उसे नौकर समझता है। यदि शिक्षा में सुधार करना है तो सर्व प्रथम गुरु-शिष्य के आदर्श सम्बन्ध की पुनर्स्थापना करनी होगी। इसके बिना शिक्षालयों और विश्वविद्यालयों का न तो कोई उपयोग है और न ही इनका कोई कल्याण हो सकता है। राष्ट्र निर्माण के लिये व्रत प्रधान शिक्षा युग की माँग है।

उपनयन में आचार्य ब्रह्मचारी को यज्ञोपवीत धारण करवाता है। यज्ञ का अर्थ हवन के अतिरिक्त पवित्र और श्रेष्ठ कर्म भी है - उपवीत का अर्थ है- चिह्न। यज्ञोपवीत धारण करते ही मानो हमने प्रतिज्ञा कर ली कि हम सदा श्रेष्ठकर्म ही रहेंगे। हम कभी भूल से भी दोष दुर्गुण और दुर्व्यसन में नहीं फँसेंगे। यज्ञोपवीत आर्यत्व का चिह्न है। आर्यत्व माने श्रेष्ठ जीवन, यज्ञोपवीत श्रेष्ठ जीवन का प्रतीक है। प्राचीनकाल में किसी प्रकार का दुराचार करने वालों से यज्ञोपवीत राजव्यवस्था द्वारा छीन लिये जाते थे और द्विजत्व से हटाकर उन्हें शूद्रकोटि में रख दिया जाता था। यज्ञोपवीत द्विजत्व

का प्रतीक है - जिसकी व्याख्या पर्याप्त हो चुकी है। यज्ञोपवीत व्रत-बन्धन है। यदि विधिपूर्वक यज्ञोपवीत निर्माण किया जाये तो जिसके लिये यज्ञोपवीत बनाया जाता है-उसके ६६ चौवा धागे का यज्ञोपवीत बनाया जाता है - प्रत्येक मनुष्य का शरीर अपने ६६ चौवा का होता है - अतः ६६ चौवा वाले धागे का यज्ञोपवीत पहनने का तात्पर्य हुआ कि अपने सम्पूर्ण शरीर को व्रत के बन्धन में बाँधना। हमने जो भी व्रत लिया है- यज्ञोपवीत, अहर्निश हमें उसकी याद दिलाता है।

यज्ञोपवीत के तीन तार या लड़ें हमें तीन ऋणों से मुक्त होने की सतत प्रेरणा देती हैं- देवऋण, ऋषिऋण और पितृऋण।

अतः यज्ञोपवीत धारण करना हमारा परम कर्तव्य है। हमने आज अन्य संस्कारों की भाँति उपनयन की उपेक्षा की है। विवाह के पूर्व तिलक में उसकी लीक पीट लेते हैं। इस उपेक्षा का परिणाम है समाज की कर्तव्यहीन मनोवृत्ति। यह स्थिति भयावह है। कैसे बचेगी - हमारी संस्कृति?

उपनयन और वेदारम्भ की विशेषता है - सावित्री दान या गायत्री दान। गायत्री मन्त्र का देवता या प्रतिपाद्यविषय "सविता" अर्थात् जगत्पिता परमात्मा है। सविता का स्त्रीलिंग सावित्री है। उपनिषदों ने सविता की शक्ति को ही सावित्री कहा है। गायत्री का जप हमें सावित्री शक्ति से अर्थात् ईश्वरीय तेज से भरपूर कर देता है। परमात्मा के "वरेण्यं भर्गः" को धारण करते ही हम कलुष रहित हो जाते हैं। पाप की वृत्ति सदा के लिये दूर जा पड़ती है। इसीलिये सावित्री मन्त्र साधना में रत ब्रह्मचारी के लिये बड़ा सम्बल है।

वैसे तो २४ अक्षर का गायत्री छन्द होता है। गायत्री छन्द में लिखा होने के कारण ही सावित्री मन्त्र को गायत्री मन्त्र भी कहते हैं तथापि विचारकों ने गायत्री की व्युत्पत्ति करते हुये कहा है - "गायन्तं त्रायते सा गायत्री।"

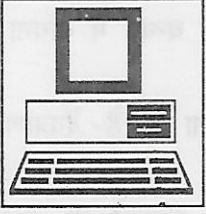
अर्थात् गायत्री वह है - जो इसका गायन करने वाले की रक्षा करती है। गायत्री-जप से मनुष्य दैहिक, दैविक और भौतिक तापों से तर जाता है। गायत्री मनुष्यत्व से देवत्व प्राप्त करने की नसेनी है।

इन्हीं भावों से भाषित हो कर आचार्य ब्रह्मचारी को गायत्रीदान करता है। विषय का उपसंहार करते हुए प्रभु से प्रार्थना है कि वह हमें सत्प्रेरणा दें जिससे हम अपने भूले हुए संस्कारों को फिर से प्रतिष्ठित करें, जिससे फिर से एक नये समाज का सृजन कर सकें। आस्तिकों को कभी निराशा नहीं होती क्योंकि बीज का कभी अभाव नहीं होता। किसी न किसी रूप में वह सर्वदा विद्यमान रहता है। वैदिक संस्कृति ईश्वरीय संस्कृति है - अतः वह अजर-अमर है। भटकाव समाप्त होगा। हम सुधरेंगे - जग सुधरेगा। हमारा प्राचीन गौरव-गुमान एक दिन वापस आयेगा। उठो - जागो - "उत्तिष्ठत जागृत प्राप्य वरान्निबोधत"

श्री लक्ष्मी शंकर द्विवेदी

छात्रावास अधीक्षक

संचार - क्षेत्र में धमाका - इण्टरनेट



परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। कुछ शताब्दियों पहले विज्ञान शिशु रूप में था परन्तु आज वयस्कता के पायदानों पर पग रखते हुए अपनी मंजिल को छूने के लिए अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ उन्मुख हो गया है। प्रकृति की गोद में पला बढ़ा मानव आज नये-नये आविष्कार करके प्रकृति से ही खिलवाड़ करने लगा है। मानव ने विज्ञान के बहुत बड़े-बड़े कारनामों दिखाये। इसी शृंखला की एक प्रमुख कड़ी है - संचार। संचार सूचना का एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा कोई मनुष्य दुनिया के किसी कोने में रहने वाले मनुष्य से सम्पर्क बनाये रहता है। आज संचार के साधन संख्या में बहुत अधिक तथा विकसित भी हो गये हैं। कम्प्यूटर मनुष्य की ही देन है जो प्लास्टिक व तारों का बना इलेक्ट्रॉनिक संयंत्र है। कम्प्यूटर तथा संचार के ही मिश्रण से एक नये अध्याय की उत्पत्ति होती है, जिसे इण्टरनेट नाम दिया गया है।

वास्तव में इण्टरनेट है क्या? हमारा पूरा समाज आज एकजुट हो इसकी ओर क्यों इतनी तेजी से भाग रहा है? क्या यह हमसे व्यापार करवायेगा? क्या यह शिक्षा में भी हमारी मदद करेगा? सारे सवाल जिज्ञासा से परिपूर्ण हैं।

इण्टरनेट विश्व के अनेक जुड़े हुए कम्प्यूटरों का जाल है। विश्व के कम्प्यूटरों का इसके द्वारा जुड़ाव होने के कारण मानव अपने विचारों को दूसरे तक पहुँचाने में सफल होता है। इण्टरनेट के लिए एक कनेक्शन लेना पड़ता है। यदि हम उस कनेक्शन को ले लेते हैं तो हम भी विश्व के कम्प्यूटरों के जाल में शामिल हो जाते हैं।

अभी कुछ समय पहले यह कनेक्शन तीन स्तरों पर उपलब्ध होता था। पहला स्तर १०० घण्टों के लिए ३००० रुपये पर, दूसरा स्तर २५० घण्टों के लिए ६५०० रुपये पर तथा तीसरा स्तर ५०० घण्टों के लिए १०,००० रुपये पर उपलब्ध होता था। वी०एस०एन०एल० द्वारा आवंटित इण्टरनेट फार्म भरकर उसके साथ इन तीनों स्तरों में से एक का शुल्क जमा करके किसी भी टेलीफोन एक्सचेंज से कनेक्शन प्राप्त हो जाता है। आज आई०एस०पी० की अनेक संस्थाओं द्वारा इण्टरनेट फार्म भरकर बड़ी आसानी से इण्टरनेट का सदस्य बना जा सकता है।

इण्टरनेट ने मनुष्य की अनेक परेशानियों को बड़ी आसानी से हल कर दिया है। घर-घर में इण्टरनेट लगवाने की होड़ मची हुई है। इण्टरनेट के द्वारा किसी भी प्रकार का पत्र, जो दुनिया के किसी भी कोने से भेजा हुआ हो कुछ ही सेकण्डों में टेलीफोन के लोकल चार्ज पर पढ़ा जा सकता है तथा कहीं पर भी भेजा जा सकता है। घर बैठकर परिवहन (रेल, हवाई जहाज) सेवाओं की बुकिंग इण्टरनेट द्वारा सम्भव है। इसकी सहायता से हम अपने सामानों को दुनिया के किसी

भी बाजार में बड़ी आसानी से बेच सकते हैं तथा दूसरे बाजारों के सामानों को खरीद भी सकते हैं। आज अनेक व्यापारियों का व्यापार इण्टरनेट पर ही निर्भर हो गया है। इण्टरनेट द्वारा बिना शिक्षक के ही स्कूल की पढ़ाई घर बैठकर बड़े अच्छे ढंग से की जा सकती है। वोट डालने तथा बैंकों में खाते के आदान-प्रदान के लिए भी आज इसका उपयोग ज़ोरों पर है।

इस प्रकार इण्टरनेट आज के वैज्ञानिक युग में वरदान सिद्ध हो गया है परन्तु गलत क्षेत्रों में भी इसका उपयोग कम नहीं हो रहा है। आज बाजार में बुरी-बुरी वेबसाइटें बहुत ज़ोरों से विक रही हैं। जिससे पूरा समाज प्रदूषित हो रहा है। इन बुराइयों से बचकर इसका उपयोग देश की भलाई में करना होगा।

इण्टरनेट के आविष्कार ने कम्प्यूटर विज्ञान के सारे समीकरण ही बदल डाले हैं। आज के परिदृश्य में कई कवियों की लेखनी ने विज्ञान की प्रगति को उपेक्षित भाव से स्वीकारा है, पर वास्तव में ऐसा नहीं है।

विज्ञान सदा वरदान रहा है,
पर नर का कुटिल प्रयोग वही।
ज्ञान को अभिशाप और बोझल कर देता,
देव बनाता ज्ञान वही॥

अतः हमको इण्टरनेट के सकारात्मक पक्ष को घर-घर में पहुँचाकर इण्टरनेट से होने वाली बहुआयामी प्रगति को प्रतिष्ठित करना होगा।

- आशीष प्रताप सिंह
एकादश 'ख'

व्यक्ति का सर्वांगीण विकास

व्यक्ति शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समुच्चय है। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में चारों का ध्यान रखना होगा। चारों की भ्रूख मिटाये बिना व्यक्ति न तो सुख का अनुभव और न अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार की उन्नति आवश्यक है। आजीविका के साधन, शान्ति, ज्ञान, एवं तादात्म्य भाव से ये भ्रूखें मिटती हैं। सर्वांगीण विकास की कामना ही व्यक्ति को समाजहित में कार्य की प्रेरणा देती है।

बहुत ही चुका संघर्ष - विराम!

तृतीय महासमर को रोकने के लिए भारतीय शान्तिदूत ने संघर्ष विराम के माध्यम से अपनी चेतावनी प्रस्तुत की है। रमजान माह का सम्मान करके भारत ने संघर्ष विराम से जो पहल की उसके दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। इस उपयुक्त अवसर का लाभ पाक समर्थित आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तोयबा, हरकतउलमुजाहिदीन, जैश-ए-मुहम्मद ने निरपराध व्यक्तियों की हत्या तथा सुरक्षा बलों पर हमले करके उठाया।

हमने चीन को भाई माना लेकिन उसने भ्रातृत्व पर गोली चलाई, भारत ने पाकिस्तान को पुत्र माना लेकिन उसने माँ के वक्षस्थल में ही छुरा भोंक दिया। लाल किले के बाद फारुख पर कातिलाना हमला और फिर श्रीनगर हवाई अड्डे को निशाने पर रखना अगर आतंकवादियों का ज़ेहाद है तो यह हमारे संघर्ष विराम की कड़ी परीक्षा भी है।

मुझे तो ऐसा लगता है कि सम्पूर्ण जग ने हमारे शान्तिमन्त्रों का उपहास किया है और भीख मिले हथियार हमारे शौर्य को तौलने का प्रयास कर रहे हैं। कश्मीर की वास्तविकता पर विचार करें तो “हिन्दू होना पाप हो गया अपने हिन्दुस्तान में” इन छद्म धर्म निरपेक्षतावादियों के कारण।

सच तो यह है कि पाकिस्तान आतंकवाद का एक प्रमुख गढ़ बन गया है। विश्व के अनेक देशों में जो इस्लामी आतंकवादी सक्रिय हैं उनमें से अधिकांश का प्रशिक्षण स्थल पाकिस्तान ही है। आतंकवाद को खुला समर्थन देने के कारण पाकिस्तान की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जैसी किरकिरी हुई है उसके बाद भी वे अपने ज़ेहादी नारे लगा रहे हैं। इसका तो यही अर्थ है कि विनाश की राह पर चलना उसकी नियति बन गयी है।

इन आतताइयों ने हमारी संस्कृति के मानदण्ड मन्दिरों को तोड़ा, खुशहाल घरों को श्मशान बनाया और कश्मीरी पण्डितों से कहा “युवा लड़कियाँ हमें सौंपकर हिन्दुस्तान चले जाओ।”

धरती के स्वर्ग में राष्ट्र की तरुणाई सिसकियाँ भर रही है और नारी अपमान का घूँट पीकर सहमी पड़ी है। ऐसी स्थितियों में शान्ति समझौते का राग अलापना राष्ट्र के पौरुष पर एक प्रश्न चिह्न लगा देता है।

भारत ने प्रारम्भ से ही ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ और ‘सर्वे भवन्तु सुखिनः’ के मन्त्रों से शान्ति की उपासना की है। हमारी शान्ति को जिन्होंने भंग करने का प्रयत्न किया उनके लिए कृष्ण ने सुदर्शन और अर्जुन ने गाण्डीव उठाया है। हम शस्त्र और शास्त्र के पुजारी हैं। शास्त्र के माध्यम से हमने दुनिया को सभ्यता सिखाई तो शस्त्र के माध्यम से अपनी रक्षा करना भी सीखा है।

भारतमाता का मातृत्व ही है कि वह पाक को बार-बार छोड़ देती है अन्यथा उसे सन् ४७ में ही दुनिया के मानचित्र में अपना नक्शा खोजना पड़ता। अगर हमने शान्ति का चोला पहनकर भारत माँ के मुकुट का समझौता कर लिया तो भविष्य में माँ के हृदय का भी समझौता करना पड़ेगा

और यदि यही चलता रहा तो हमें ऐसे समय का भी सामना करना पड़ेगा जब हम इस्लाम और ईसाइयों की कठपुतली बनकर घूमेंगे और इसका समाधान.....?

अतः मेरा आवाहन है कि आओ अविराम संघर्ष करें। हम विजयी होंगे यह मेरा विश्वास है। क्योंकि हमारे पास धैर्य का अश्व, विवेक की वल्गा और पुरुषार्थ का कवच है। हम सब सैनिक राणा के समान स्वाभिमानी, हकीकत राय के समान देशभक्त व दधीचि के समान त्यागी हैं।

किसी कवि की प्रंक्तियों में :-

“शहीदी खून से रञ्जित सुभग कश्मीर मेरा है।

धरा का स्वर्ग भारत-शीश और जमीर मेरा है।”

- संजय सिंह

उपाध्यक्ष तरुण भारती

भूल का एहसास

मैं विद्यालय की सातवीं कक्षा का छात्र हूँ और छठवीं कक्षा से ही छात्रावास में रह रहा हूँ। घटना अर्द्धवार्षिक परीक्षा के समय की है। मुझे खेलने में बहुत मजा आता है।

माननीय प्रधानाचार्य जी ने एक बार सूचना दी थी कि परीक्षायें चल रही हैं अतः इस अवधि में कोई भी विद्यार्थी खेलकर समय नष्ट न करे और पूरा समय अध्ययन में लगाए। दो दिन तक उनके आदेश पालन करने के बाद मुझसे न रहा गया और मैं खेलने के लिये व्याकुल हो उठा। मैंने अपने साथियों के साथ योजना बनायी और भोजन के बाद चुपचाप माधव स्मृति के पीछे जाकर खेलने लगा। हमारा खेल जब परवान चढ़ा था तभी माननीय प्रधानाचार्य जी को भनक लग गयी और उन्होंने दो छात्रों को हम लोगों को बुलाने के लिये भेजा। जैसे ही वे दोनों छात्र हम लोगों को बुलाने आये तो मैं सब की नजर बचाकर भाग गया। बाद में सभी छात्र प्रधानाचार्य जी के सामने पेश हुए। लड़कों से पूछताछ करने पर पता चला कि मैं भाग गया हूँ। फिर माननीय प्रधानाचार्य जी ने एक छात्र को भेज कर मुझे बुलवाया और मुझे डाँटने के बाद मुझे कई अच्छी बातें बतायीं। जब मैं उनके सामने आया तो आत्मग्लानि से भर गया और मुझे अपनी भूल का एहसास हुआ गया। इस घटना से हमको शिक्षा मिलती है कि कभी कोई गलत काम नहीं करना चाहिये और यदि कर दिया तो उसे छिपाना नहीं चाहिये।

- शिवनाथ सिंह

सप्तम 'ख'

चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में भौतिक विज्ञान का महत्व

प्रगति पथ पर अग्रसर मानव-जीवन आधुनिक विज्ञान की विभिन्न शाखाओं-प्रशाखाओं का सक्रिय सहयोग ले रहा है। यद्यपि विज्ञान अपनी सम्पूर्णता में बहुत कुछ समेटे हुए है किन्तु जब उसको विश्लेषित कर जीवन के लिए और अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास किया जाता है तभी भौतिक, जीव एवं रसायन विज्ञान आदि प्रस्तुत होते हैं।

आज चिकित्सा विज्ञान सम्पूर्ण दुनिया में व्याप्त है। इसका उपयोग खेतों में काम करने वाले मजदूर-किसान से लेकर प्रयोगशालाओं में शोध करने वाला वैज्ञानिक तक करते हैं और इस चिकित्सा विज्ञान को सर्वोपयोगी बनाया सूचना प्रौद्योगिकी ने, जिसके मूल में निहित है-भौतिक विज्ञान।

जिस प्रकार मस्तिष्क के बिना प्रखर व्यक्तित्व अधूरा है उसी प्रकार भौतिक विज्ञान के बिना जीव विज्ञान भी अधूरा है। आज छोटे से लेकर बड़े कार्य में भौतिक विज्ञान प्राणतत्व की तरह समाया हुआ है।

चिकित्सकीय थर्मामीटर, इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ और सूक्ष्मदर्शी का प्रयोग जीव विज्ञान एवं चिकित्साविज्ञान में विभिन्न परीक्षणों के लिए किया जाता है जिसके आधार पर समझा जा सकता है कि सैद्धान्तिक जीवविज्ञान में ही भौतिक विज्ञान निहित है।

किरणों और चुम्बकीय शक्ति सम्पूर्ण सृष्टि का आधार है और इनके बिना पृथ्वी का जनजीवन असम्भव है। इसलिए कौन सी किरण और कौन सी चुम्बकीय शक्ति हमें हानि पहुँचा सकती है, इसकी जानकारी भौतिक विज्ञान के यन्त्रों से प्राप्त होती है। कैंसर के उपचार हेतु कोबाल्ट चिकित्सा में क्रियाहीन कोशिकाओं का परीक्षण व नष्ट करने के लिए इन्हीं रेडियोऐक्टिव किरणों का प्रयोग किया जाता है।

जीवविज्ञान की आधुनिक शाखा जैवप्रौद्योगिकी जिसके अन्तर्गत ऊतक संवर्धन, जीन बैंक और जीन लाइब्रेरी में विभिन्न प्रकार के भौतिक संसाधन जैसे-सेन्ट्रीफ्यूज, माइक्रोस्कोपी, कैमरा लूसिडा और क्रोमेटोग्राफी का प्रयोग होता है। न्यूरोसिस्टिक सरकोसिस और इण्डोस्कोपी का परीक्षण कैमरा लूसिडा से ही सम्भव है। कृषि के क्षेत्र में जैवप्रौद्योगिकी को जादू की पुड़िया बनाया भौतिक विज्ञान के आधुनिक यन्त्रों ने, जिसका महत्व भारतीय कृषि उत्पादन व्यक्त करता है।

चिकित्सा विज्ञान में एक महाक्रान्ति का सूत्रपात करने वाली जीन थेरेपी के सम्बन्ध में ह्यूमेन जीनोम साइन्स मेरीलैण्ड अमेरिका के अध्यक्ष प्रो० विलियम ने स्पष्ट किया है कि जीनथेरेपी द्वारा रोग होने से पूर्व ही रोग का पता लगाया जा सकता है। वैज्ञानिक स्मिथ तथा वेण्टर ने पराश्रव्य ध्वनि तरंगों के माध्यम से इस जीन थेरेपी को गति देने का कार्य किया है।

प्रख्यात लेखक और विचारक मैट रिडले ने अपनी पुस्तक 'जीनोम' में बताया कि जीन हमारे जीवन की कुञ्जी है। शरीर की क्रियाशीलता सूक्ष्म जीन निर्धारित करते हैं। मनुष्य की बौद्धिक प्रखरता, शारीरिक विकास, अतीत और भविष्य की जातियों की जानकारी या व्यक्ति की आनुवांशिक

संरचना उस पारम्परिक जन्म कुण्डली के समान है जिसमें शिशु के जन्म से लेकर मृत्यु तक की घटनाएँ अंकित रहती हैं। जीन वैज्ञानिकों का मानना है कि यदि एक बार मानव जाति के समस्त जीनों की संरचना का पता लग जाए तो मनुष्य की 'जीनकुण्डली' के आधार पर उसके जीवन की तमाम जैविक घटनाओं और दैहिक लक्षणों की भविष्यवाणी करना सम्भव हो जायेगा।

मनुष्य के समस्त जीनों की संरचना जल्दी से जल्दी खोजने के लिए अमेरिकी सरकार ने 'मानव जीनोम परियोजना' के नाम से सन् १९८८ में एक महत्वाकांक्षी और विशाल शोध परियोजना प्रारम्भ की। इसका लक्ष्य सन् २००३ तक मानव जीनोम की सम्पूर्ण संरचना का पता लगाना निर्धारित किया गया। जीनों की संरचना का पता लगाने के लिए बेहद उन्नत रोबोटिक मशीनों का उपयोग किया जा रहा है। ये मशीनें प्रति मिनट बारह हजार यूनितों का संसाधन करने में सक्षम हैं और जीनोम साइन्स की आधार रोबोटिक मशीनें भौतिक विज्ञान की ही देन हैं।

चिकित्सा विज्ञान की अन्य प्रमुख शाखाएँ जैसे बेलून थेरेपी, स्पीच थेरेपी और फिज़ियोथेरेपी हैं। दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में फिज़ियोथेरेपी से ७५ रोगियों का इलाज कर चुके जे०पी० दुरेजा कहते हैं - "फिज़ियोथेरेपी से राहत धीरे-धीरे और पीड़ा के साथ मिलती है लेकिन बैथेक्स की सहायता से हम ढील चेयर में बैठे रहने वाले कुछ बच्चों को एक महीने के भीतर चलाने-फिरा सकते हैं।"

अपराधियों को पकड़ने के लिए एवं विवादित जनकों के सत्यापन के लिए जीवविज्ञान की नयी शाखा कॉरैन्सिक साइन्स की खोज हुई है। जिसके लिए डी०एन०ए० फिंगर प्रिंटिंग, बल्ड स्टेन, सीमेन स्टेन, टीयर्स और सैलाइबा का परीक्षण करने के लिए मिनी सैटेलाइट को सम्पूर्ण ह्यूमेन जीनोम में भेज दिया जाता है। इसी जीवविज्ञान के अन्तर्गत मन एवं मस्तिष्क की संवेदना एवं क्रियाशीलता को जानने के लिए कैट स्केन जैसे अतिसंवेदनशील उपकरणों के द्वारा जीव-जन्तुओं एवं मनुष्यों के घूसर द्रव्य का परीक्षण किया जाता है। इसी के लिए वैज्ञानिक हार्वर्ड ने माइण्ड ब्रेन बिहैवियर संस्थान की स्थापना की। जैवभौतिकी में नोबेल पुरस्कार विजेता हक्सले एवं हेकल के अनुसार तन्त्रिकाओं की गतिशीलता उसमें होने वाले विद्युत आवेश पर निर्भर है। इसी विद्युत आवेश की गतिशीलता से ही शरीर की सम्पूर्ण क्रियाओं का संचालन होता है। सारांश यह है कि जीवविज्ञान का मूल अधिष्ठान भौतिक विज्ञान है और भौतिक विज्ञान का सांसारिक सदुपयोग जीवविज्ञान के माध्यम से ही सम्भव है। इन दोनों का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध स्पष्ट की व्यवस्था है। वास्तव में यह पंचभौतिक शरीर जिसमें जीव सुरक्षित निवास ही नहीं करता बल्कि स्वैच्छिक विचरण करते हुए क्रियाशील भी रहता है। यह इन दोनों के सकारात्मक सम्बन्ध के बिना हो नहीं सकता।

- संजय सिंह
एकादश 'ख'

(विज्ञान अकादमी द्वारा आयोजित अभिभाषण प्रतियोगिता में भैया संजय सिंह द्वारा दिया गया भाषण जिसमें उन्हें द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ)

विनाश को आमन्त्रित करता मानव

महाप्रलय का शब्द मन में सहस्रों बार आता रहता है। मैंने सुना-पढ़ा है कि महान भविष्यवेत्ता नास्त्रेदमस ने कहा था कि कुछ सदियों के बाद महाप्रलय हो जायेगी। मेरे अनुसार भी प्रलय होकर रहेगी।

कारण प्रत्यक्ष हैं। एक नहीं, अनेक कारण और तथ्य हैं जो इस कथन की सच्चाई प्रमाणित कर सकते हैं। दुनिया के हर देश में परमाणु हथियारों की होड़ लगी हुई है, जो न्यूनतम प्रयोग में पृथ्वी को नष्ट कर सकते हैं।

अब तक दो विश्वयुद्ध हो चुके हैं, जिन्होंने बहुत जनहानि व धनहानि की है। दूसरे विश्वयुद्ध में जापान की जीत को रोकने के लिए अमेरिका ने 'लिटिल बॉय' नामक एटमबम को हिरोशिमा व नागासाकी पर गिराकर इन शहरों को नष्ट कर दिया। ३ मील ऊँचे विषैले धुँएँ वाले, २० मील की दूरी से इसके दर्शन करने वाले को अन्धा कर देने वाली चमक वाले, समय सूचक यन्त्रों की गति को रुकने के लिए विवश करने की शक्ति वाले इन बमों से शहर समाप्त ही नहीं हो गये बल्कि वहाँ विकलांगों की दुनिया तैयार हो गयी। इनसे भी शक्तिशाली हैं आज की मिसाइलें और बम।

अब सपनों में भी तृतीय विश्वयुद्ध का भयानक दृश्य बनने लगता है। यह विश्व युद्ध बहुत खतरनाक होगा। विनाशक धूमकेतु के टकराने से भी भयानक। उस समय पृथ्वी अन्तरिक्ष में आग का जलता हुआ गोला होगी।

परमाणु परीक्षण तो कर लिये। लेकिन अब इसके कचरे का क्या होगा? इससे निकलने वाली रेडियोधर्मी गैसों जनजीवन को हानि पहुँचायेगी। समुद्र में डाले जाने पर जल-चक्र से वही पानी हमारे दैनिक उपयोग में आयेगा, वह भी हानिकारक होगा। पॉलिथिन-प्लास्टिक का प्रयोग बन्द नहीं हुआ, तो ये भी कम हानि पहुँचाने वाली नहीं। जमीन, प्रकृति, जन-जीवन को बर्बाद करने में इनका भी कम योगदान नहीं।

अकारण और व्यर्थ ही प्राकृतिक संसाधनों का अनावश्यक खनन व दुरुपयोग धरती को खोखला कर देगा, जिससे पृथ्वी का रूप खोखले वृक्ष की तरह हो जायेगा।

फैक्ट्री, चिमनी व अन्य सभी कार्बन निष्कासित करने वाले वाहनों से निकलता धुआँ, और दूसरी ओर से जीवन देने वाले वृक्षों की अन्धाधुन्ध कटाई ये जीवन चलने के विपरीत हैं।

कम मेहनत में अच्छी शेविंग के लिये बन्द डिब्बों में झाग की भी बिक्री हो रही है। ऐरोसॉल, रेफ्रिजरेटर, एयर कण्डिशनर इत्यादि से सी०एफ०सी० गैस निकलती है जो हमारी पृथ्वी के सुरक्षा कवच के लिए हानिकारक है। यह ओजोन गैस के कणों को तोड़कर आक्सीजन के अणुओं में बदल देती है। कई अणु ओजोन नष्ट करने के बाद सी०एफ०सी० का एक अणु नष्ट होता रहता है। कार्बन-डाई-आक्साइड, कार्बन इत्यादि से वातावरण का तापमान बढ़ता जा रहा है। इससे ध्रुवों पर जमी बर्फ के पिघलने की सम्भावनाएँ बनती जा रही हैं। ओजोन में बन गये छिद्र इन्हीं प्रदूषणों के कारण हैं।

ओजोन के छिद्र से पराबैंगनी किरणें धरती पर प्रवेश कर रही हैं। छिद्र बड़ा होने पर इनकी

मात्रा भी बढ़ जायेगी और ये धरती को जलाकर खाक कर देंगी। तब इस धरती पर राख के सिवा कुछ नहीं होगा।

एक मात्र आशा की किरण है - वृक्ष जो जिन्दा रहने के लिये प्राणवायु देते हैं, मानव अपनी सुविधाओं के लिये इन्हीं को काट रहा है। इनकी कटाई से प्रदूषण बढ़ता जा रहा है, जिससे संसार में ऋतु, ताप आदि अनियन्त्रित हो गये हैं। अत्यधिक गर्मी, अत्यधिक सर्दी, अत्यधिक वर्षा तो कभी सूखा, मृदा अपरदन, सब इसी के कारण हो रहे हैं। जो अशुद्ध वायु लेकर उससे लाखों गुना अधिक प्राणवायु देते हैं, मानव आज उन्हीं का नाश कर रहा है। इस प्रकार धरती पर प्रलय आने से कौन रोक सकता है? उस समय तो 'भगवान बड़ा कारसाज है' की सार्थकता समाप्त हो जायेगी। धरती नेस्तनाबूद हो जायेगी।

यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी कि प्रकृति के साथ छेड़खानी करना महाप्रलय को निमन्त्रण देने के समान होगा।

यदि बचना है तो वायु-प्रदूषण, वृक्षों की कटाई, परमाणुअस्त्रों की होड़ को समाप्त करना होगा और हर देश की ३८ प्रतिशत भूमि को वनों से ढकना होगा तथा इसके लिये प्रकृति विरोधी-तत्वों से संघर्ष के लिये तत्पर रहना होगा।

- मयंक कुमार

दशम-ख

दूर दिन वह है नहीं

बुद्धि के बल पर मनुज ने, खेल खेला एक ऐसा।

अमन का गुलशन उजाड़ा, किया विश्व मसान जैसा।

सोचता शुभ है सवेरा, किन्तु आगे तिमिर-घेरा।

मानवी करनी दुःखद है, झूठ का सपना बिखेरा।।

बुद्धि दे दी ईश ने क्या, भूल कर तू खो गया है।

शुभ दिशा को छोड़ अब वह, दानवोचित हो गया है।

अमन सोते वैन खोते, हैं सभी टुट्टे खिलौने।

खेल इनसे अगर खेला, मिटेंगे सपने सलोने।

दूर दिन वह है नहीं, जब हवा में भी जहर होगा।

उस समय तू शिथिल होगा, मूक, जड़ निष्प्राण होगा।।

छोड़ ये अपने इरादे, शान्ति का पथ ही उचित है

विश्व के कल्याण के हित, सत्य का पथ ही उचित है।

कुलदीप सिंह राजपूत

एकादश - 'ख'

स्वामिभक्त कुत्ता

एक गाँव में एक चरवाहा रहता था। उसका नाम राम सिंह था। पूरा गाँव उसे रामू कहकर पुकारता था। रामू बहुत ही सीधा एवं दयालु प्रवृत्ति का व्यक्ति था। इसके पास एक कुत्ता पला हुआ था। वह कुत्ता अपने मालिक के प्रति बहुत वफ़ादार था। रामू अपने कुत्ते से बहुत अधिक स्नेह करता था तथा कुत्ता भी अपने मालिक से बहुत अधिक स्नेह करता था।

जब भी वह किसी काम से गाँव से बाहर जाता तो कुत्ता उसके घर की देख-भाल करता था। रोज़ चरवाहा अपने जानवरों को लेकर जंगल में चराने जाता। उसका कुत्ता भी उसके साथ जाता था। जब दौपहर को रामू किसी वृक्ष के नीचे विश्राम करता था तब उसका कुत्ता जानवरों को चरते हुए दूर नहीं जाने देता था।

एक दिन की बात है। रामू अपने घर के लिये एक जोड़ी बैल खरीदना चाहता था परन्तु बैलों को खरीदने के लिये उसके पास पैसे कम थे। फिर भी वह बैल खरीदने के लिये शहर गया। उसके साथ उसका कुत्ता भी था। वह एक सेठ के पास पहुँचा। उसने सेठ से आग्रह किया कि “कृपया आप मेरे इस कुत्ते को अपने पास रख कर, कुछ पैसे दे दीजिये। मैं कुछ दिनों में वापस आकर आपके पैसे लौटा दूँगा और अपना कुत्ता ले जाऊँगा।” सेठ जी ने रामू की बात मान ली और रामू पैसे लेकर जाने लगा तभी उसके कुत्ते ने उसका कर्ता पकड़ लिया। यह देखकर रामू ने उसे समझाया कि “देख मेरे भाई कुछ ही दिनों के लिये तुम सेठ जी को अपना मालिक मानना तथा बहुत ही वफ़ादारी से उनकी सेवा करना। मैं तुम्हें कुछ ही दिनों के बाद यहाँ से ले जाऊँगा।” कुत्ता अपने मालिक की बात को अच्छी तरह समझ गया और वह सेठ जी के यहाँ रहने लगा।

अब रामू को अपने कुत्ते के बिना अच्छा नहीं लग रहा था। उसने अत्यधिक मेहनत करना प्रारम्भ कर दिया।

इधर एक रात में कुछ चोर सेठ जी के घर में घुस गये। उन्होंने तिजोरी का ताला तोड़ कर सारा पैसा निकाल लिया। कुत्ता यह सब कुछ देख रहा था परन्तु कुछ बोला नहीं। वे लोग जाने लगे तो कुत्ता भी पीछे - पीछे जाने लगा। कुत्ते ने देखा कि चोरों ने सारा पैसा शहर के बाहर एक नदी के किनारे गाड़ दिया है। यह सब देख कर कुत्ता चुप-चाप लौट आया। सुबह होते ही जब सेठ को पता चला तो वे दुःखी होकर रोने लगे। पुलिस आई। पुलिस ने बहुत प्रयत्न किया परन्तु पैसा खोज न पाई। सेठ जी और पुलिस इंस्पेक्टर एक साथ खड़े होकर कुछ बातचीत कर रहे थे तब कुत्ता कभी सेठ जी की धोती खींचे तो कहीं इंस्पेक्टर का पैण्ट खींचे। दरअसल वह उन्हें वहीं ले जाना चाहता था, जहाँ पर उन चोरों ने पैसा छुपाया था। सेठ जी तो उसकी बात समझ न पाये परन्तु इंस्पेक्टर समझ गया। कुत्ता आगे-आगे दौड़े पीछे पुलिस की जीप चल रही थी। कुत्ता उसी नदी के किनारे से खोदकर एक थैली निकाल लाया। यह देखकर इंस्पेक्टर ने सारा पैसा वहाँ से निकलवा लिया।

सेठ जी का सारा पैसा मिल गया। वे बहुत खुश हुए, उन्होंने रामू के नाम एक चिट्ठी लिखी, जिसमें लिखा था कि “रामू मैं तुम्हारे कुत्ते को तुम्हारे पास भेज रहा हूँ, इसके बदले में मुझे पैसे नहीं चाहिये।” वह चिट्ठी कुत्ते के गले में लटका दी। अब कुत्ता खुश होकर दौड़ा हुआ चला आ रहा था। यह देखकर रामू ने सोचा “भैंसे इससे कहा था कि मैं इसे वहाँ से ले आऊँगा, परन्तु यह गद्दारी करके वहाँ से भाग आया है।” यह सोच उसने क्रोधित होकर अपने कुत्ते को मार डाला। जब उसने उसके गले में पड़ी हुई चिट्ठी पढ़ी तो उसे बहुत दुःख हुआ और उसकी याद में रामू ने भी कुछ दिनों में अपने प्राण त्याग दिये।

ठीक ही कहा गया है कि :-

“बिना बिचारे जो करै, सो पाछे पछिताए।”

गौरव कटियार

नवम 'ख'

दुनियाँ

दुनियाँ ने मुझे पहचाना नहीं

क्या वह किसी को

पहचानती है?

उसने मुझे जाना नहीं

क्या वह किसी को

जानती है?

दुनियाँ तो केवल

जनाती बनाती है

जनती और बनती है

बिगड़ना उसका धर्म

और उड़ने की

असफल जिद

उसका कर्म।



ठाकुर साहब का जाना

ठाकुर साहब विद्यालय के शुभचिन्तकों में से एक थे। विद्यालय की पत्रिका से उनका विशेष लगाव था। आज वे हमारे बीच यद्यपि नहीं हैं फिर भी पत्रिका के प्रकाशन के समय उनकी याद आ ही जाती है। उन्हें हमारी भावांजलि अर्पित है।

- सम्पादक

कमरे में बँधी हुई रस्सी का एक सिरा दीवार में बँधा था और दूसरा सिरा लकड़ी की अलमारी में। अलमारी में छोटी सी सांकल खुली रह जाया करती थी। रस्सी पर एक चुहिया बार-बार इधर से उधर आ-जा रही थी। अलमारी में रखे बिस्कुटों को अंश-अंश में प्राप्त करना, किसी भी प्रकार से, अपने और अपने कुटुम्ब के लिये, यही उसका उद्देश्य था। उद्देश्य के प्रति अद्भुत समर्पण था। वह रस्सी, बार-बार गिर जाती थी, फिर उठती थी और एक सिरे से चलना शुरू करती थी। कठिन-श्रम, उद्दाम-लालसा, अप्रतिहत-आशा। अपने कमरे में होने वाली, सामान्यतः लोगों द्वारा बिल्कुल ध्यान न दी जाने वाली, लोकभाषा में वाहियात बात, को उन्होंने ध्यान से परिलक्षित किया। उससे कुछ सीखा और विद्यार्थियों के बीच हुए वक्तृत्व में इस घटना को उन्होंने प्रेरक प्रसंग के रूप में उद्धृत किया। सूक्ष्मदर्शी थे ठाकुर साहब। ठाकुर साहब अब हमारे बीच नहीं हैं। विगत ३१ दिसम्बर १९६६ को प्रातःकाल छः बजे उन्होंने स्थूल शरीर छोड़ दिया। सूक्ष्म रूप से वे आज भी उपस्थित हैं।

ठाकुर साहब का जन्म २ जून १९११ को सरायमीरा, कन्नौज में हुआ था। आपके पिता स्वर्गीय तोताराम सिंह पुलिस में सब इंस्पेक्टर थे और परिवार में माँ के अलावा दो भाई और एक बहिन थी। ठाकुर साहब का पूरा नाम श्री चंद्रपाल सिंह था। आपके पिता ऐसे पेशे में थे जिसमें स्थानान्तरण हुआ करते थे इसलिये ठाकुर साहब की प्रारम्भिक शिक्षा अलग-अलग कई शहरों में हुई। ठाकुर साहब बचपन से ही बड़े प्रतिभाशाली और कुशाग्र बुद्धि थे। आठवीं कक्षा में ये ही अपने विद्यालय में ऐसे छात्र थे जिसे छात्रवृत्ति मिली। आठवीं कक्षा से हाईस्कूल तक की पढ़ाई आगरा के बलवन्त राजपूत स्कूल में हुई, छात्रावास में रहकर पढ़ाई करते हुए ठाकुर साहब ने प्रथम श्रेणी के साथ सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया; इस उपलब्धि के साथ ही ठाकुर साहब के गणित, संस्कृत और अंग्रेजी में भी सर्वाधिक अंक थे। इस उपलब्धि पर विद्यालय में हुए एक समारोह में कवीन्द्र रवीन्द्र नाथ टैगोर ने उन्हें तीन बार पुरस्कृत किया। ठाकुर साहब के शब्दों में "टैगोर मखमली टोपी, कोमल श्वेत केशराशि, रेश्मी दाढ़ी और नीली आँखों में बिल्कुल जादूगर लगते थे और मुझ पर उनके जादुई व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ा।"

इण्टर तक की पढ़ाई आगरा से करने के बाद ठाकुर साहब बी०ए० करने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय गए और यहीं वे गाँधी जी के "असहयोग आन्दोलन" और "सविनय अवज्ञा आन्दोलन" से जुड़े। ठाकुर साहब बताते थे कि मैं उन दिनों खूब क्रान्तिकारियों की जीवनियाँ पढ़ा करता था और उसी में मन लगा रहता था।

बनारस आकर जहाँ ठाकुर साहब गाँधी जी के आन्दोलनों से जुड़े वहीं उनका अध्ययन-क्रम भी भली प्रकार चलता रहा। बी.ए. में उन्हें पूरे विश्वविद्यालय में तीसरा स्थान मिला तो एम. ए. अंग्रेजी में उन्होंने पूरे विश्वविद्यालय में पहला स्थान प्राप्त किया। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

में ठाकुर साहब को मूर्धन्य विद्वानों एवं साहित्यकारों के संरक्षण में अध्ययन का सौभाग्य मिला। अयोध्या सिंह उपाध्याय “हरिऔध”, श्याम सुन्दरदास जैसे विद्वान् उनकी कक्षाएँ लिया करते थे। वी. एच. यू. में पढ़ने के दौरान ही सन् १९२६ में लाहौर में हुए कांग्रेस के अधिवेशन में वे अपने कई साथी विद्यार्थियों को लेकर गए थे।

परास्नातक तक की शिक्षा के बाद ठाकुर साहब प्रदेश और प्रदेश के बाहर भी कई विद्यालयों में अध्यापन कार्य करते रहे। सन् १९४२ में वे राष्ट्रीय स्वयं सेवकसंघ से जुड़े और हरदोई जिले में संघ कार्य प्रारम्भ किया। उसके बाद वे जीवन भर संघ के नियमित और अनुशासित स्वयं सेवक रहे। सन् १९४८ में गाँधी जी की हत्या हुई, ठाकुर साहब के घर की तलाशी हुई और पुलिस इनके पीछे लग गयी। इस दौरान ये अपना स्थान बदलते रहे। सन् १९५६ से १९७० तक ठाकुर साहब ‘कुँवर सिंह इण्टर कॉलेज’ बलिया में प्रधानाचार्य रहे। सन् १९७० में सेवानिवृत्त होने पर ठाकुर साहब ने मा० रज्जू भैया को पत्र लिखा जिसमें उन्होंने अपना शेष जीवन संघ कार्य में देने की इच्छा जताई थी। उन दिनों बनारस के डी.ए.वी. कॉलेज में संघ शिक्षा वर्ग लगा था और रज्जू भैया ने ठाकुर साहब को वहीं मिलने को कहा था। बनारस जाने पर ठाकुर साहब की रज्जू भैया के अलावा स्व० भाउराव जी, अशोक सिंहल जी आदि से भी मुलाकात हुई और उसी समय उन्हें दीनदयाल जी की स्मृति में कानपुर में खुले पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय का दायित्व सौंपा गया। १८ जुलाई १९७० को प्रारम्भ हुए दीनदयाल विद्यालय के वे १९७६ तक प्रधानाचार्य रहे। सन् १९७६ में स्वयं को प्रधानाचार्य के पद से मुक्त करके ठाकुर साहब आगरा में तहसील संचालक हो गए और वहाँ उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा का बहुत काम खड़ा किया। विद्या भारती प्रमुख, लज्जाराम जी तोमर उस समय वहाँ एक विद्यालय के प्राचार्य थे और ठाकुर साहब उन्हीं के साथ रहा करते थे। लज्जाराम जी ठाकुर साहब को दो वर्ष के लिये दिल्ली ले गए और वहाँ उन्हें विद्या भारती प्रदीपिका के अंग्रजी संस्करण के सम्पादन का दायित्व सौंपा गया। इसके बाद ठाकुर साहब पुनः अपने गाँव जाकर प्रौढ़ शिक्षा का काम करने लगे। सन् १९८१ में दीनदयाल विद्यालय के वर्तमान प्रधानाचार्य ओमशंकर त्रिपाठी आग्रह करके ठाकुर साहब को पुनः विद्यालय लावा लाए और स्वतन्त्र रूप से सबका मार्गदर्शन करने का आग्रह किया। सन् १९८१ से १९९७ तक ठाकुर साहब विद्यालय परिसर में ही रहे और विद्यालय के उत्कर्ष के लिये अपने अमूल्य सुझाव देते रहे। सितम्बर १९९५ में विद्यालय ने अपना रजत जयन्ती समारोह मनाया और इसी कार्यक्रम में प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी ने दो अन्य महानुभावों सहित ठाकुर साहब को सम्मानित किया। इस कार्यक्रम का नाम था - “तप का वन्दन”।

ठाकुर साहब एक चलते फिरते इतिहास थे। परिश्रम, समर्पण, सत्यनिष्ठा, स्पष्टवादिता उनके कुछ प्रमुख गुण थे। उनकी स्पष्टवादिता से कई लोग नाराज भी हो जाते थे लेकिन उनका अन्तःकरण पारदर्शी था। उनका पूरा जीवन संघ के लिये था यहाँ तक कि देहान्त के समय भी वे आगरा के एक संघ स्थान पर भारत माता की वन्दना कर रहे थे। ठाकुर साहब के संरक्षण में प्रारम्भ हुआ दीनदयाल विद्यालय प्रगति के तमाम सोपान चढ़ता हुआ आज अपनी एक पहचान बना चुका है। ठाकुर साहब का जाना हमारे परिवार से किसी ममतामय बुजुर्ग का जाना है, सिर से छाँव का हट जाना है। उनके न रहने से हम शोक सन्तप्त हैं। हम उनके जीवन से प्रेरणा और पाथेय अर्जित करते रहें, ऐसी ईश्वर से प्रार्थना है।

- दुर्गेश वाजपेयी
पूर्व छात्र

रंग बदलती राजनीति

राजनीति का अर्थ वास्तव में बहुत व्यापक है लेकिन कुर्सी की भूख ने आजकल राजनीति का अर्थ ही बदल डाला है।

स्वतन्त्रता की स्वर्गगंगा १५ अगस्त १९४७ ई० को हमारे पावन देश की धरती पर बड़ी भगीरथ तपस्या के बाद उतरी है। इसके पाँच दशक पूरे हो चुके हैं। हमने अपनी माता के दामन पर लगे गुलामी के धब्बे अंग्रेजों की विदाई के साथ ही धो डाले। लाल किले पर यूनियन जैक की जगह भारतीय तिरंगा लहराने लगा, अंग्रेज गवर्नर जनरल की जगह स्वदेशी राष्ट्रपति विराजमान हैं। इतना अधिक खण्डित होने पर भी यह विशाल देश अब जनतन्त्र की छत्र छाया में आ चुका है। लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के फौलादी इरादे देश में राष्ट्रवीणा के तार के रूप में सज गये हैं। लेकिन इन सबके साथ-साथ राजनीति का खेल भी खेला जाता रहा है।

‘राजनीति’ शब्द का उद्भव, महाभारत काल तथा विदेशियों के आक्रमण काल के पूर्व ही हो चुका था। वर्तमान राजनीति का तो स्वरूप ही बदल चुका है। भगवान् श्रीकृष्ण तथा आचार्य चाणक्य की कूटनीति को हम ‘राजनीति’ की ही संज्ञा देंगे। वह राजनीति न्यायसंगत, राष्ट्रके विकास तथा समाज-कल्याण की भावना से परिपूर्ण थी। राजनीति का अर्थ वास्तव में बहुत व्यापक है लेकिन कुर्सी की भूख ने आजकल राजनीति का अर्थ ही बदल डाला है। ये कुर्सी की चाह रखने वाले लोभी नेता और अराजक तत्व चुनाव से पूर्व जनता को झूठे वादे देकर कुर्सी तक पहुँच तो जाते हैं, लेकिन फिर इन्हें न तो समाज-कल्याण की चिन्ता रहती और न राष्ट्रविकास की। ये भ्रष्ट नेता जनता का शोषण करते हैं। लेकिन बेचारी नादान भारतीय जनता जो बार-बार उन हैवानों को ही अपना प्रतिनिधि बनाती है।

‘चिड़िया चुनती है दानों को, पर यह चुनते नादानों को।’

ये भ्रष्ट लोग जोर जुल्म से मतदान केन्द्रों पर मतदाताओं को प्रवेश न देकर तथा पीठासीन अधिकारियों को डरा धमकाकर मतपत्रों को लूटते हैं और मतदान केन्द्रों पर कब्जा करते हैं। आज इस तरह के गन्दे लोग शासनसूत्र अपने हाथ में लेकर देश में अन्याय और भ्रष्टाचार का गगन ताण्डव कर रहे हैं। उर्दू के प्रसिद्ध शायर इकबाल लिखते हैं-

‘जमहूरियत वह तर्जे-हुकूमत है कि जिसमें।

बन्दों को गिना करते हैं, तौला नहीं करते।।

लोकमान्य तिलक ने कहा था कि राजनीति साधुओं का खेल नहीं है। विदेशी विचारक डिजराइली राजनीति को धूतक्रीड़ा मानते हुए कहते हैं कि राजनीति लफंगों का खेल है। इतना ही नहीं, राजनीति में कुञ्ज की पुष्प-शोभा जल उठती है, लाल फूल अंगारों का रूप धारण कर लेते हैं और शीतल समीकरण सपों की फुफकार बन जाता है। राजनीति वीरांगना है, जिसका व्यवहार अनेक प्रकार का होता है। कहीं वह झूठी है, तो कहीं सच्ची, कहीं कठोर तो कहीं प्रिय भाषिणी, कहीं हिंसक, कहीं दयालु, कहीं कृपण, तो कहीं उदार, कहीं अधिक द्रव्य व्यय करने वाली, तो कहीं अधिक संचय करने वाली है। ऑस्टिन ने लिखा है-

“राजनीति पारे की तरह है। अगर तुम उस पर उँगली रखने की कोशिश करो, तो उसके नीचे कुछ नहीं मिलता।”

सत्ताधारी राजनीतिज्ञों और विपक्षी राजनीतिज्ञों की शतरञ्ज चाल के लिए युवा पीढ़ी मुहरों का काम कर रही हैं। बहुत सारे नवयुवक भी सस्ते प्रलोभनों पर इनके इशारे से कठपुतली की तरह नाच रहे हैं। विधान सभाओं या संसद में गालीपुराण बाँचने वाले या कुर्सी माइक फेंकने वाले देश के भाग्यविधायकों की नकल पर देश के नवयुवक भी ऐसी अव्यवस्था के वाहक होते जा रहे हैं।

छात्रजीवन तो मानवजीवन की भव्य अट्टालिका का आधार स्तम्भ है। विद्यालय के छात्रों के बीच जो अनुशासनहीनता का रोग फैल रहा है, उसके कारणों में एक कारण राजनीति भी है। छात्र अपना अध्ययन बन्दकर मध्यरात्रि में दीवारों पर अनाप शनाप नारे लिखने में अपना अमूल्य समय नष्ट कर रहे हैं। 'छात्र' का अर्थ है - छात्र की तरह अर्थात् सन्तप्त की रक्षा करने वाला। आज वे राजनीति के कारण रक्षा के बदले अनिष्ट करने में लगे हैं। वे राजनीतिज्ञों के हाथ के हथियार बन गये हैं, उनके कठपुतले बनते जा रहे हैं और वे अनुशासनहीनता की विभीषिकाएँ उपस्थित करते रहते हैं। अतः छात्रों को अध्ययन-काल में कुरूप राजनीति आन्दोलन तथा भावनात्मक उत्तेजनाओं की लौ में नहीं जलना चाहिए।

आज हमारे देश का सम्पूर्ण समाज जातिवाद के भयानक भुजंग के विषदंश से मूर्च्छित हो गया है। राजनीतिक दलों ने जातिवाद का जहर घोल दिया है। जातिवाद भारतवर्ष का एक बहुत बड़ा कलंक है।

“भारत मस्तक का कलंक यह, जाति पाँतियों में जन-खण्डित।

जहाँ मनुज अस्पृश्य चरण रज, राष्ट्र रहे वह कैसे जीवित?”

- सुमित्रानन्दन पन्त

आज राजनीतिक दल, सत्ता में पहुँचकर नई-नई शिक्षानीति प्रस्तुत कर छात्रों का पथ-विभ्रष्ट कर रहे हैं ये लोग पश्चिमी सभ्यता पर आधृत पश्चिमी शिक्षा प्रणाली की अन्धी नकल करके देश के भावी कर्णधारों को अपनी भारतीय संस्कृति के ज्ञान से वञ्चित कर रहे हैं। देश को बेचने वाले ये कलंकी, ऐसी शिक्षा देने का प्रयास करते हैं, जिससे न तो मन विकसित होता है और न मनुष्यत्व। आज वर्तमान सत्ता पक्ष शिक्षा प्रणाली के सुधार में सकारात्मक रवैया अपना रहा है। लेकिन विपक्षी दलों के नेता इसका विरोध करते हैं। जो कि सर्वथा अनुचित है। इन्हें तो केवल अपने वेतन भत्तों की चिन्ता है। देश में गरीबी के कारण बिलख रही 900 करोड़ जनता की कोई परवाह नहीं। ये नेता घोटालों पर घोटाले करते रहते हैं। देश कर्ज से डूबा जा रहा है, उसकी इन्हें कोई चिन्ता नहीं। वाह री राजनीति।

जिन आँखों की अटारियों पर खुशियों की ज्योति छिटकती रहती थी, आज वे ही तेल हीन दिये की तरह बुझी-बुझी क्यों हैं? जिन मुखाकृतियों पर प्रसन्नता की पूर्णिमा छाई रहती थी, आखिर उन्हीं पर अमावस्या की काली रजनी क्यों घिर आई है? जिन कमनीय कपोलों से सेव की ललाई टपकती रहती थी, उन्हीं पर विवर्णता की स्याह रेखायें क्यों उभर आयी हैं? जिन होठों पर कहकहों के पटाखे अहरह छूटते रहते थे, वे ही तारहीन विपञ्ची की तरह विषण्ण मौन क्यों है? सारे प्रश्नों का एक उत्तर है - “देश को जलाने वाली कुत्सित राजनीति।”

आज हमें देश में अमन-चैन लाना है। भ्रष्टाचार को जड़ से समाप्त करना है। कठोर परिश्रम एवं दृढ़ निश्चय से हम एकजुट होकर अपने देश को संसार में समृद्धिशाली देशों की कोटि में लायेंगे यदि हम राजनीति के कुत्सित रूप को बदलने में सफल रहे तो निकट भविष्य में हमारा देश विश्व के महान शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में गिना जायेगा।

- विनय द्विवेदी

एकादश 'क'

समाजशिल्पी पं० दीनदयाल उपाध्याय

सर्वप्रथम तो हमें समाज की परिकल्पना समझनी होगी। समाज का निर्माण भूखण्ड या जन मात्र से नहीं होता है, समाज का निर्माण तो धर्मनिष्ठ, कर्तव्यपरायण तथा ईमानदार लोग किया करते हैं। पं० दीनदयाल उपाध्याय जी सच्चे राष्ट्रभक्त थे। उनकी राष्ट्रीयता की धारणा कल्पना मात्र न होकर व्यावहारिक थी। वे अपनी निस्पृह सेवा, अविराम कर्मसाधना द्वारा सामाजिक ऊँच-नीच की दीवारों को ढहाकर आर्थिक शोषण एवं दोहन के उत्पीड़न को समाप्त कर, प्रान्त, भाषा और सम्प्रदाय आदि के संकुचित वैषम्य को खत्म कर मानव मात्र को समता और एक सूत्रता के समतल धरातल पर लाना चाहते थे। उन्होंने जनसंघ का ऐसा स्वरूप विकसित किया जो राष्ट्र पर आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिये सन्नद्ध रहा।

आर्थिक दृष्टिकोण — यद्यपि वे अर्थशास्त्री नहीं थे किन्तु अर्थशास्त्र को वे अच्छी तरह समझते थे उनके अनुसार अर्थ का प्रभाव तथा अभाव दोनों हानिकारक हैं। दल की अर्थनीति के निर्धारण में उनकी एक और बड़ी देन-आर्थिक विषमताओं को दूर करने की प्रेरणा थी। आय की अधिकतम सीमा बाँधने तथा काम के अधिकार को मौलिक अधिकारों में जोड़े जाने का आग्रह दीनदयाल जी का ही था। वे भारत की जनशक्ति को उसकी पूँजी का एक महत्वपूर्ण अंग मानते थे। उद्योगों के स्वामित्व के ढाँचे के सम्बन्ध में उनका आर्थिक दृष्टिकोण बड़ा व्यावहारिक था। पण्डित जी ने वह आर्थिक विचारधारा प्रदान की जो उनके समकालीन तथा पूर्वकालीन विचारकों से भिन्न थी। वे कहते थे “आर्थिक क्षेत्र में स्वतन्त्रता समाप्त हुई तो राजनैतिक क्षेत्र में भी समाप्त हो जाएगी। भारत में समाजवाद और प्रजातन्त्र एक साथ नहीं चल सकते। सच्चे प्रजातन्त्र का आधार आर्थिक विकेन्द्रीकरण ही हो सकता है।”

राजनीति साधन, साध्य नहीं — पण्डित जी वह आदर्श पुरुष थे जिन्होंने राजनीति को शक्ति और शुद्धता के धरातल पर खड़ा किया। उन्होंने आधुनिक राजनीति, अर्थव्यवस्था तथा समाज रचना का चतुरंगी भारतीय धरातल प्रस्तुत किया। वे राजनीति के दिशानिर्देशक प्रकाश-पुञ्ज थे। उनका निर्मल राष्ट्र समर्पित चरित्र कमल के समान कभी भी राजनैतिक स्पर्धा एवं ईर्ष्या रूपी दलदल में मैला नहीं हुआ। उन्हें पद या वैभव के प्रति आसक्ति नहीं थी। उनका जीवन परिश्रम, साधना, निःस्वार्थ सेवा तथा संघर्ष का अद्वितीय उदाहरण है। राजनीति उनके लिये साधन था साध्य नहीं, मार्ग था मंजिल नहीं।

वैचारिक देन-एकात्ममानववाद — प्रत्येक युग में एक ऐसे द्रष्टा का जन्म होता है जो निराशायुक्त मानवजाति को आशा का सन्देश दे। उन्होंने, शरीर मन, बुद्धि तथा आत्मा

को मिलाकर एकात्म मानववाद प्रस्तुत किया। सम्पूर्ण देश को दीनदयाल जी की वैचारिक देन 'एकात्ममानववाद' है। उनका समन्वय इस बात का द्योतक है कि मानव चेतना विश्वव्यापी चेतना के रूप में विकसित हो सकती है। वे संकुचित दायरे वाले न होकर मानववादी थे। व्यक्ति-व्यक्ति के बीच एकात्म सम्बन्ध के आधार पर सामाजिक विकास को उन्होंने एकात्म मानववाद का लक्ष्य बनाया।

अखण्ड भारत के स्वप्न द्रष्टा - दीनदयाल जी कहा करते थे कि "हमने अपने सामने अखण्ड भारत का ध्येय रखा है। अखण्ड भारत देश की भौगोलिक एकता का ही परिचायक नहीं अपितु जीवन के भारतीय दृष्टिकोण का द्योतक है। जो अनेकता में एकता के दर्शन कराता है। अतः अखण्ड भारत हमारे लिये कोई राजनैतिक नारा नहीं वरन् सम्पूर्ण दर्शन का मूलाधार है।" परिवार न बसाने की जो भावना उनके मन में आयी उसका एकमात्र कारण निर्विघ्न समाजसेवा था। अपनी आन्तरिक प्रेरणा से प्रेरित होकर वे हर क्षण निर्विकार भाव से राष्ट्र सेवा में जुटे रहे। श्रम की साधना में उनका अटूट तथा असीम विश्वास था।

शिक्षा के प्रति द्रष्टिकोण - दीनदयाल जी ने शिक्षा के नैतिक मूल्यों को बताकर व्यक्तित्व निर्माण की नींव डाली। पण्डित जी कहा करते थे "स्वाध्याय मनुष्य का स्वयं का अध्यापन है। पठन, मनन और चिन्तन के सहारे मनुष्य ज्ञान को आत्मगम्य करता है। बिना स्वाध्याय के न तो ज्ञान टिकता है और न ही ज्ञान बढ़ सकता है।" वस्तुतः दीनदयाल जी की कल्पना में लोक शिक्षा अभियान ही राष्ट्रोत्थान का सफल माध्यम थी।

श्रद्धाञ्जलि - पण्डित जी का पार्थिव शरीर तो चला गया परन्तु उनका वैचारिक और यशः शरीर आज भी हजारों पथिकों के हृदय में स्मृति मञ्जूषा के रूप में विद्यमान है। वे कर्मपथ के अविराम राही थे ऐसा लगता है कि अभी कुछ ही दिनों पहले तक वे हमारे साथ थे, आज हम सब उन्हीं के आदर्शों पर चलने का संकल्प लें, जिनको लेकर दीनदयाल जी समाज को नयी दिशा प्रदान कर रहे थे। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

“कभी भुला न पायें तुमको, जीवन का यह ध्येय हमारा,
मातृभूमि पावन चरणों में, सर्वस्व समर्पित जीवन सारा।
जिन आदर्शों को लेकर, तुम चले राह पर बनकर राही,
उन सब में है प्राण फूँकना, जीवन का संकल्प हमारा।।”

- आलोक चतुर्वेदी

एकादश 'ख'

हमारी गाँव यात्रा : एक संस्मरण

हमारे देश के विभिन्न गाँवों में रहने वाले नवयुवक नौकरी की तलाश में आज शहरों की ओर भाग रहे हैं। अरे! क्या रखा है शहरों में? सुनने के लिए शोरगुल और साँस लेने के लिए प्रदूषित वायु। शहर के ऐसे माहौल से, जहाँ निश्चित उम्र का पाँच फीसदी भाग खुदबखुद कम हो जाता है, उससे हरे-भरे गाँव बहुत अच्छे हैं। मुझ जैसे अनेक विद्यार्थी जिन्होंने शहर में ही जन्म लिया और बड़े हुए, उन्होंने गाँवों को कभी देखा तक नहीं। गाँव की प्राकृतिक सुन्दरता, वहाँ की शान्ति और भौगोलिक संरचना को देखने और उसका अध्ययन करने का सुनहरा अवसर हमें पण्डित दीन दयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय में आने के बाद प्राप्त हुआ। जब हमारे क्रीड़ा आचार्य श्री सुभाष जी ने हमारे सामने गाँव-भ्रमण का प्रस्ताव रखा। हम सभी छात्रों ने मिलकर आचार्य जी के इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार किया।

विद्यालय की संस्कृति के अनुसार हमने प्रस्थान करने से पहले अपने आराध्य पवनसुत हनुमान जी के दर्शन किये। हम दिनांक २३ नवम्बर, १९६६ को प्रातःकाल १० बजकर ४५ मिनट पर विद्यालय वाहन (बस) में बैठकर हनुमान जी का ध्यान करते हुए गाँव सदृश ख्योरा नामक स्थान की ओर चल पड़े। आचार्य श्री सुभाष जी मानचित्र बनवाकर लाए थे, जिसे सारे विद्यार्थियों में वितरित कर दिया गया। मार्ग में हम उसी मानचित्र से हर रास्ता, चौराहा, सड़क, गाँव, नगर, नहर, कस्बा आदि पहचानते रहे। मानचित्र के अनुसार हम बिठूर की ओर जाने वाले मैनावती मार्ग में मुड़ गए हम लगभग १० बजकर ५५ मिनट पर ख्योरा में स्थित जागेश्वर धाम पहुँचे। हमारे (छात्रों) साथ में श्री मयंक मणि जी, श्री सुभाष जी, बस कर्मचारी और चालक महोदय थे। हम सब ने जागेश्वर धाम में अविनाशी बाबा जागेश्वर के दर्शन किये। ख्योरा में ही थोड़ा आगे चलने पर हमें एक मिट्टी की चट्टान दिखी, जो पहाड़-सी प्रतीत हो रही थी। उस चट्टान पर हम लगभग ११:०७ बजे चढ़े। यह चढ़ाई खतरनाक भी हो सकती थी, क्योंकि मिट्टी के धसकने की सम्भावना थी, परन्तु अविनाशी भोले बाबा की कृपा से ऐसा कुछ नहीं हुआ। चढ़ाई चढ़ते समय कुञ्जानुसार हमारी फोटो हमारे साथी रीतेश अग्रवाल ने खींची। इस पहाड़ जैसी दिखने वाली चट्टान की चढ़ाई को हमने "करगिल की चढ़ाई" नाम दिया। उसी पहाड़ी पर हमने ऊपर पहुँचकर ११ बजकर ११ मिनट पर उजियारी देवी के दर्शन किये। उजियारी देवी के मन्दिर में हमने मूर्तियों के स्थान पर कुछ पत्थर देखे। इस विषय के बारे में हमने श्री सुभाष जी से पूछा। उन्होंने हमें संक्षिप्त जानकारी देते हुए कहा - "बच्चों! प्राचीन काल में मूर्तियाँ नहीं होती थीं। तब मन्दिरों में पत्थर रखकर उन्हें पूजा जाता था। इसलिए यहाँ पर भी पत्थर रखे हैं, जिन्हें पूजा जाता है।" वहाँ पर भी हमने अपने कुञ्जों के वेश में समूह में खड़े होकर अपने आचार्यों के साथ फोटो खिंचवाई। उस पहाड़ी से हम पैदल ही पंचमुखी हनुमान जी के दर्शन करने गए। अपने आराध्य हनुमान जी के दर्शन कर हमारा मन झंकृत हो उठा। वहाँ से हम सीधे अपनी बस में आ गए। बस ने ठीक १२ बजे वहाँ से प्रस्थान किया। अब हमारा अगला पड़ाव सिंहपुर गाँव था।

कटीली झाड़ियाँ, पेड़ों, खेतों, तालाबों और समूह में चरते जानवरों को देखते हुए हम अपना

सफर आनन्द से तय कर रहे थे। देखते ही देखते १२ बजकर १५ मिनट पर सिंहपुर पहुँच गए। वहाँ मेला लगा हुआ था। पूछने पर पता चला कि वहाँ प्रतिवर्ष मेला लगता है। कुछ अन्दर जाने पर श्री सुभाष जी ने हमें दो भागों में विभाजित कर दिया। सत्य व धैर्य कुञ्ज के छात्र आचार्य श्री सुभाष जी के साथ गए जबकि शक्ति और शौर्य कुञ्ज के छात्र आचार्य श्री मयंक मणि जी के साथ गए और हमने जनता से प्रश्न पूँछने का सिलसिला आरम्भ किया। हम जिस पहले परिवार से बातचीत करने अपने दल के साथ गए तो वहाँ पर उपस्थित महिलाएँ हमें देख आश्चर्य में पड़ गईं। हमने अपना परिचय दिया। हमने उनसे, उनके बारे में व्यक्तिगत रूप से बात की। आगे चलने पर सामने से बुजुर्ग आ रहे थे। हमने उनसे उस गाँव के विषय में कई प्रश्न पूछ डाले। हमने उनसे पूछा कि इस गाँव का नाम 'सिंहपुर' कैसे और क्यों पड़ा? उन्होंने बताना शुरू किया कि - "प्राचीन समय में यह गाँव और इसके आसपास के गाँव लगभग एक घने जंगल के समान थे। इस क्षेत्र में पड़ने वाले राज्य का राजा 'हिन्दू सिंह' था। वह शिकार खेलने का बड़ा शौकीन था। एक दिन वह शिकार करने इसी क्षेत्र में आया। यहाँ पर हिंसक जानवर भी बहुत अधिक संख्या में थे। वह राजा उस दिन सिर्फ शेर का ही शिकार करना चाहता था परन्तु काफी देर तक आसपास उसे कोई शेर नहीं दिखा। वह उतावला हो उठा। तभी उसे एक विशाल झाड़ी के पीछे एक शेर दिखा। हिन्दू सिंह ने तत्काल उसे ढेर कर दिया। उसका मन शिकार करके बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने प्रसन्न मन से इस क्षेत्र को एक जर्मीदार को दे दिया और नाम 'सिंहपुर' रख दिया।" साथ ही साथ उन्होंने ने हमें यह भी बताया कि बैकुण्ठपुर पड़ोस में है जो उस समय बीहड़ क्षेत्र के अन्तर्गत था। उन्हें धन्यवाद देकर कर हम आगे बढ़े। सामने से कुछ लोग आ रहे थे। हमने उनसे पूछा कि "आपके क्षेत्र में स्थित इन गाँवों को 'कछार' क्यों कहते हैं?" उन्होंने बताया कि "जितने गाँव या इलाके किसी नदी के कटरी क्षेत्र में पड़ते हैं, उन्हें 'कछार' कहा जाता है।" उन्होंने अतिरिक्त जानकारी देते हुए कहा कि - यहाँ के ज्यादातर लोगों की जीविका का साधन कृषि और मजदूरी है।" हमारे पास इतना समय ही नहीं था कि हम अब और प्रश्न पूछते। फिर भी हमें यहाँ के रहन-सहन के बारे में अनेक रोचक जानकारियाँ मिली। वैसे इस गाँव के लोग शर्मीले हैं, संकोची हैं। किसान दिन-भर अपने खेतों में कृषि कार्य करते हैं। यहाँ के लोग इस बात में कतई विश्वास नहीं रखते कि बच्चों के भविष्य को सुधारने के लिए उन्हें शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। यही कारण है कि यहाँ के ज्यादातर लोग अशिक्षित हैं। आगे चलने पर हमें उस गाँव का पंचायत घर दिखा और वहाँ पहले से ही पूछताछ कर रहे मयंक मणि जी भी अपने दल के साथ दिखाई दिए। कुल मिलाकर हमें यह पता चला कि गाँव में चार सरकारी स्कूल हैं तथा दो प्राइवेट स्कूल हैं। गाँव की आबादी लगभग २२,२५० है। यहाँ के लोग पालतू जानवरों में गाय और भैंस तथा कृषि कार्यों के लिए बैलों को रखते हैं। गाँव में शिक्षा सुचारु रूप से नहीं दी जाती है। सिंहपुर के ज्यादातर लोग हिन्दू धर्म के हैं और दुर्गा जी एवं हनुमान जी की उपासना करते हैं। विकासकार्य की कमी है। गाँव में विद्युत की व्यवस्था है तथा पक्की सड़क के स्थान पर खड़जा बिछा हुआ है। सिंहपुर के प्रधान का नाम श्री दुर्विजय सिंह चौहान है। बातचीत से पता चला वे अपने कार्यों से गाँववासियों को सन्तुष्ट नहीं कर पा रहे हैं। अब हमने निर्णय लिया आगे बढ़ने का। हमारे आचार्य श्री सुभाष

जी व हम थोड़ी देर के लिए भटक गए। फिर पूछ-ताछ करके हम मुख्य सड़क पर आए। अब हम बस में चढ़े और सिंहपुरवासियों से विदा ली।

योजना के अनुसार अब हमें ब्रह्मपुर पहुँचना था। मार्ग में ही हमने बैकुण्ठ-धाम के दर्शन किये और आगे बढ़े। सिंहपुर पहुँचकर हमारे आचार्य श्री सुभाष जी ने एक ऐसे स्थान को तलाशना प्रारम्भ किया, जहाँ शान्ति का माहौल हो और वह स्थान सुरक्षित भी हो। कुछ लोगों से पूछने पर हमें उस गाँव के प्राइमरी स्कूल का पता चला, जो गाँव के बाहर ही स्थित था। थोड़ी ही देर में हम उस प्राइमरी स्कूल तक पहुँच गए। वह स्थान सबको पसन्द आया और सभी ने दोपहर के भोजन के लिए उसी स्थान के प्रति सहमति जताई। हम सब अपना-अपना भोजन लाए थे। किन्तु आचार्य श्री सुभाष जी ने कहा - "कि अगर सब विद्यार्थियों का भोजन आपस में मिलकर खाया जाय, तो उसका मजा ही कुछ और होगा। सभी विद्यार्थियों को यह सुझाव पसन्द आया। हमारे सारे साथी अलग-अलग सब्जियाँ लाए थे, जैसे - कोई आलू की तो कोई आलू बैंगन की, कोई आलू गोभी की तो कोई घुड़ियाँ की। इस प्रकार हम सब्जियाँ तो अलग लाए थे, किन्तु उन सभी सब्जियों में एक विशेषता थी। वह विशेषता यह थी कि वे सूखी अर्थात् रस रहित सब्जियाँ थीं। सभी विद्यार्थी औसतन दस पूड़ियाँ लाए थे, केवल सब्जी ही नहीं। आचार्य श्री सुभाष जी ने तो छात्रावास की पूड़ियाँ, जिन्हें हमने उस समय 'अन्तर्राष्ट्रीय पूड़ियों' के नाम से पुकारा था और उन सारे विद्यार्थियों की पूड़ियाँ आपस में मिलाई गई, जो छात्रावास में नहीं रहते थे। मिठाई के डिब्बों में सबको भोजन वितरित किया गया और तो और श्री मयंकमणि जी ने छात्रावास का अचार वितरित करवाकर भोजन के स्वाद में चार-चाँद लगा दिये। हमारी कक्षा का एक विद्यार्थी मिठाई भी लाया था किन्तु स्वयं इस बात से अज्ञान था। फिर आचार्य जी ने थोड़ी-थोड़ी मिठाई सबको वितरित की। सभी बच्चों ने साथ-साथ पंक्ति में बैठकर खाया। आचार्य जी के कहने पर हम एक साथ उठे और हाथ-मुँह धोकर इधर-उधर टहलने लगे। हम विद्यार्थियों को खाना खिलाकर अन्त में आचार्य श्री सुभाष जी ने, मयंकमणि जी ने, चालक तथा परिचालक जी ने शीघ्र ही भोजन किया और उठे।

अब समय आ चला था अपने अन्तिम मोड़ पर। हमें शीघ्र ही विद्यालय पहुँचना था। तीव्रगति से बस का चालन करते हुए हमारे ड्राइवर ने हमें ठीक समय पर अर्थात् ३:४५ पर विद्यालय पहुँचा दिया। अपनी कक्षा में प्रवेश करते ही हमारे सामने अब वे क्षण तैरने लगे जो हम विद्यार्थियों के लिए अविस्मरणीय बन चुके थे।

वैसे तो हमारा विद्यालय समय-समय पर ऐसे कार्यक्रमों को आयोजित करता रहता है, किन्तु हम, कक्षा षष्ठ के नवप्रविष्ट विद्यार्थियों के लिए यह पहली और एक अविस्मरणीय यात्रा थी। वे आदर्श, जिन्होंने इस यात्रा की सुन्दरता में चार चाँद लगा दिए, कुछ इस प्रकार हैं - अपने विद्यालय से बाहर जाकर भी हम अपनी संस्कृति के अनुसार ही चलें। उदाहरण के लिए विद्यालय से प्रस्थान करते समय हमने हनुमान जी के दर्शन किये और भोजन करने से पहले हमने भोजन-मन्त्र भी किया। हमने ग्रामवासियों से प्रश्न पूछते समय अपने शिष्टाचार और धैर्य का परिचय दिया। आचार्यों ने सभी विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार किया। हमारे सहपाठी 'रीतेश अग्रवाल' ने सबकी फोटो खींचने में कोई भेद-भाव नहीं किया। हमारे आचार्य श्री सुभाष जी ने कुछ वृद्ध महिलाओं को बस

में बैठाया, जिन्हें कोई साधन नहीं मिल रहा था और उन्हें गन्तव्य तक छोड़ा। इस प्रकार हमें अपनी यात्रा में सहायता करने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। हमने आपस में मिलजुलकर सभी कार्य किए। इस प्रकार हमने अपनी इस यात्रा को 'आदर्श यात्रा' का नाम दिया।

आज उस यात्रा को बीते लगभग एक साल हो चुका है। फिर भी न जाने क्यों हमें विश्वास नहीं हो रहा कि इतना समय बीत चुका है। ऐसा लगता है कि अभी कल ही तो गाँव-भ्रमण के लिए बस में बैठकर गए थे।

- रवीन्द्र प्रताप सिंह

सप्तम - 'क'

'इन्सान' मेरा जग गया

जिन्दगी के द्वार पर दस्तक पड़ी जब मौत की नासमझ राही अजाना राह का घबरा गया, हड़बड़ाया, बड़बड़ाया और फिर सोचा कि, जाकर क्या कहूँगा उस समय जब कि पूछा जायेगा, "अब तक वहाँ पर क्या किया?" क्या लिया संसार से? संसार को क्या-क्या दिया?"

मौन हूँगा उस समय, जब कर्म होंगे सामने। और सोचूँगा कि, कितना छल किया इस 'काम' ने।

क्या वहाँ पर भी यहाँ वाले वही गद्ददार होंगे? या धुरन्धर, धीर, सच्चे भक्त या खुद्ददार होंगे।

यह सभी कुछ सोचकर, मैं अन्धतम में खो गया। मैं मनुज था, ज्ञान यह, संसार में सब धो गया।

ले कहाँ जाना था नौका, पर कहाँ पहुँचा दिया। मार्ग में अपने स्वयं ही, अन्धतम को छा दिया।

अब लगा ऐसा कि, मेरा आत्म ही सब मर गया। और अपना यह घड़ा, दुःख पाप जल से भर गया।

फिर जगा कुछ आत्म, बारम्बार यह कहने लगा। और बिस्तर से गिरा, फिर भूमि पर बहने लगा।

यह भयानक स्वप्न देखा, और मैं भी डर गया, जग गया, ऐसा लगा, इन्सान मेरा जग गया।

योगेश मिश्र

एकादश

दुर्घटना : एक संस्मरण

मैं दशम 'क' कक्षा का छात्र हूँ। मेरे घर से विद्यालय ४ - ५ किमी० दूर है। अतः मैं प्रतिदिन विद्यालय अपनी साइकिल द्वारा आता हूँ। मैं घर से निकलते समय ४० - ४५ मिनट का समय लेकर चलता हूँ। वैसे तो मुझे २०-२५ मिनट विद्यालय पहुँचने में लगते हैं परन्तु कुछ समय अतिरिक्त लेकर चलता हूँ। उस दिन भी मैं विद्यालय चला तो देखा कि मार्ग में दुर्घटना हो गयी है। उसी दुर्घटना का वर्णन मैं कर रहा हूँ।

उस दिन घर से निकलते समय मुझे थोड़ा सा विलम्ब हो गया था। मैं तेजी से साइकिल से चला जा रहा था। मैंने एक स्थान पर देखा कि बहुत भीड़ लगी हुई है। मुझे जिज्ञासा हुई कि आखिर क्या हुआ ? विलम्ब हो रहा था, विद्यालय भी समय से पहुँचना था। परन्तु जिज्ञासा एक ऐसा स्वभाव है कि जो शान्त न हो तो अधिक बढ़ जाता है। ऐसा मेरे साथ भी हुआ। मैं अपनी जिज्ञासा की शान्ति हेतु उस भीड़ के पास पहुँचा। जैसे ही समीप पहुँचा तो सुनने को मिला कि एक अज्ञात व्यक्ति की अभी - अभी ट्रैक्टर से कुचलकर मृत्यु हो गयी है। सुनने को तो सब घटनायें एक सी लगती हैं तथा हमें उसकी भयावहता का ज्ञान न के बराबर होता है। जब मैंने दुर्घटना का दृश्य देखा तो शरीर काँप-सा गया। उस व्यक्ति के सिर से पूरा ट्रैक्टर निकल गया जो ६०-७० गेहूँ की बोरियों से लदा हुआ था। उसके सिर के लोथड़े दूर-दूर तक छितरे पड़े थे।

इस सब के दौरान मुझे भीड़ में से बहुत आवाजें सुनाई पड़ीं। एक बूढ़े व्यक्ति ने कहा - "यह तो रोज का हाल है। यातायात व्यवस्था चरमरा सी गई है। पुलिस वाले पैसे खाकर टैम्पो आदि वाहनों को यातायात नियमों के उल्लंघन की पूरी छूट दे देते हैं।" उस बूढ़े व्यक्ति की आवाज़ में समाज की दुर्व्यवस्थाओं के प्रति रोष था। एक स्त्री ने करुण स्वर में कहा - "हाय ! मरने वाला शायद अपने घर का सबसे छोटा होगा या अपने घर का अकेला कमाऊ पूत होगा। अब उसके परिवार वालों का भरण-पोषण कैसे होगा! उम्र भी कोई ज्यादा नहीं लग रही है। कच्ची गृहस्थी को छोड़ कर चला गया।" तभी पास खड़े कुछ उत्तेजित युवकों ने कहा - "जो हुआ सो हुआ अब ऐसे काम नहीं चलेगा। चलो जाम लगाकर वाहनों में आगज़नी व तोड़-फोड़ करते हैं। अगर फिर भी पुलिस वाले नहीं मानें तो थाने का घेराव किया जाएगा।" तभी एक अन्य व्यक्ति ने, जो पास ही खड़ा था कहा - "यह तो मर गया परन्तु अब इसके शव की दुर्दशा हो जाएगी। अभी पुलिस वाले आयेंगे व लाश का पञ्चनामा करके पोस्टमार्टम के लिए भेजेंगे पुलिस अधिकारी जनता को आश्वस्त करेंगे व केस को फाइल में बन्द कर के ठण्डे बस्ते में डाल देंगे।"

तभी मेरे अन्तःकरण में विचार आया कि ये लोग ठीक ही कह रहे हैं। बेचारे मरने वाले के परिवार वालों का क्या होगा ? आखिरकार इसके शव का पोस्टमार्टम कराने का क्या औचित्य है ? पुलिस वालों को इसके शव की और दुर्दशा करने का क्या अधिकार है ? अगर यहीं किसी

धनवान व्यक्ति की दुर्घटना होती तो मज़मा सा लग जाता। नेता व प्रशासनिक अधिकारी अवश्य आते, मुआवज़े की घोषणा करते व बुरी व्यवस्था का रोना रो कर चले जाते। नेता, व्यक्ति की लाश पर भी राजनैतिक रोटियाँ सेंकना न भूलते, कहते कि यदि हमारी सरकार होती तो ऐसा कभी न होता। अतः आप लोग हमें ही वोट दीजियेगा। मुझे उस बूढ़े व्यक्ति की बात ठीक लगी। टैम्पो वाले अधिकतर दुर्घटनाओं के जिम्मेदार हैं। अपने घर का आँगन समझकर यातायात नियमों का उल्लंघन करके टैम्पो चलाते हैं। मना करने पर कहते हैं कि हम अपनी मर्जी से टैम्पो चलायेंगे। हमने सिपाही से ले कर मन्त्री तक को रुपया दिया है। अब प्रत्येक व्यक्ति को घर से बाहर निकलने से पहले सोचना ही पड़ेगा कि कहीं यह उसका आखिरी कदम तो नहीं है ?

मैंने सोचा कि जिस देश के कर्णधार राजनेताओं व प्रशासनिक अधिकारियों के साथ-साथ जनता स्वयं दोषी हो तो उस देश का क्या होगा? जनता चुनावों में लालच में आकर गलत व्यक्तियों को जिताकर उन्हें संसद व विधानसभाओं में भेजती है। मुझे लगता है कि यह लोकोक्ति शायद हमारे देश के लिए ही बनाई गई है -

हर शाख पे उल्लू बैठा है, अंजाम-ए-गुलिस्ताँ क्या होगा?

बर्बाद गुलिस्ताँ करने को, बस एक ही उल्लू काफी है।।

ऐसे ही विचार मेरे अन्तःकरण में उमड़ते-धुमड़ते रहे। मैं उस दिन विद्यालय नहीं गया और पूरे दिन परेशान-सा रहा। मैंने मन एकाग्र करके पढ़ने की कोशिश की परन्तु ऐसा नहीं कर पाया। उस दुर्घटना के दृश्य व वहाँ की भीड़ का सम्वाद सब मेरे सामने बार-बार आ रहे थे। मैंने सोचा कि क्या उस दुर्घटना से निपटने का कोई उपाय नहीं है। तो मेरी समझ में आया कि भीड़ इकट्ठी करने से कुछ नहीं होगा वह बस रोना ही रो सकती है। भीड़ को सही दिशा देने के लिए सशक्त व बुद्धिमान व्यक्तित्व की आवश्यकता होगी। अतः हमें ऐसे व्यक्तित्व को खोजना चाहिए जो सफल नेतृत्व कर सके तथा यह नेतृत्व कहीं बाहर से नहीं आयेंगे और न ही अवतार लेंगे। हमें इनको अपने बीच से ढूँढ़कर पैदा करना होगा। तभी हमारे समाज का, हमारा और हमारे देश का विकास सम्भव है।

- चन्द्रेश श्रीवास्तव

दशम 'क'

धर्म राजनीति का पोषक मात्र नहीं है, अपितु उसी के पावन सिद्धान्तों पर राजनीति शास्त्र का निर्माण हुआ है। धर्म ही राजनीति शास्त्र की आधारशिला है, उसके बिना राजनीति-शास्त्र का कोई अस्तित्व ही नहीं है।

भारतीय बाजार चीनी ड्रैगन की चपेट में

सन् १९६२ में चीन ने भारत पर आक्रमण किया और भीषण युद्ध हुआ था। कारण था घुसपैठ, परन्तु आज चीन की यह घुसपैठ गली-मुहल्लों के बाजारों तक फैली है तथा हम अभी भी बेखबर हैं।

व्यावहारिक जीवन में देखने को आता है कि चाशनी में लिपटी कड़वी कुनैन के खाने पर रोगी रोग-मुक्त हो जाता है परन्तु आज 'विदेशी' की चाशनी में लिपटी कड़वी कुनैन को हमारे बाजार निगलते जा रहे हैं, परन्तु वे रोग-मुक्त होने के बजाय और अधिक रोग-ग्रस्त होते जा रहे हैं।

आज, चीनी-सीमा को छूने वाले प्रदेशों की तो बात ही क्या? सीमान्त प्रदेशों में भी चीनी सामान की भरमार है। यह सामान अत्यन्त सस्ते मूल्य पर मिलता है। छोटे-बड़े हथियारों से लेकर वॉकमैन, ट्रॉजिस्टर, बैटरी, सेल, खिलौने, ताले, साइकिलें आदि अत्यन्त सस्ते मूल्य पर उपलब्ध हैं। इन सामानों को पलट कर देखिये, छपा मिलेगा, 'मेड इन चाइना'।

भारतीय उपभोक्ता आज 'सस्ते' के लालच में घटिया चीनी सामान पर टूट पड़े हैं। इस सस्ते चीनी माल के भारतीय बाजार पर आक्रमण पर चिन्ता जताते हुए 'भारतीय वाणिज्य व उद्योग महासंघ (फिक्क)' ने कहा है - "चीन की सरकार ने इस घटिया किस्म के चीनी माल को अनेक सब्सिडी देकर सस्ता बना दिया है तथा यह नेपाल के रास्ते से भारत में आ रहा है। इससे भारतीय उद्योग को भारी नुकसान हो रहा है।"

साइकिल उद्योग, खिलौना उद्योग, ताला उद्योग विशेषतः इस चीनी ड्रैगन से प्रभावित हुए हैं। भारतीय बाजार में चीन के इस रोमाञ्चकारी तहलके से भारतीय सरकार भी चौंक गई है।

आश्चर्यजनक बात तो यह है कि जो सामान स्वयं चीन में महँगा है, वही सामान भारत में सस्ता है। ऐसा क्यों? इसका कारण है कि चीनी सामान घटिया किस्म का है। भारतीय सेल जो लगभग ७ रुपये का भारतीय मूल्य पर मिलता है, २-३ घण्टे चलता है, जबकि १.५ - २ रुपये में मिलने वाला चीनी सेल ३०-३५ मिनट में ही दम तोड़ देता है।

झोक्ुंग, अरुणांचल प्रदेश का एक प्रसिद्ध नगर है। जिसकी सीमा चीनी सीमा को छूती है। यहाँ पर पूँछताछ करने पर कई वस्तुओं का मूल्य बाजार में उपस्थित वस्तुओं के आधे से भी कम निकला।

यह सब देखकर स्पष्टतः कहा जा सकता है कि चीन 'भारत-नेपाल व्यापार समझौता' का अनुचित लाभ उठा रहा है। आइये अब डालें नज़र दीपावली पर बिकने वाले कुछ चीनी सामानों के भाव पर -

८ रु० में

६० चीनी पटाखों का पैकेट

१५ रु० में

१ घड़ी

२५ रु० में	१ कैलकुलेटर
४०० रु० में	१ साइकिल
१.५-२ रु० में	सेल

इसके अतिरिक्त, चीन द्वारा निर्यात किये गए इन सामानों पर न तो वस्तु के फुटकर मूल्य अंकित होते हैं और न ही उत्पादक का नाम व पता। जो निर्यात का एक आवश्यक नियम है। भारतीय कम्पनियाँ इस नियम का पालन कर रही हैं।

आबकारी विभाग के सूत्रों के अनुसार, “इस समय तस्करी के माध्यम से सर्वाधिक सामान चीन से काठमाण्डू स्थित निर्यातकों द्वारा नेपाल के रास्ते भारत आ रहा है। अतः यह सामान इतना सस्ता है कि उपभोक्ता भारतीय-वस्तुओं पर हाथ तक नहीं रखता है।”

वास्तव में यह समस्या अत्यन्त भयानक है। भारत को समय रहते इस पर विचार कर इसका हल निकालना होगा अन्यथा यह समस्या बिना समाधान के अत्यन्त विकराल रूप धारण कर लेगी।

उपर्युक्त सभी विवरणों से निष्कर्ष निकलता है कि चीन से आने वाला सामान भारत के सामान की अपेक्षा गुणवत्ता की कसौटी पर खरा नहीं उतरता, इसीलिये सस्ता है। इस सन्दर्भ में एक उक्ति है -

“महँगा रोये एक बार, सस्ता रोये बार-बार”

अतएव, हमें सोचना है कि हम क्या खरीदें? स्वदेशी या विदेशी! भारतीय या चीनी!

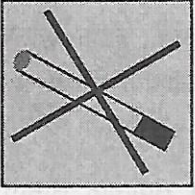
कुशाग्र द्विवेदी
दशम - 'ख'



ज्ञान के दीपक को जलाने के लिये श्रद्धा
के घृत की आवश्यकता होती है।



बहुत घातक है धूम्रपान



अमेरिका के एक सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉ० केलग ने एक सिगरेट लिया और उसकी सारी निकोटीन निकाल ली और उसे पानी में घोलकर एक तरल बनाया. तथा एक मोटे ताजे मेढक को लेकर तरल पदार्थ की आधी मात्रा सुई के द्वारा उसके शरीर में प्रविष्ट करा दी। इधर उसने सुई से तरल पदार्थ प्रविष्ट किया और उधर मेढक ने दम तोड़ दिया। शेष तरल पदार्थ को केलग ने दूसरे मेढक में प्रविष्ट किया। इस मेढक का भी वही हाल हुआ। इससे क्या निष्कर्ष निकला?

यही न, कि एक सिगरेट के अन्दर इतना विष होता है जो दो मेढकों को मार डालने के लिए काफी है। जो नवयुवक दिन भर में पाँच सिगरेट पी जाता है वह इतना विष खा जाता है जो दस मेढकों को मारने के लिए काफी है। फिर क्या कारण है कि विष उस नवयुवक पर कोई प्रभाव नहीं डालता है।

वह ज्यों का त्यों जीवित रहता है? वस्तुतः बात यह नहीं है कि विष असर नहीं करता, वह अवश्य प्रभाव डालता है किन्तु वह प्रभाव बहुत मन्द होता है। जहर का काम मार डालना है वह नवयुवक को मारेगा किन्तु धीरे-धीरे, एकदम नहीं। वह मरेगा तो हृदय - गति बन्द होने से या गुर्दे की बीमारी से या किसी और रोग से जिसका वास्तविक कारण हर जाति, हर देश का डॉक्टर निकोटीन का विष खाने की पुरानी आदत बताएगा। स्वास्थ्य मानव की सफलता की सबसे बड़ी पूँजी है। जो व्यक्ति उसे नष्ट करेगा वह अपने जीवन से हाथ धोएगा। यदि एक व्यक्ति को किसी वस्तु का चस्का लग जाता है तो वह अपनी आदतों का इतना दास हो जाता है कि अपने को हानि पहुँचाता है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि वह अपने ही साथ शत्रुता करता है। उसे इसका तनिक ध्यान नहीं है कि यदि उसमें यह बुरी आदत न होती तो वह बहुत सफल मनुष्य बन सकता था।

जो वस्तु इंसान का चेतनत्व भ्रमित कर दे, अन्धा कर दे, शारीरिक तथा मानसिक अवयवों को क्षीण कर दे, और इंसान की योग्यता तथा सामर्थ्य का अन्त कर दे तो उससे बढ़कर आपका कोई कट्टर शत्रु नहीं और इन वस्तुओं में सिगरेट सबसे बढ़कर है। वह नवयुवक जिसे परमात्मा ने अमर शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान किया है वह इस भयानक शत्रु के भयानक पंजे में गिरफ्तार है। इसलिए वह भी बहुधा दुर्बलता का अनुभव करता है, गिर-गिर पड़ता है। उसका सर्वस्व जाता रहता है। क्या आप अनुभव नहीं करते कि यह कितनी दुखद बात है।

सोमकान्त मिश्र

नवम - 'क'

(प्रदेशीय श्री सम्पूर्णानन्द वाद-विवाद प्रतियोगिता के राज्य स्तरीय आयोजन में विद्यालय के छात्र चि० अभिषेक अग्निहोत्री द्वारा जिला मिर्जापुर के राजकीय इण्टर कालेज के सभागार में विषय के विपक्ष के तर्क।)

“सूचना प्रौद्योगिकी राष्ट्र के विकास के लिए अपरिहार्य है।”

अध्यक्ष महोदय “सूचना प्रौद्योगिकी राष्ट्र के विकास के लिए अपरिहार्य है।” सुनने में ये वाक्यांश जितना ही प्रभावी और मोहक है। समझने में उतना ही दुरूह और व्यवहार में भयावह। भयावह यदि न भी कहें तो उलझाव भरा अवश्य है। हमारे साथी, शायद आश्चर्यचकित हो रहे होंगे कि जो बात देश और दुनिया निर्विवाद स्वीकार चुकी है, उसके विरोध में यह अपना स्वर अलापने क्यों आया है? महोदय, हमारा देश एक ऐसी संस्कृति का ध्वजवाहक है, जिसने परिवार की कल्पना की है, बाजार की नहीं। आज दुनिया बाजार की तरफ बढ़ रही है, परिवार मर रहा है और इसी कारण खाने-पीने की वस्तुओं से लेकर दैनिक व्यवहार और व्यवस्थाओं के लिए जाने कितने पदार्थ तैयार हो गए हैं। जो हमारे मस्तिष्क को पंगु, भावनाओं को कुण्ठित और शरीर को असहाय बनाने में लगातार सक्रिय हैं। हमारे देश की पहचान चरक, सुश्रुत, वराहमिहिर और भास्कराचार्य से है। सम्पूर्ण वैश्विक समाज को आर्य बनाने का संकल्प और कुटुम्ब रूप समझने की दृष्टि हमारे इन्हीं द्रष्टा ऋषियों की देन है। यह आत्मज्ञ देश आत्मा और शरीर, सृष्टि और स्रष्टा का भेद भली प्रकार से जान सका क्योंकि इसने पद और पदार्थ दोनों के अस्तित्व और उसकी उपयोगिता का मूल्यांकन भी कर लिया था। सुसम्पन्न और सक्षम होते हुए भी अमर्यादित उपभोग हमने कभी नहीं स्वीकारा। महोदय, इसके विपरीत आज हम यह देख रहे हैं कि ज्ञान अन्धा होकर सुविधा के चरणों में समर्पित हो गया है। आत्मा शरीर की दासी है। शरीर ही शरीर का आभास दिलाने लगा है और शायद इसीलिए हम सूचना प्रौद्योगिकी जैसे अपने ही जड़ आविष्कार के दास बनते चले जा रहे हैं, जो अनेक संघातक रोग और समस्याएं लेकर आज नहीं तो कल हमारा मखौल उड़ाने के लिए तैयार है। आपमें से अधिकांश लोगों ने यह सुना होगा कि सेल फोन का इस्तेमाल करने से कैंसर होने की सम्भावना बढ़ जाती है। कम्प्यूटर स्क्रीन के सामने घण्टों बैठने के दुष्परिणाम भी अब धीरे-धीरे सामने आ रहे हैं। इसके शारीरिक कुप्रभावों के विस्तार में मैं जाना नहीं चाहता। इन सब के विषय में पत्र-पत्रिकाओं में आपको काफी पढ़ने को मिल रहा है, किन्तु इससे होने वाले दूरगामी दुष्प्रभाव हम लोगों के लिए अधिक चिन्ताजनक हैं। आज इण्टरनेट पर संसार के सभी बड़े-बड़े प्रतिष्ठान अपना माल बेचने की होड़ में लगे हुए हैं। इस होड़ में भद्र-अभद्र का विवेक लगभग शून्य हो गया है। पश्चिमी देशों की उपभोक्तावादी संस्कृति इण्टरनेट के माध्यम से बेरोकटोक इस देश में घुसती जा रही है। यदि आपको इसके प्रभाव देखने हो तो बंगलौर चले जाइए। जो शहर भारत की सूचना प्रौद्योगिकी का काबा है। यहाँ युवक-युवतियों के लिए साथ बैठकर शराब पिलाने के लिए ‘पब’ बन रहे हैं। महोदय, यह विलायत की नकल, हमको किस स्तर पर पहुँचा देगी, यह

हमारे नौजवान साथियों का सदन स्वयं विचार करे.....।

ऐसा क्यों हो रहा है? क्योंकि हम सूचना प्रौद्योगिकी को साधन नहीं साध्य मानने लगे हैं। हमने सूचना प्रौद्योगिकी इसलिए अपनायी क्योंकि इससे हमें कुछ डॉलर मिलते हैं और हमने समझ लिया कि इस विदेशी मुद्रा से हमारी जन समस्याओं का समाधान हो जाएगा। हमारे पास विदेशी मुद्रा तो आयी, लेकिन अपने साथ ले आयी वहाँ की संस्कृति। यह प्रश्न हमारे दृष्टिकोण का है। यदि आप विश्व एवं अपने देश को एक बाजार समझते हैं तो सूचना प्रौद्योगिकी राष्ट्र के विकास के लिए अपरिहार्य है, इस विषय पर कोई विवाद होने की सम्भावना ही नहीं है और शायद मैं इसके विरोध में बोलकर आप सभी का समय नष्ट न करता। परन्तु यदि हम अपने “वसुधैव कुटुम्बकम्” के सिद्धान्त पर चलें तो हम पाएंगे कि सूचना प्रौद्योगिकी राष्ट्र के विकास में सहायक तो हो सकती है, अपरिहार्य कदापि नहीं। यदि हम इसका उपयोग मात्र आर्थिक आधार पर करते हैं तो यह कुछ लोगों को तो अत्यधिक सक्षम बनाएगी और अधिकांश को परावलम्बी किंवा परमुखापेक्षी बना देगी। विकास तो समाज का तब होगा जब सब लोग कर्मशील हों और कर्म वही प्रभावी और सफल कहा जाता है जब शरीर, मन, बुद्धि सब समानुपातिक रूप से एक दूसरे के पूरक रहें। आज कम्प्यूटर लगभग सभी क्षेत्रों में प्रवेश कर गया है। बड़ी-बड़ी सूचनाएँ जो हम अपने स्मृति पटल पर अंकित करते थे, हाथ से उन्हें लिखते थे। आज कम्प्यूटर की बटन दबाते ही वे सारी की सारी हस्तामलकवत् हो जाती हैं। न उसमें शरीर का श्रम है और न ही मस्तिष्क का प्रयास। जो मशीन प्रयोग में नहीं आती उसमें जंग लग जाती है। उसी प्रकार जब मस्तिष्क से कोई काम नहीं लिया जाएगा तो क्या बड़े-बड़े मनुष्यों और बुद्धजीवियों का मस्तिष्क शिथिल और निष्क्रिय नहीं हो जाएगा फिर वो अपार मेधा और स्मरण शक्ति कहाँ से आएगी जिसके कारण ऋषियों, मुनियों और मनीषियों की सम्पूर्ण विद्या रसनाग्रनर्तकी रहती थी। वेदों का, उपनिषदों का महाभारत और रामायण जैसे इतिहास ग्रन्थों का अपार भण्डार मनीषियों के कण्ठ से निःसृत होता था। सूचना प्रौद्योगिकी का परिणाम यह होगा कि आगे आने वाली पीढ़ी देश में प्रचलित मौखिक गणनाओं का आधार गिनती और पहाड़ा भी पूरी तरह विस्मृत कर जायेगी।

“सुविधाओं की डोर गले में बँधी चेतना बदहवास है।

शायद यह जागृत विवेक का मृत्युपाश है।”

और उस भयावह स्थिति की कल्पना करते ही शरीर में सिहरन हो उठती है जब ये ध्यान में आता है कि कहीं ये सूचना प्रौद्योगिकी सार्वभौम वायरस के कारण समाप्त हो गयी, उस समय सारे साधन स्तब्ध हो जायेंगे। संसार का प्रत्येक राष्ट्र और समाज अलग-थलग पड़ जाएगा और कम्प्यूटर में भरी अपार सूचनाएँ सदा के लिए समाप्त हो जायेंगी। उन रक्षा सामग्री निर्माण करने वाली आण्विक भट्टियों का क्या होगा? जो मात्र सूचना प्रौद्योगिकी के आधार पर संचालित होती हैं? ये सब विचार करते ही महाविनाश का दृश्य उपस्थित हो जाता है। अभी हम Y2K की समस्या से हाल ही में निपटे हैं ऐसी स्थितियाँ क्या दुबारा उत्पन्न नहीं हो सकती हैं?

महोदय, पश्चिमी चिन्तन वासनाओं को उद्दाम बनाकर उनको शमित करना ही अपनी जिन्दगी का सिद्धान्त मानता है। इसके विपरीत भारतीय संस्कृति का चिन्तन कामनाओं को वासनाओं की

ओर न ले जाकर उन्हें भावनाओं में परिवर्तित कर जीवन को ऊर्ध्वमुखी बनाता है। हम नर से नारायण तक की यात्रा को अपना जीवन लक्ष्य बनाकर चलते हैं। इसी कारण हम भौतिक अभावों में भी शान्त और निश्चिन्त रहते हैं और वे भौतिक प्रभाव की पराकाष्ठाओं को पाकर भी व्यग्र और चिन्तित....।

महोदय, हो सकता है कुतर्कों की कैंची हमारे इस अन्तिम कथन को यह कहकर कतरने का प्रयास करे कि इस अत्याधुनिक प्रकरण में अध्यात्म जैसी पुरातनता की चर्चा क्यों की जा रही है। महोदय, हम उस मानसिकता को यह कहकर सचेत करना चाहते हैं कि अध्यात्म के चिन्तन और उस पर आधारित क्रियान्वयन के बिना इस संसार का हर पदार्थ और परिणाम व्यर्थ है, निरर्थक है, और इसलिये मैं अपनी पूरी आत्मिक शक्ति के साथ अपने इन भ्रमित भाइयों को आगाह करना चाहता हूँ कि ये साइबर कैफे ये इण्टरनेटिंग संजाल और यह उच्चतम क्षमता सम्पन्न संचार व्यवस्था और अनेक प्रकार के मोहक किन्तु मारक किरणों पर सवार वैद्युत संचार प्रणाली हमको सुरसा की भाँति निगलने के लिये आतुर है। परिस्थिति को पहचानें, भयंकरता से बचें और यन्त्र को यन्त्र रहने दें। मन्त्र न बनाये।

अभिषेक अग्निहोत्री

एकात्मवाद

भारतीय संस्कृति एकात्मवादी है। सृष्टि की विभिन्न सत्ताओं तथा जीवन के विभिन्न अंगों के दृश्य-भेद स्वीकार करते हुए वह उनके अन्तर में एकता की खोज कर उनमें समन्वय की स्थापना करती है। परस्पर विरोध और संघर्ष के स्थान पर वह परस्परावलम्बन्, पूरकता, अनुकूलता और सहयोग के आधार पर सृष्टि की क्रियाओं का विचार करती है। वह एकांगी न होकर सर्वांगीण है। उसका दृष्टिकोण साम्प्रदायिक अथवा रंगवादी न होकर सर्वात्मवादी एवं सर्वोत्कर्षवादी है। एकात्मकता उसकी धुरी है।

लहू से लथपथ कश्मीर

यद्यपि जम्मू कश्मीर में आतंकवादियों द्वारा हुई हालिया क्रूरतम घटनाओं ने घाटी का दिल दहला दिया है। लेकिन घाटी में ऐसी आतंकी हरकतों का सिलसिला काफी पुराना है। अब तक हुए नरसंहारों का विवरण निम्नलिखित है :-

- १३-१४ अगस्त, १९९३ डोडा जिले के किश्तवाड़ा कस्बे में सरथल-किश्तवाड़ा मार्ग पर यात्री बस से उतारकर १७ हिन्दुओं की हत्या।
- ५ जनवरी, १९९६ डोडा के बरशाला में १६ हिन्दुओं की हत्या।
- १२ जनवरी, १९९६ डोडा के भद्रवाह में ७ हिन्दुओं की हत्या।
- ७-८ जून, १९९६ डोडा के कलगाड़ी गाँव में ८ हिन्दुओं की हत्या।
- २५-२६ जनवरी १९९७ गन्दरबल के बंधावा में २५ कश्मीरी पण्डितों की हत्या।
- ७ अप्रैल, १९९७ संग्रामपुरा में ७ हिन्दुओं (कश्मीरी पण्डितों) की निर्मम हत्या।
- १५ जून, १९९७ ऊधमपुर के गूल क्षेत्र में ३ हिन्दुओं (कश्मीरी पण्डितों) की हत्या।
- २४ सितम्बर, १९९७ राजौरी जिले के सवारी में ८ हिन्दुओं की हत्या।
- २६ जनवरी, १९९८ गन्दरबल के वंदमाहा गाँव में २३ (कश्मीरी पण्डितों) की हत्या।
- ३० जनवरी १९९८ डोडा की नवापासी गाँव में ७ हिन्दुओं की हत्या।
- १७ अप्रैल, १९९८ ऊधमपुर के प्राणकोट व ढाकाकोट में २९ लोगों की जघन्य हत्या।
- ५ मई, १९९८ पुंछ के सूनरकोट में ५ हिन्दुओं की हत्या।
- ६ मई, १९९८ डोडा के देस्सा गाँव में ११ हिन्दुओं की हत्या।
- १९ जून, १९९८ डोडा केचंपनारी में २९ हिन्दुओं की हत्या।
- २७ जुलाई, १९९८ डोडा के किश्तवाड़ा के हिन्ना, ठकुराई व श्रवण गाँवों में २० हिन्दुओं को मार डाला।
- ४ अगस्त, १९९८ पुंछ के बफलियाज क्षेत्र में २१ लोगों को मार डाला।
- १३ फरवरी, १९९९ इस दिन तीन वारदातें हुई राजौरा के बल-चराल गाँव में ९ हिन्दुओं, मुरापट्टा गाँव में ४ हिन्दुओं, कालकोट के बनियार में १० हिन्दुओं की हत्या।
- २० जून, १९९९ अनन्तनाग में १५ हिन्दू श्रमिकों की हत्या।
- २८ जून, १९९९ पुंछ के सूनरकोट में १७ हिन्दुओं की हत्या।

१ जुलाई, १९६६	मेंढर के आड़ी गाँव में ६ हिन्दुओं की हत्या।
४ फरवरी, २०००	कश्मीर के तेलवानी में ३ हिन्दुओं की हत्या।
१०, फरवरी २०००	कश्मीर के पट्टन में ७ लोगों की हत्या।
२८ फरवरी, २०००	पुंछ के मेंढर में ५ हिन्दुओं की हत्या।
२६ फरवरी, २०००	काजीगुंड में ५ सिख ट्रक चालकों की हत्या।
२० मार्च, २०००	कश्मीर के छत्तीसपुरा में ३६ सिखों की हत्या।
१ अगस्त, २०००	पहलगाम में २६ अमरनाथ यात्रियों सहित ३२ की हत्या।
२ अगस्त, २०००	इस दिन छह जघन्य वारदातें हुईं। बनिहाल कस्बे के पांगल में १२ हिन्दू, महिग्राम में हिन्दू, मारवाह ग्राम में ८ लोगों, कुपवाड़ा में ७ मुस्लिमों, अनन्तनाग में ८ श्रमिकों व काजीगुंड में १६ श्रमिकों की हत्या।

यह नरसंहार कब और कैसे रुकेगा? यह हम सभी को सोचना होगा

प्रतीक पाण्डेय

सप्तम - 'ख'

उक्ति

“सभी प्राचीन जातियों के पौराणिक ग्रन्थों में, उनके वीरों की गाथाओं में यह देखा जात है कि उनका प्राण उनके शरीर के किसी विशेष छोटे से अंश में आबद्ध था, और जब तक उनका वह अंश अस्पर्शित रहा, तब तक वे अजेय रहे। इसी प्रकार प्रतीत होता है कि मानो प्रत्येक जाति में किसी विशेष स्थान में उसकी जीवनशक्ति सञ्चित रहती है, और जब तक वह स्थान अक्षुण्ण बना रहेगा, तब तक किसी प्रकार का दुःख या विपत्ति उस जाति का विनाश नहीं कर सकती।

धर्म ही है भारत की यह जीवनशक्ति और जब तक हिन्दू जाति अपने पूर्वजों से प्राप्त उत्तराधिकार को नहीं भूलेगी, तब तक संसार में कोई शक्ति नहीं है, जो उसे ध्वस्त कर सके।

- स्वामी विवेकानन्द

वृक्ष और कुल्हाड़ी

धारदार कुल्हाड़ी ने एक विशाल हरे वृक्ष से कहा - “वृक्ष मैं तुम्हें पल भर में नष्ट कर सकती हूँ।” वृक्ष झूम कर जोर से हँसा और फिर चुप हो गया।

कुल्हाड़ी कुढ़ गयी। उससे रहा न गया। वह पराजय का अनुभव कर रही थी।

उसने पुनः कहा - “तुमने मेरी ताकत की हँसी उड़ाई है। इसका परिणाम तुम्हें अवश्य भुगतना पड़ेगा।” कुल्हाड़ी की भाव-भंगिमा देख वृक्ष कुछ नहीं बोला। वह धीर-गम्भीर हो गया। चुप-शान्त हो गया। पर क्रोधी कुल्हाड़ी चुप न रह सकी। उसने उठकर पूरी शक्ति लगाकर वृक्ष पर एक प्रबल प्रहार किया। प्रहार से कुल्हाड़ी की बेंत टूटकर अलग जा गिरी।

“तुम्हारी बेंत तो मेरी ही लकड़ी की बनी हुई थी। वह तो टूटकर अलग हो गई”, शान्त भाव से वृक्ष ने नीचे देखकर कहा।

वृक्ष ने पुनः कहा - “पुत्री कल मेरी एक डाल काट कर अपनी नई बेंत लगवा लेना। तब तुम पुनः आना और मुझे अपनी इच्छानुसार नष्ट कर देना।” कुल्हाड़ी को अपनी भूल का एहसास हो गया था। वह एक ओर पड़ी पश्चाताप के आँसू बहा रही थी।

गौरव मिश्र

नवम 'क'

आतंकवाद के साये में : अमरनाथ यात्रा

“सैर कर दुनिया की गालिफ़, ज़िन्दगानी फिर कहाँ।

ज़िन्दगानी गर रहीं तो नौजवानी फिर कहाँ।।”

‘अमरनाथ यात्रा’ एक ऐसी तीर्थ यात्रा है जो प्रत्येक वर्ष रक्षावन्धन के दिन ही पूरी होती है। इस दिन हजारों की संख्या में तीर्थयात्री अमरनाथ की गुफा में भगवान शिव के दर्शन के लिए एकत्रित होते हैं। यह गुफा श्रीनगर तथा जम्मू से क्रमशः 980 तथा 326 किमी० की दूरी पर और समुद्रतल से 93500 फुट की ऊँचाई पर स्थित है। कुछ लोग अमरनाथ यात्रा को मोक्ष प्राप्ति का साधन बताते हैं तो कुछ लोग स्वर्ग प्राप्ति का। अमरनाथ के नाम से प्रसिद्ध भगवान शिव के दर्शनमात्र से मन को शान्ति मिलती है। इतनी लम्बी यात्रा तय कर अनेक बाधाओं को पार करते हुए जो यात्री अमरनाथ गुफा के भीतर स्थित हिमलिंग का दर्शन करता है, वह अपने आप को धन्य मानता है।

9 अगस्त, 2000 के दिन पाक समर्थित कुख्यात आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तोइबा के आतंकियों ने पहलगाम में एक शिविर पर धावा बोलकर 26 अमरनाथ यात्रियों को मौत के घाट

उतार दिया। इस हमले में लगभग ४० लोग घायल हो गये। जब ये लोग शिविर में भोजन कर रहे थे, तभी आतंकवादियों ने आक्रमण करके अन्धाधुन्ध फायरिंग शुरू कर दी जिससे २६ यात्रियों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया।

अमरनाथ यात्रा की शुरुआत पहले श्रीनगर से होती थी परन्तु आतंकवाद की काली छाया पड़ने के बाद से यात्रा की शुरुआत जम्मू से की जाने लगी है। यह माना जाता है कि पहलगाम से पवित्र गुफा तक का मार्ग संसार की सुन्दरतम पर्वतमालाओं का मार्ग है। पहलगाम में पहले ठहरने के लिए होटल व आरामगाह होते थे परन्तु आज आतंकवाद सब कुछ लील गया है।

अमरनाथ गुफा में हिमलिंग के दर्शनों के समय सारी कश्मीर घाटी में किसी समय 'ॐ नमः शिवाय' तथा 'बाबा अमरनाथ की जय' का उद्घोष गूँजता था, लेकिन आज आतंकवादी गतिविधियों के कारण ऐसा नहीं होता है।

यदि आतंकवाद को जल्द ही रोका न गया तो यह अमरनाथ यात्रा तमाम तीर्थयात्रियों की अकाल मृत्यु का कारण बन कर रह जायेगी। यदि इस वर्ष इस भयंकर घटना ने जन्म लिया है तो निश्चय ही अगले वर्षों में किसी न किसी प्रकार की दुर्घटना हो सकती है। अतः मेरा मानना है कि आतंकवाद को अभी से जड़ से मिटाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

मनोज कुमार त्रिपाठी

दशम 'क'

ऐसा था गुरुजी का बचपन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक परमपूज्य श्री माधव राव सदाशिव राव गोलवलकर के बचपन की बात है तब वे नागपुर के एक मिशनरी कालेज में पढ़ते थे। इस संस्था में पढ़ने वाले प्रत्येक विद्यार्थी को उस समय बाइबिल अनिवार्य रूप से पढ़नी पढ़ती थी।

एक दिन एक अंग्रेज अध्यापक बाइबिल का पाठ पढ़ा रहे थे और विद्यार्थी तन्मयता से पढ़ रहे थे, तब अकस्मात् बालक माधव राव सदाशिवराव गोलवलकर खड़ा हो गया और बड़ी विनम्रतापूर्वक बोला, "सर आप बाइबिल के इस अंश को गलत पढ़ा रहे हैं।" यह सुनकर अंग्रेज अध्यापक को उसकी बात अपमान जनक लगी और उस बालक को अपने पास बुला कर सभी बच्चों के सामने बहुत पीटा लेकिन वह बालक अपनी बात पर दृढ़ रहा। मामला बढ़ते-बढ़ते गुरुजी व उस अध्यापक के बीच से निकलकर प्राचार्य के पास पहुँचा और जब बाइबिल की अधिकृत पुस्तक मँगा कर जाँच की गई तो उस बालक की बात सही निकली।

पीटने वाले अंग्रेज अध्यापक ने अपनी भूल स्वीकार की और इस प्रतिभाशाली छात्र के सामने सिर झुकाना पड़ा तथा माफ़ी माँगनी पड़ी।

सुमित जायसवाल

नवम 'क'

चरित्र निर्माण ही राष्ट्र निर्माण है।

कोई भी राष्ट्र बड़ी-बड़ी इमारतों, कल-कारखानों अथवा चौड़ी सड़कों से प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं करता बल्कि सच्चरित्र नागरिक ही उस राष्ट्र को पहचान देते हैं। सम्भवतः इसी कारण हमारे ऋषि-मनीषी बालकों की शिक्षा में चरित्र निर्माण पर ही जोर देते थे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आज विश्व में भौतिक उन्नति अपनी चरम-सीमा पर पहुँच चुकी है, परन्तु चरित्र में जो गिरावट दृष्टिगत होती है यह निश्चय ही चिन्ताजनक है। ऐसे कठिन समय में शिक्षा-संस्थानों का दायित्व बहुत बढ़ गया है। वास्तव में शिक्षा संस्थायें ही वे मन्दिर हैं जहाँ बालक का निर्माण होता है और ये बालक ही आगे चलकर राष्ट्र के निर्माण में अहम् भूमिका निभाते हैं।

भारतवर्ष को संसार में जगद्गुरु माना जाता था। हमारे वेद-ग्रन्थों ने ही संसार को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित किया। वेदों में सम्पूर्ण वसुधा को कुटुम्ब मान कर विश्व कल्याण की बात कही है-

“सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्॥”

परन्तु आज इस गौतम बुद्ध और गाँधी के देशमें बालकों में आत्मसंयम, इन्द्रिय-निग्रह तथा नैतिक गुणों के स्थान पर भ्रष्ट आचरण का विकास हो रहा है। इसका कारण सम्भवतः यह है कि हमने भी व्यक्ति निर्माण के स्थान पर भौतिक उन्नति को अधिक महत्व देना प्रारम्भ कर दिया है। हम भूल गये हैं कि भौतिक प्रगति की भव्य इमारत आध्यात्मिकता पर ही खड़ी हो सकती है। अतः हमें चरित्र की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये। क्योंकि -

“वृत्तं यत्नेन संरक्षेत्, वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्तस्तु हतो हतः॥”

अतः वर्तमान समय में हमें पुनः भारत को विश्व गुरु के रूप में प्रतिष्ठित करना है जो कि तभी सम्भव है जब राष्ट्र का निर्माण करने वाले व्यक्तियों की शिक्षा ऐसी हो कि चरित्रवान नागरिक तैयार हो सकें भले ही भौतिक प्रगति में कुछ व्यवधान आ जाये -

“निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र-निर्माण न भूलें।
स्वार्थ-साधना की आँधी में वसुधा का कल्याण न भूलें॥”

मोहित कटियार

नवम 'क'

अलौकिकताओं से भरा वनस्पति जगत्

प्रकृति की विचित्र रचनाओं में कुछ ऐसे वृक्ष भी हैं जो अपनी विस्मयकारी विशेषताओं के कारण सबको आश्चर्यचकित किये हुये हैं।

केनरी नामक द्वीप में बहुतायत में पाया जाने वाला 'लाउरेले' नामक वृक्ष खतरे का तनिक आभास होने पर भयवश रोने लगता है। इसी प्रकार 'मेंड्रक' नामक वृक्ष की आकृति मनुष्य से काफी मिलती-जुलती है। इसे उखाड़ने का प्रयास करने पर यह बच्चों की भाँति रोने लगता है। दक्षिण अफ्रीका में 'एसीटिव' नाम का एक ऐसा पौधा पाया जाता है जो मनुष्य की उपस्थिति में भयभीत और या फिर प्रसन्नता का अनुभव करता है।

अरब, मिस्र और सीरिया के रेगिस्तानों में एक अति विचित्र पौधा पाया जाता है। इस पौधे को 'रोज़ ऑफ जैरिको' कहा जाता है। यह जब चाहे अपने आप को गोल कर लेता है और जब मरजी आये फैला लेता है। 'सनड्यू' नाम के पौधे में छोटे-छोटे रोम हो जाते हैं। हर रोम के सिरे पर एक चिपचिपे पदार्थ की बूँद होती है। यह बूँद सूर्य के प्रकाश में चमकती है। जिससे कीट आकर्षित हो जाते हैं। आस-पास के सभी कीट को झुककर दबोच लेते हैं ये कीट को पत्ती के अन्दर धकेल देते हैं। पत्ती से एक पाचक रस निकलकर कीट का पाचन कर लेता है। 'वीनस फ्लाई ट्रेप' और 'नीपाथिस' आदि कीटभक्षी पौधे हैं।

आस्ट्रेलिया के क्वींसलैण्ड नगर में एक विशाल आकार का विचित्र पेड़ पाया जाता है। जिसे बोटलनुमा पेड़ भी कहते हैं। यह तकरीबन पचास फुट लम्बा तथा तीस फुट चौड़ा है। इसके तने के सिरे के नीचे बोटल की गरदन की तरह मोटाई मिलती है। इसके तने को छेदने पर शरबत की तरह मीठा व पौष्टिक रस निकलता है।

उत्तरी महासागर में अनेक छोटे-छोटे द्वीपों में एक विचित्र वृक्ष पाया जाता है। इस वृक्ष पर जो फल लगता है। वह नवजात शिशु के सिरतुल्य लगता है। इन द्वीपों के निवासी इस फल के गूदे को रोटी के समान बड़े चाव से खाते हैं।

आश्चर्य की बात है कि कुछ वृक्ष मक्खन प्रदान करते हैं। संयुक्त राज्य के जंगलों में कुछेक वृक्षों के फलों को सुखाकर फिर उबालकर मक्खन की तरह सफेद गूदा प्राप्त किया जाता है यह खाने में मक्खन सरीखा ही होता है।

कुछ वृक्ष ऐसे भी हैं जो मनुष्य के प्राण ले लेते हैं। ऐसा ही एक पौधा 'स्टिंगिंग नेटल' है जो शरीर में घुसकर विष छोड़ देता है जिससे मनुष्य की मौत हो जाती है। ऐसे ही पौधे आइवी, लैबरनम व हेमलॉक हैं। ये पौधे अफ्रीका तथा अमेरिका के जंगलों में पाये जाते हैं।

विचित्रताओं की अपनी तरह का अनूठा उदाहरण है, 'डेसिगोडियम डाइक्वेट्रम'। इस पौधे की पत्तियों में ग्रीष्मकाल में खूब हलचल पैदा होती है और इनसे संगीतमय स्वरलहरियाँ निकलती

हैं। पेड़-पौधों द्वारा आत्महत्या करने की बात पर कोई सहसा विश्वास नहीं करेगा, पर यह शत-प्रतिशत सत्य है। शिकागो विश्वविद्यालय के प्राध्यापक राबिन जी० फास्टर ने एक ऐसे पेड़ को खोज निकाला है जो एक वर्ष के अन्दर स्वयं गिरकर मर जाता है। इस अनूठे पौधे का नाम 'टेफोगोलिया वर्सीकोलर' है। शोधकर्ताओं का विचार है कि यह प्राकृतिक प्रक्रिया के तहत होता है।

अफ्रीका में पाया जाने वाला 'एण्ड्रसोनिया डिजीटाटा' आश्चर्यजनक पौधा है। उसी प्रकार ब्राजील में पाये जाने वाले 'कोपियाबा' नाम के पौधे से साल में दो बार २४-२४ लीटर तेल निकलता है।

पेड़-पौधे का संसार अनोखा, अनूठा और विचित्र होने के साथ ही यह इंगित करता है कि आदिमाता परमेश्वरी प्रकृति ने अपनी सभी सन्तानों को उनकी परिस्थितियों के अनुरूप दिव्य-अनुदान देकर अलौकिकता प्रदान की है। मानव ही नहीं, प्रकृति की प्रत्येक रचना चाहे वे जड़ समझे जाने वाले पेड़-पौधे ही हों, अपनी विशेषताओं में किसी से कम नहीं हैं।

प्रस्तुतकर्ता

प्रखर वर्धन

अष्टम - 'क'

सत्य - घटना

बहादुर - भइया

भारत-भूमि पर अनेक वीर पैदा हुए हैं। जिनमें से मेरे घर के पास रहने वाले रमेश भैया भी थे। वह हमें अपना छोटा भाई मानते थे। तब मैं माता-पिता के साथ झाँसी में रहता था। सन् १९६५ में जब मैं ७ साल का था तब एक दुर्घटना घटित हुई। संक्षेप में वह इस प्रकार है। हमारे पड़ोसी श्री अशोक मेहरा बाहर गए थे। रात्रि १२.०० बजे कुछ चोर चोरी के इरादे से अन्दर आ गए। रात्रि १.०० बजे के लगभग घर का सामान समेट कर वे निकलने ही वाले थे, कि खट-पट से उनके पड़ोस में रहने वाले रमेश भइया की नींद खुल गई। अट्टारह साल के तगड़े, नौजवान, कुशल कराटेबाज, पहलवान एवं लाठी चलाने के लिए मशहूर। चोर उनको गेट के सामने देखकर भौचक्के रह गए। लाठी थी उनके हाथ में। चोरों के चाकुओं से भला वे कब तक लड़ते? फिर भी उन्होंने ६ में से ३ को घायल कर दिया। वहाँ पर तब तक कई लोग इकट्ठा हो गए। चोर पकड़ लिए गए। उससे पहले रमेश भइया को चोर चाकू मार चुका था। उनके पकड़े जाने के बाद वे गिर पड़े और यह बात बताई। अपनी अन्तिम इच्छा कहने की चाह रखते हुए भी वे कुछ नहीं कह पाए और दम तोड़ दिया। यह समय ३.१५ का था। तारीख थी २५ मार्च, यह एक भयानक अविस्मरणीय तिथि थी। उनको मरणोपरान्त राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार दिया गया। यह घटना याद करते ही आँखें नम हो जाती हैं। प्रायः अब भी एकान्त पाकर रमेश भइया की याद में रोया करता हूँ।

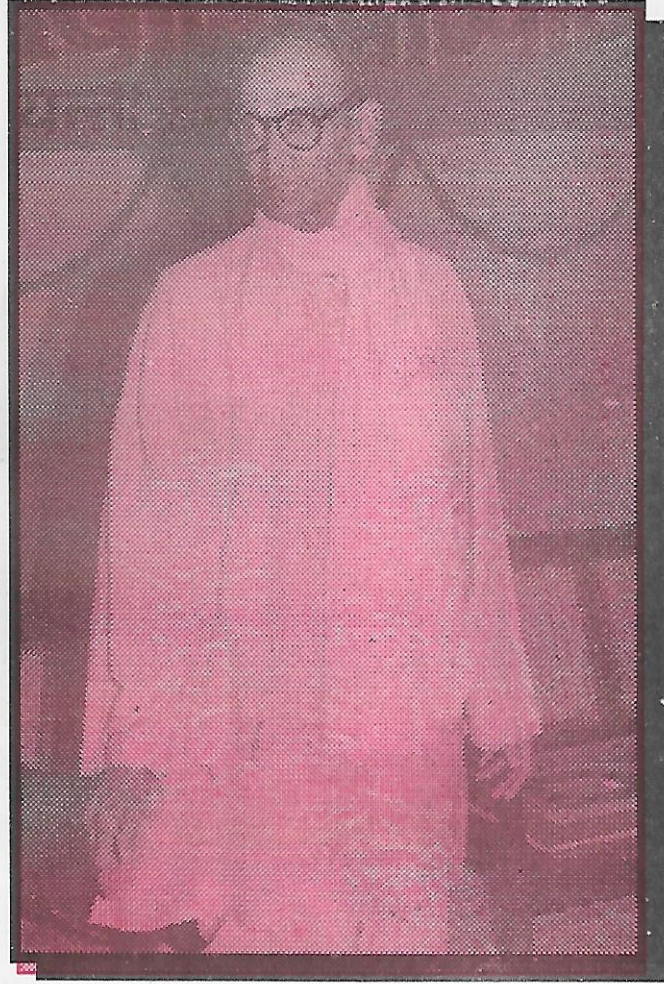
भगवान ! एक बार मुझे मेरे बहादुर भैया रमेश के दर्शन करा दो।

नितिन शंकर सिंह

सप्तम 'क'

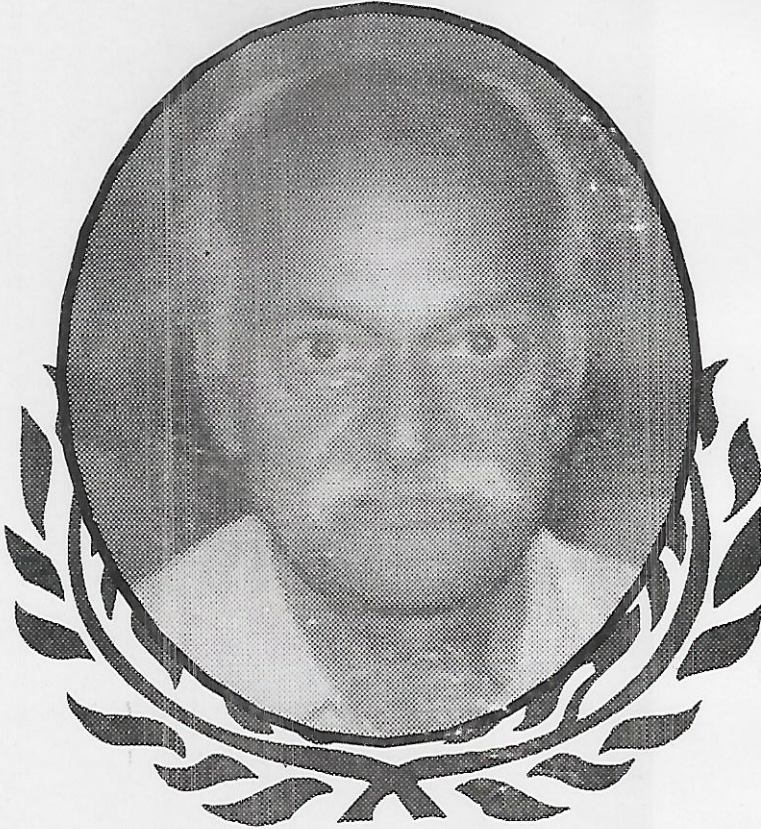
श्रद्धांजलि

ब्रह्मलीन लक्ष्मण श्री कृष्ण भिड़े जी



साधना-पर्याय निष्ठा के अतुल विग्रह, सुष्ठु सुगुण निकाय रूपायित मनोनिग्रह।
त्याग की सीमा तितिक्षा भाव की भाषा, आत्मबल विश्वास की परिपूर्ण परिभाषा।
अंशुमाली ज्ञान के मृदुलान्त शीतल सोम, राष्ट्रहित करते रहे नित जिंदगी को होम।
भरतभू की कीर्ति हो दिग्ब्याप्त था संकल्प, साधना अविराम बस कोई न और विकल्प।
ओ तपस्वी आत्मगोपी ओ मनस्वी शान्त, साधना का पा लिया फल सतत् चिर एकान्त।

चरैवेति! चरैवेति!!
को ही आदर्श मान कर अपना
जीवन व्यतीत करने वाले
श्रद्धेय मास्टर साहब
को श्रद्धा सुमन अर्पित हैं -



स्व० राम शंकर शुक्ल

जन्म - २१ अगस्त १९२२ (सुमेरपुर, उन्नाव)

निर्वाण - १६ फरवरी २००१ (कानपुर)

बी० एन० एस० डी० इण्टर कालेज
आर्डिनेन्स फैक्ट्री इण्टर कालेज, अर्मापुर (प्रधानाचार्य)
पं. दीनदयाल विद्यालय (प्रधानाचार्य)

सच्चा मित्र

अरुण और रमेश लखनऊ के चारबाग में रहते थे। दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते थे। अरुण के पिता एक बड़े व्यापारी थे तथा रमेश के पिता डाक्टर थे। अरुण व रमेश दोनों नवी कक्षा के छात्र थे। अरुण ने आठवीं कक्षा में प्रथम स्थान तथा रमेश ने द्वितीय स्थान प्राप्त किये थे। रमेश जितना सीधा तथा सरल था अरुण उतना ही चञ्चल स्वभाव का था।

अर्द्ध वार्षिक परीक्षा से पहले दोनों की पढ़ाई भली प्रकार से चल रही थी। लेकिन अर्द्ध वार्षिक परीक्षा का परिणाम निकला तो रमेश दंग रह गया। उसने कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया लेकिन वह इस बात से चकित नहीं हुआ बल्कि वह अरुण के तीन विषयों में फेल होने तथा बहुत कम अंक अर्जित करने की बात से दंग रह गया था। अरुण को इस बात का कोई कष्ट नहीं था लेकिन अरुण के कम अंक प्राप्त करने पर रमेश का माथा ठनका। उसने समझ लिया कि दाल में कुछ काला है।

यही बात वह रात भर सोचता रहा और सोचते हुए सो गया। अगले दिन उसने इस बात को स्वयं अरुण से पूछने का विचार किया।

जब वह विद्यालय पहुँचा तो उसने अरुण से पूछा कि तुमने उस बार कम अंक क्यों प्राप्त किये? इसका क्या कारण है? पहले तो अरुण टालता रहा। फिर कहा कि मैं बीमार था। तो रमेश ने कहा कि तुम फिर प्रतिदिन विद्यालय क्यों आ रहे थे ? अगर बीमार थे तो डाक्टर को क्यों नहीं दिखाया ? विद्यालय में तो तुम बीमार हुए नहीं। इस बात को सुनकर अरुण क्रोधित हो कर कक्षा से चला गया।

रमेश यह देखकर समझ गया कि अरुण झूठ बोल रहा है और बात कुछ और ही है। इसलिए रमेश ने अरुण की गतिविधियों पर नज़र रखने की योजना बनायी।

अगले दिन सुबह ही अरुण के घर जाने की तैयारी कर रमेश ने अपनी माँ से कहा कि मैं अरुण के घर सवाल पूछने जा रहा हूँ। अरुण का घर रमेश के घर के पास था। जब वह अरुण के घर पहुँचा तो अरुण किताब खोलकर जोर-जोर से पढ़ रहा था। जब पास जा कर देखा तो वह गणित की किताब पढ़ रहा था। रमेश ने पूछा “क्या इतिहास याद कर रहे हो ?” अरुण ने कहा ‘हाँ’। जब रमेश उसके बिस्तर पर बैठने ही वाला था जैसे ही अरुण ने सकपका किताब बन्द कर दी। उसने पूछा “किस कारण से आये हो ?” रमेश ने कहा कि एक सवाल पूछने, अरुण ने वह सवाल रमेश को बताया। लेकिन सवाल तो एक बहाना मात्र था अरुण की गतिविधियों पर नज़र रखने का। सवाल पूछने के बाद रमेश चला गया।

जब रमेश विद्यालय पहुँचा तो उसका मन नहीं लग रहा था। छुट्टी होने के बाद अरुण घर जाने के लिए साइकिल पर सवार हुआ। रमेश भी साइकिल से उसके पीछे हो लिया। अरुण चारबाग

न जा कर, गोमतीनगर की ओर जाने लगा। रमेश उसका पीछा करता रहा। कुछ समय बाद अरुण एक पुराने मकान के सामने रुका और अन्दर चला गया। उसने अपनी साइकिल नीचे ही खड़ी कर दी जहाँ और भी साइकिलें खड़ी थीं। रमेश ने भी वहीं साइकिल खड़ी कर गैलरी से मकान के अन्दर प्रवेश किया। वहाँ कुछ लड़कों की आवाज़ आ रही थी। जिनमें अरुण की भी आवाज़ थी। जब उसने आगे बढ़ कर देखा तो दंग रह गया। रमेश ने देखा कि लड़के अफीम, चरस तथा ड्रग्स आदि नशीले पदार्थ खा रहे हैं। जब अरुण ने रमेश को देखा तो पहले वह सकपका गया। फिर अरुण ने संभलते हुए कहा कि भाओ तुम भी इसे चखो। अरुण ने रमेश की ओर हाथ बढ़ाया ही था कि रमेश ने अरुण के जोरदार थप्पड़ मार दिया। अरुण के हाथ से अफीम गिर गयी। रमेश ने समझाया कि इस नशीले पदार्थ का सेवन बन्द कर दो, जो तुम्हारे शरीर की विभिन्न प्रकार की कार्यप्रणालियों को प्रभावित करता है। इसी कारण से तुमने कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त नहीं किया। इसलिए अपने भविष्य को बचाओ वरना अनर्थ हो जायेगा।

रमेश की इन बातों को सुनकर अरुण को आत्म-गलानि हुई और भविष्य में बुरे मार्ग पर न जाने का दृढसंकल्प किया तथा रमेश को धन्यवाद दिया। साथ ही अरुण ने रमेश को बताया कि जब तुम मेरे घर आये थे तो मैं गणित की किताब में नागराज की कॉमिक्स पढ़ रहा था। उसने यह भी बताया कि मैं तुमसे जलता था। इस घटना के बाद वार्षिक परीक्षा में अरुण ने प्रथम स्थान तथा रमेश ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

इस कहानी से शिक्षा मिलती है कि समय का सदुपयोग करना चाहिए, जैसे अरुण ने समय का सदुपयोग कर के प्रथम स्थान प्राप्त किया। इससे शिक्षा मिलती है कि सच्चा मित्र अपने मित्र को बुरी संगत से हटाता है जैसे कि रमेश ने अरुण को बुरी संगत से हटाया।

प्रफुल्ल श्रीवास्तव

नवम 'ग'

“राष्ट्र के जीवन-मूल्य, जीवन-पद्धति, आदर्श और सांस्कृतिक जीवन धारा के अनुसूप जो कुछ स्वीकार किया जाता है। वह एक रसता निर्माण करता है और राष्ट्र को पुष्ट करता है। इसके विपरीत जो बेमेल और विरोधी होता है वह अशान्ति, उपद्रव और रोग का कारण बनता है।”

- पं० दीन दयाल उपाध्याय

गतिविधि

केवल पुस्तकीय ज्ञान ही अच्छी शिक्षा का पैमाना नहीं हो सकता। छात्र के अन्दर छिपी प्रतिभाओं व उसकी नेतृत्व क्षमता के प्रकटीकरण के अवसर प्रदान करने का मंच भी है विद्यालय। यह कार्य छात्रों द्वारा संचालित विभिन्न भारतीयों द्वारा प्रमाणिकता से हो रहा है।

- सम्पादक

बाल भारती

विद्यालय की षष्ठ से अष्टम तक के छात्रों की संस्था बाल भारती ही है। बाल भारती के द्वारा समय-समय पर विद्यालय में विभिन्न कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया जाता है। बाल भारती द्वारा आयोजित सत्र के प्रमुख कार्यक्रम इस प्रकार रहे -

स्वाधीनता दिवस

देश की स्वाधीनता की ५३वीं वर्षगाँठ पर प्रातः ८ बजकर ३० मिनट पर प्रधानाचार्य जी द्वारा ध्वजारोहण हुआ। राष्ट्रगान के पश्चात् एन०सी०सी० के जवानों द्वारा भव्य परेड हुई। विशाल कक्ष में पहुँचने पर इष्टों के स्तवन के उपरान्त अध्यक्ष भैया शोभित खरे द्वारा अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् छात्र-प्रस्तुतियाँ प्रारम्भ हुई। छात्र प्रस्तुतियों के उपरान्त आचार्य श्री मयंक जी, दिनेश जी, सुभाष जी तथा जगपाल जी की कविताओं ने हृदय में उत्साह का संचार कर दिया। प्रधानाचार्य जी ने सभी छात्रों का मार्गदर्शन किया। अन्त में राष्ट्रगीत के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

वार्षिकोत्सव - अन्तर्विद्यालयीय राष्ट्रीय गीत-गायन-प्रतियोगिता

२४ सितम्बर २००० को विद्यालय के ३०वें वार्षिकोत्सव के प्रथम कार्यक्रम का संचालन बाल भारती द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्णकालिक कार्यकर्ता एवं भारतीय जनता पार्टी के संगठन मन्त्री माननीय जयप्रकाश जी थे। पं० दीनदयाल जी के चित्र पर पुष्पार्पण के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। अतिथि परिचय आचार्य श्री राजेश जी द्वारा तथा उनका स्वागत शोभित खरे द्वारा किया गया। अध्यक्षीय वक्तव्य में शोभित खरे ने कहा कि पं० दीनदयाल जी के विचारों को भारत भूमि के कण-कण में प्रतिस्थापित करने के लिए यह विद्यालय प्रतिबद्ध है। तत्पश्चात् प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। छात्र-छात्राओं ने राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत गीत माँ भारती के चरणों में अर्पित किए। मुख्य अतिथि महोदय ने छात्रों का मार्गदर्शन कर उन्हें सतत् आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी। इसके बाद परिणाम की घोषणा तथा पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम हुआ। प्रतियोगिता में छात्रा वर्ग में कानपुर विद्या मन्दिर की छात्रा सोनम भदौरिया ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। सरस्वती ज्ञान मन्दिर इन्दिरा नगर की छात्रा वसुन्धरा मिश्रा को द्वितीय स्थान मिला।

अन्य वर्ग में पं. दीनदयाल विद्यालय के अमित सिंह को प्रथम स्थान तथा सरस्वती ज्ञान मन्दिर के छात्र सुमित राय को द्वितीय स्थान मिला। अन्त में दिनेश जी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। इसके परिणाम निम्नलिखित हैं -

गीत गायन प्रतियोगिता

बाल भारती द्वारा ३ फरवरी को विद्यालय के विशाल कक्षा में गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता दो वर्गों में हुई। कक्षा षष्ठ से अष्टम तथा नवम से द्वादश। इसके परिणाम इस प्रकार रहे -

जूनियर वर्ग	- प्रथम	- चि. अंकुर मिश्र	षष्ठ 'क'
	- द्वितीय	- चि. पंकज यादव	अष्टम 'क'
	- तृतीय	- चि. अमित सिंह	षष्ठ 'ख'
सीनियर वर्ग	- प्रथम	- चि. सुमित पाण्डेय	दशम 'ग'
	- द्वितीय	- चि. रवि प्रकाश	दशम 'ग'
	- तृतीय	- चि. राजीव वर्मा	एकादश 'ख'

बाल भारती पदाधिकारी

बालभारती प्रमुख आचार्य - श्री सुभाष चन्द्र शर्मा

बालभारती उपप्रमुख आचार्य - श्री जगपाल सिंह

१.	अध्यक्ष	- चि. शोभित खरे	अष्टम 'क'
२.	उपाध्यक्ष	- चि. अनुराग तिवारी	अष्टम 'क'
३.	महामन्त्री	- चि. अभिनन्दन तिवारी	अष्टम 'ख'
४.	मन्त्री	- चि. कीर्तिमान मिश्र	अष्टम 'क'
५.	अनुशासक	- चि. सौरभ सिंह (प्रथम)	अष्टम 'क'
६.	उपअनुशासक	- चि. विनीत शाक्य	अष्टम 'क'
७.	सज्जा प्रमुख	- चि. सन्दीप सिंह	अष्टम 'क'
८.	सज्जा उपप्रमुख	- चि. रघुनाथ सिंह	अष्टम 'ख'
९.	क्रीड़ा प्रमुख	- चि. पंकज यादव	अष्टम 'क'
१०.	क्रीड़ा उपप्रमुख	- चि. राजीव रंजन	अष्टम 'ख'
११.	लेखन प्रमुख	- चि. सजल गोयल	अष्टम 'क'
१२.	जल व्यवस्था प्रमुख	- चि. चैतन्य दत्त	अष्टम - 'क'

१३. जल व्यवस्था उपप्रमुख - चि. मृदुल मिश्र अष्टम 'ख'
 १४. सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रमुख - चि. उत्कर्ष पाण्डेय अष्टम 'क'
 १५. सांस्कृतिक कार्यक्रम उपप्रमुख - चि. जीत सिंह आर्य सप्तम 'ख'
 १६. चिकित्सा प्रमुख - चि. सौरभ त्रिपाठी अष्टम 'क'
 १७. विद्युत व्यवस्था प्रमुख - चि. सिद्धार्थ सौरभ अष्टम 'ख'
 १८. खोयापाया प्रमुख - चि. अभिषेक ओमर अष्टम 'क'
 १९. वाचनालय एवं पुस्तकालय प्रमुख - चि. पुष्परज सिंह अष्टम 'ख'
 २०. वाचनालय एवं पुस्तकालय उपप्रमुख - चि. मुनीश शर्मा सप्तम 'क'
 २१. वागवानी प्रमुख - चि. स्वापिल जोशी अष्टम 'क'

किशोर भारती

विद्यालय के नवम व दशम कक्षा के छात्रों की संस्था किशोर भारती है। किशोर भारती द्वारा इस वर्ष आयोजित प्रमुख समारोहों का विवरण इस प्रकार है -

तुलसी जयन्ती समारोह

“तुलसी जयन्ती समारोह” किशोर भारती द्वारा आयोजित प्रथम कार्यक्रम था। इस कार्यक्रम की शुरुआत सामूहिक प्रार्थना द्वारा हुई। इसके पश्चात् विद्यालय के प्रधानाचार्य तथा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री ओमशंकर त्रिपाठी जी के द्वारा तुलसीदास जी के चित्र पर पुष्पार्पण किया गया।

कार्यक्रम का प्रमुख अंग देश के जाने माने कवि श्री सुमन जी द्वारा तुलसी दास जी को समर्पित उनके कुछ मौलिक छन्द रहे। इस कार्यक्रम में निम्नलिखित छात्रों ने भाग लिया -

१. सामूहिक रामधुन - चि. अनुराग तिवारी (द्वादश 'ख')
 - चि. अभिनन्दन तिवारी (अष्टम 'ख')
 २. गीत - चि. सुमित पाण्डेय (दशम - 'ग')
 ३. दोहे - चि. उत्कर्ष पाण्डेय (अष्टम 'क')
 ४. भजन - चि. कुशाग्र द्विवेदी (दशम 'ख')
 ५. भजन - चि. कुशल द्विवेदी (द्वादश 'क')

इसके पश्चात् प्रधानाचार्य जी के आशीर्वाद के बाद राष्ट्रगीत से कार्यक्रम का समापन हुआ।

विवेकानन्द जन्मोत्सव

कार्यक्रम का प्रारम्भ मञ्चासीन मदनभावों श्री प्रधानाचार्य जी, श्री लक्ष्मीशंकर द्विवेदी जी

(छात्रावास अधीक्षक) तथा श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी जी उपप्रधानाचार्य द्वारा विवेकानन्द जी के चित्र पर पुष्पार्पण किया गया। इसके बाद आचार्य श्री मनोज जी द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम की छात्र प्रस्तुतियाँ निम्नलिखित रहीं -

	छात्र	कक्षा	प्रस्तुति
१.	चि. अंकुर मिश्र	षष्ठ 'क'	गीत
२.	चि. ऋषभ गुप्त	नवम 'ग'	वक्तव्य
३.	चि. कुशाग्र द्विवेदी	दशम 'ख'	वक्तव्य
४.	चि. अभय चतुर्वेदी	दशम 'क'	वक्तव्य
५.	चि. सुमित पाण्डेय	दशम 'ग'	गीत
६.	चि. कुशल द्विवेदी	द्वादश 'क'	गीत

सुभाष चन्द्र बोस जन्मोत्सव

किशोर भारती के तत्वावधान में 'सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती' के शुभ अवसर पर एक वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसका विषय था - कश्मीर में संघर्ष विराम - भारत का एक उचित कदम है। इसके पक्ष या विपक्ष में अपना वक्तव्य प्रस्तुत करना था। यह प्रतियोगिता कक्षा नवम से द्वादश तक के छात्रों की थी।

प्रतियोगिता के पक्ष में प्रथम स्थान एकादश के ऋषि तिवारी तथा विपक्ष में प्रथम स्थान 'आशुतोष शुक्ल' (द्वादश 'क') ने प्राप्त किया।

विद्यालय के वरिष्ठ आचार्य तथा देश के जाने माने कवि श्री सुमन जी द्वारा "गाँधी नहीं मेरे देश को सुभाष चाहिए" शीर्षक की एक मन्त्र मुग्ध करने वाली कविता प्रस्तुत की गई।

प्रभारी आचार्य - श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव जी।

उपप्रभारी आचार्य - श्री सतीश जी।

अध्यक्ष

१. चि. पुलकित अग्रवाल - दशम 'क'

उपाध्यक्ष

१. चि. हिमांशु गुप्त - दशम 'क'

२. चि. आशीष सिंह - दशम 'ग'

मन्त्री

१. चि. अभय चतुर्वेदी - दशम 'क'

उपमन्त्री

१. चि. सुयश मिश्र - दशम 'ग'

२. चि. अनुराग वर्मा - दशम 'क'
 ३. चि. राहुल प्रताप सिंह - दशम 'क'

अनुशासक

१. चि. राजेन्द्र पाण्डेय - दशम 'क'
 २. चि. सुमित पाण्डेय - दशम 'ग'

व्यवस्था एवं सञ्चाल प्रमुख

१. चि. मनोज त्रिपाठी - दशम 'क'
 २. चि. आदित्य कुमार तिवारी - दशम 'क'
 ३. चि. सौरभ गुप्त - दशम 'क'
 ४. चि. मयंक गुप्त - दशम 'ख'
 ५. चि. आदित्य सिंह - दशम 'ग'

तथा नवम के तीनों वर्गों के प्रतिनिधि -

- नवम 'क' - चि. मणिकान्त किशोर
 नवम 'ख' - चि. आशीष शुक्ल
 नवम 'ग' - चि. प्रतीक सिंह

चिकित्सा प्रमुख

१. चि. ऋषि दीक्षित - दशम 'क'
 २. चि. शैलेन्द्र केसरवानी - दशम 'ग'

सांस्कृतिक प्रमुख

१. चि. आशीष कुशवाहा - दशम 'क'
 २. चि. अंशु कटियार - दशम 'क'

जल व्यवस्था प्रमुख

१. चि. शैलेन्द्र यादव - दशम 'ख'
 २. चि. प्रशान्त खरे - दशम 'ख'
 ३. चि. देवकी नन्दन तिवारी - दशम 'ख'

क्रीड़ा प्रमुख

१. चि. हिमांशु मिश्र - दशम 'ख'

क्रीड़ा उप प्रमुख

१. चि. अंकुर राय - दशम 'ख'

तरुण भारती

आज जब सम्पूर्ण देश असफल नेतृत्व की समस्या से जूझ रहा है। देश में अनेक विकास-योजनायें सफल नेतृत्व के अभाव में ठण्डे बस्ते में बन्द पड़ी हैं। प्रशासनिक भ्रष्टाचार सिर चढ़कर बोल रहा है, ऐसे समय में देश की तरुणई सिर्फ आँखें मूँदकर भविष्य की कल्पनाओं में खोई नहीं रह सकती तरुण भारती, युवावस्था की दहलीज पर खड़े किशोरों को राजनैतिक और प्रशासनिक प्रशिक्षण देने का एक सार्थक प्रयास है। जीवन में ऊँची-ऊँची अभिलाषा रखने वाले छात्रों को तरुण भारती भविष्य के पूर्वाभ्यास का मञ्च उपलब्ध कराती है। जीवन की ऊँचाईयों को पाकर भी हम अपने कर्तव्य को न भूलें, तरुण भारती की नींव इसी भावना पर आधारित है।

तप तपस्या के सहारे, इन्द्र बनना तो सरल है।

स्वर्ग का ऐश्वर्य पाकर, मद भुलाना ही कठिन है।।

कुछ प्रयास :- विद्यालय में अध्ययन करने वाले सबसे वरिष्ठ छात्रों की संस्था तरुण भारती, गठन के पश्चात् से ही विद्यालय की व्यवस्थाओं के साथ कार्य प्रारम्भ कर देती है। इस वर्ष भी तरुण भारती के पदाधिकारियों ने प्रभारी आचार्यों की प्रेरणा से अनेकानेक योजनाओं को फलीभूत किया। इसी शृंखला में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिनमें से कुछ प्रमुख कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है -

विद्यालय का ३० वाँ वार्षिकोत्सव - अपना विद्यालय जिस महापुरुष के पुण्य आदर्शों को लेकर प्रारम्भ हुआ और आज भी विद्यालय के छात्र जिस युगपुरुष के पदचिह्नों पर चलने के लिये दृढ़ संकल्प हैं, ऐसे पं० दीनदयाल उपाध्याय जी के जन्म दिवस पर आयोजित विद्यालय के ३०वें वार्षिकोत्सव में तरुण भारती के पदाधिकारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। पं० दीनदयाल जी के जन्म दिवस पर आयोजित मुख्य कार्यक्रम के आयोजन का कार्यभार तरुण भारती ने सँभाला। भारत सरकार के केन्द्रीय मन्त्री एवं पं० दीनदयाल जी के मित्र शान्ता कुमार जी इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। वन्दना के पश्चात् घोष के साथ एन.सी.सी. के छात्रों का पद-संचालन प्रभावी रहा। विद्यालय के मेधावी छात्रों को पुरस्कृत किया गया। विद्यालय की प्रगति आख्या का वाचन प्रधानाचार्य जी के द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि के उद्बोधन के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हो गया।

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता - विद्यालय की वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता का कार्यभार भी तरुण भारती को सौंपा गया, कानपुर विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष माननीय एन.एन. प्रसाद उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि रहे। दीप प्रज्वलन व ध्वजारोहण के बाद क्रीड़ा प्रतियोगिता को प्रारम्भ करने की औपचारिकता के बाद तरुण भारती के कुशल नेतृत्व में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता सम्पन्न हुयी।

३. गणतन्त्र दिवस - गणतन्त्र दिवस का कार्यक्रम तरुण भारती के तत्वावधान में आयोजित किया गया। ध्वजारोहण के पश्चात् एन.सी.सी. के छात्रों द्वारा मातृवन्दना का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। माननीय

प्रधानाचार्य जी ने मुख्य अतिथि का पद संभाला। संक्षिप्त कार्यक्रम में माननीय सुमन जी एवं श्री सुभाष जी का कविता-पाठ विशेष प्रभाव डालने में सफल हुआ। संक्षिप्त कार्यक्रम के बाद पुरस्कार वितरण हुआ। इसके बाद प्रसाद वितरण हुआ आज के ही दिन आचार्यों (चाणक्य एकादश) व छात्रों (चन्द्रगुप्त एकादश) के मध्य क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया जिसमें चन्द्रगुप्त एकादश ने जीत दर्ज की।

तरुण भारती : व्यक्तित्व निर्माण का स्रोत -

तरुण भारती का गठन इस भावना के साथ किया जाता है कि विद्यालय में अध्ययन करने वाले छात्र भविष्य में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर अपने कर्म-कौशल और कर्तव्य निष्ठा के सहारे एक नई छाप छोड़ सकें। राष्ट्रप्रेम की भावना मन में लिये समाज का नेतृत्व करने के लिए आगे आयें। राष्ट्रीय मूल्यों पर चलते हुये भ्रष्टाचार के उन्मूलन में महती भूमिका का निर्वाह कर सकें। यदि देश की जवानी सो गयी तो देश का विकास कदापि सम्भव नहीं है। तरुण भारती का गठन देश की तरुणार्ई का आह्वान है -

अरे, ओ नवजवानो! उठ पड़ो परखो जवानी को
शिवा का शौर्य गुरु की तेग बन्दा की रवानी को
महाराणा बनो युग के करो हुंकार जी भर के
गगन में भर उठें उद्घोष 'जय श्री राम' 'हर हर' के
भगे भ्रष्टाचारण का भूत जग व्यवहार पावन हो
परस्पर का जगे विश्वास हर मंजर सुहावन हो।

राष्ट्र के सजग प्रहरी : तरुण भारती के पदाधिकारी

प्रभारी आचार्य - श्री रामतीर्थ जी	उपप्रभारी आचार्य - श्री दिनेश जी
१. अध्यक्ष	- चि० आशुतोष शुक्ल 'द्वादश क'
२. उपाध्यक्ष	- चि० अभय मिश्र 'द्वादश ख'
३. महामन्त्री	- चि० ऋषि तिवारी एकादश 'ख'
४. मन्त्री	- चि० संजय सिंह एकादश 'ख'
५. अनुशासक	- चि० अभिषेक द्विवेदी एकादश 'क'
६. बौद्धिक प्रमुख	- १. चि० उमेश शुक्ल द्वादश 'क' २. चि० शौर्यजीत सिंह एकादश 'क'
७. सांस्कृतिक प्रमुख	- १. चि० अभिषेक अग्निहोत्री एकादश 'क' २. चि० उपेन्द्र मिश्र एकादश 'ख'

८. पत्रकारिता एवं कार्यक्रम संकलन	-	१. चि० पुनीत टण्डन द्वादश 'ख' २. चि० शैलेन्द्रनाथ पाण्डेय एकादश 'क'
९. पुस्तकालय प्रमुख	-	१. चि० योगेश मिश्र एकादश 'ख' २. चि० आशीष तिवारी एकादश 'क'
१०. जल एवं विद्युत प्रमुख	-	चि० हिमांशु उपाध्याय द्वादश 'क'
११. चिकित्सा प्रमुख	-	चि० धर्मेन्द्र सिंह द्वादश 'क'
१२. सज्जा/स्वच्छता प्रमुख	-	चि० विकास शुक्ल एकादश 'ख'
१३. कक्षा प्रतिनिधि	-	चि० अंकुर सिंह गौर द्वादश 'क' चि० अमितरंजन त्रिवेदी एकादश 'क'

ऋषि तिवारी

महामन्त्री

तरुण भारती

भारत के लम्बे इतिहास में मानव को पीड़ा पहुँचाने का उल्लेख करने वाला एक भी पृष्ठ नहीं है। भारत का यदि कोई इतिहास है तो वह समस्त विश्व की मंगलकामना का ही है। विश्व के विभिन्न देशों में प्राप्त भारतीय इतिहास के अवशेष आज भी इसी तथ्य की घोषणा कर रहे हैं कि भारत ने प्राणिमात्र के कल्याण के लिये ही प्रयत्न किये हैं। इसलिये सत्य तो यह है कि विश्व में परस्पर संघर्ष, विद्वेष, प्रतिद्वन्दिता के आधार पर प्रकट हो रही पश्चिमी राष्ट्रवाद की विभीषिकाओं से विश्व को बचाना है तो उसके लिये भारत के सशक्त राष्ट्रवाद को ही संगठित और सक्षम बनाकर खड़ा करना होगा। यही विश्व कल्याण का मार्ग है।”

- पं० दीन दयाल उपाध्याय

गुजरात में प्रकृति का कोप और मजहबी जुन्न

समझ में नहीं आता, अपने इस संस्मरणात्मक लेख की शुरुआत कहाँ से करूँ, भयावह भूकम्प की विभीषिका से या मनुष्य की अदम्य जिजीविषा से। एक तरफ प्रकृति की विध्वंस लीला तो दूसरी तरफ मनुष्य की सृजनात्मकता : एक तरफ स्वार्थी नर-पिशाचों की करतूत तो दूसरी तरफ नर सेवा ही नारायण सेवा के भाव से अहर्निश सेवारत मनुष्य। ऐसे तमाम दृश्य गुजरात के भूकम्प प्रभावित हिस्से में पहुँचते ही दिखाई पड़ने लगते हैं। २० फरवरी २००१ को मैंने कानपुर से गुजरात के लिये प्रस्थान किया। मैं अपने साथ भूकम्प पीड़ितों के सहायतार्थ आई० आई० टी० छात्रों से सेवा भारती के लिए एकत्रित राशि भी ले जा रहा था। यद्यपि यह राशि वहाँ की जरूरतों के मुताबिक तो बहुत थोड़ी थी, परन्तु गुजरात जाकर पीड़ित लोगों के प्रति प्रत्यक्ष संवेदना व्यक्त करने का भाव मन को सन्तोष प्रदान कर रहा था। रास्ते के अनेक दुःखद-सुखद अनुभवों में डूबता-उतराता मैं २२ फरवरी की सुबह अहमदाबाद पहुँचा। अहमदाबाद पहुँचने पर पता चला कि वहाँ पर कुछ विशेष क्षति नहीं हुई है, लेकिन कुछ बहुमंजिली इमारतें ध्वस्त हुई हैं। उन ध्वस्त इमारतों एवं प्रभावित लोगों से मिलते हुए मैं संघ कार्यालय, गुजरात पहुँचा। वहाँ जाकर मैंने सेवा भारती, गुजरात के मन्त्री डा० वल्लभ भाई साँवलिया को अपनी राशि सौंपी। उनसे गुजरात भूकम्प में सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण बातों की जानकारी भी मिली। वहीं पर मेरी भेंट, गुजरात, महाराष्ट्र तथा गोवा क्षेत्र के क्षेत्र-प्रचारक मा० माधव भाई कुलकर्णी से भी हुई जो ६५-७० वर्ष की आयु में भी अनथक अपने कार्य में जुटे हुए थे। वहाँ पर मैंने देखा कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ एवं सेवा भारती के अनेक कार्यकर्ता दिन-रात सेवा कार्य में जुटे थे। आज की भाग-दौड़ से भरी इस जिन्दगी में इन कार्यकर्ताओं की एकात्मिक निष्ठा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वैशिष्ट्य का ही द्योतक है। क्षेत्र प्रचारक के निर्देशानुसार वहाँ से मैं भचाऊ के लिए चल पड़ा। भचाऊ में प्रकृति ने अपना सबसे विनाशकारी रूप दिखाया है। भचाऊ जाने के लिए मैं जिस बस में बैठा उसी बस से जमात-ए-इस्लामी के भी २०-२५ कार्यकर्ता भूकम्प प्रभावित क्षेत्रों में जा रहे थे। इन कार्यकर्ताओं की वेश-भूषा से उन्हें सहज ही कट्टर मुस्लिम समझा जा सकता था। जब मैंने उनसे पूछा कि “आप किस उद्देश्य से जा रहे हैं।” तो उनका उत्तर था “दीन के प्रचार हेतु।” निश्चित ही उनकी इन कोशिशों में वास्तविक मानव-सेवा और देश-भक्ति कहीं दब-सी जाती है। करीब ८-६ घण्टे की यात्रा के बाद मैं भचाऊ” पहुँचा। भचाऊ का भयावह दृश्य देखकर रूह तक थर्रा उठी। भचाऊ में बने सभी-के-सभी मकान ध्वस्त हो चुके थे। कभी जहाँ पर सघन बस्ती थी वहीं अब निर्जनता और मलबों के ढेर ही नजर आते थे। इस प्राकृतिक आपदा में स्थानीय लोगों की आशा एवं उम्मीदों को पूरी कर रहे थे विभिन्न स्वयंसेवी संगठन। इनमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद्, बजरंग दल, सेवा भारती, गायत्री परिवार, स्वामी नारायण सम्प्रदाय, भारतीय जैन संगठन जैसे अनेकानेक स्वयंसेवी संगठनों के राहत शिविरों में जरूरतमन्दों की चहल-पहल थी। स्थानीय निवासी राहत एवं सेवा-कार्य हेतु इन स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रति श्रद्धाभक्ति रखते थे। लार्शें निकालने, उन्हें जलाने, दबे हुए लोगों को जीवित बचाने तथा

बचे हुए सामानों की सुरक्षा करने हेतु लोग राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना नहीं भूलते थे। अधिकांश लोगों का कहना था कि सेवा-कार्य हेतु पहुँचे लोगों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता सर्वप्रथम थे। वहाँ विश्व हिन्दू परिषद् के प्रति भी लोगों में श्रद्धा थी। विशेष रूपसे चिकित्सकीय सुविधा उपलब्ध कराने तथा प्रचुर मात्रा में राहत-सामग्री वितरित करने के लिए लोग विश्व हिन्दू परिषद् की सराहना कर रहे थे। विश्व हिन्दू परिषद् के राहत शिविर में जीवनोपयोगी छोटी-से-बड़ी हरेक सामग्री उपलब्ध थी, जिसे वजरंग दल के प्रान्तीय प्रभारी श्री बाल्मीकि जी स्वयं अपनी देख-रेख में वितरित कर रहे थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सम्बद्ध संस्था "राष्ट्रीय मेडिकल ऑर्गेनाइजेशन" के लगभग ७०० चिकित्सक विभिन्न क्षेत्रों में सेवारत थे। इनमें से कुछ चिकित्सक चल-वाहनी (२२) से तो कुछ अस्थाई चिकित्सालयों में प्रभावित लोगों की चिकित्सा कर रहे थे। ये सारी जानकारी मुझे वहाँ के ४०-५० स्थानीय निवासियों से प्राप्त हुई।

वहाँ से मैं अगले दिन जमात-ए-इस्लामी के बन्धु जिस राहत-शिविर पर उतरे थे, वहाँ के लिए चल पड़ा वे सभी "खिदमते-खल-कमेटी" के बैनर तले काम कर रहे थे। इस बैनर के तले लगभग १५० से २०० मुस्लिम बन्धु काम कर रहे थे। वहाँ पहुँचते ही मेरे द्वारा सेवा-कार्य से सम्बन्धित कुछ जानकारी प्राप्त करने की इच्छा पर उनके प्रमुख मोहम्मद भाई यह कहते हुए आपत्ति प्रकट करते हैं कि - "हमें इस सम्बन्ध में कुछ बताकर अपना प्रचार नहीं करना है। प्रचार तो उन्हें करना है जो जय श्रीराम बुलवाकर लोगों की मदद करते हैं।" निश्चित रूप से उनका इशारा संघ परिवार की तरफ था और इसके बाद वे न बताते-बताते अनेक ऐसी बातें बताते हैं जो विवादों को जन्म देने वाली होती हैं। बताने के क्रम में वे इस बात पर जोर देते हैं कि - 'विश्व हिन्दू परिषद् इस अवसर को भुनाने की ताक में है और ये लोग देश को तोड़ने वाली शक्तियाँ हैं।' अपने इस कथन की सत्यता हेतु वे कोई प्रमाण नहीं दे पाते हैं। पाकिस्तान द्वारा भेजी गई सहायता-राशि की आलोचना के सम्बन्ध में उनका कहना है कि यह गलत है क्योंकि पाकिस्तान को भी लोगों की मदद करने का नैतिक हक है। कश्मीर में पाकिस्तान द्वारा निर्दोष लोगों की हत्या पर ध्यान दिलाने के बाद वे बिफर पड़ते हैं। उनका कहना है कि ये बढ़ा-चढ़ाकर कही गयी बातें हैं। उनके अनुसार हिन्दू-जन मुसलमान को देखते ही उस पर पाकिस्तानी होने का शक करते हैं। यह सब बताते हुए वे मुझसे अचानक मेरी डायरी माँगते हैं और उन पृष्ठों को पढ़ते हैं जिनमें मैंने उनके द्वारा बतलायी बातें लिखी थी। उन पृष्ठों को पढ़ते हुए वे तैश में आकर उन्हें फाड़ डालते हैं और मुझे वहाँ से चले जाने का आदेश देते हैं। मेरे लाख पूछने पर भी वे उसे फाड़ने का कारण नहीं बताते हैं और अन्त में मुझे वहाँ से बिल्कुल अमानवीय तरीके से भगा देते हैं। वहाँ से लौटते हुए मुझे उसी शिविर के मोहम्मद सादिक नाम के व्यक्ति से जानकारी मिली कि वहाँ दिल्ली से जमात-ए-इस्लामी से सम्बद्ध कुछ मौलवी भी आए हैं जो लोगों को धर्म की शिक्षा देते हैं। वे लोगों को जा-जाकर बतलाते हैं कि यह भूकम्प अल्लाह को भूल जाने के कारण आया है, इसीलिए लोगों को भविष्य में ऐसी आपदाओं से बचने के लिए पाँचों वक्त की नमाज पढ़नी चाहिए। साथ ही वे अनुमान के आधार पर जगह-जगह टैण्टनुमा मस्जिद भी बनाते हैं जहाँ कि लोग नमाज अदाकर सकें।

वहाँ से मैं अगले दिन अर्थात् २५ तारीख को अंजार पहुँचा जहाँ भचाऊ की अपेक्षाकृत कुछ कम क्षति हुई है। वहाँ मैं सर्वप्रथम विनाशकारी भूकम्प से अनाथ हुए बच्चों के लिए विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा चलाए जा रहे वात्सल्य मन्दिर पहुँचा। वहाँ लगभग दस अनाथ बच्चे मग्न हो खेल रहे थे। यद्यपि उन बच्चों के चेहरे पर अपने आत्मीय को खोने का दुःख भरा भाव था, पर साथ ही था एक प्रकार की आश्वस्ति का भी भाव था। आश्वस्ति एक ठोस आश्रय की, आश्वस्ति विश्व हिन्दू परिषद् की सेवाव्रतिनी बहनों की ममतामयी छाँव की। तत्पश्चात् मैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विशाल राहत-शिविर में पहुँचा जो अकेला राहत शिविर था। उस परिसर में लगभग सौ टैण्ट लगाए गए थे, जिनमें लगभग पाँच सौ लोग रहते थे। वहाँ की उत्तम व्यवस्था, स्वच्छता, स्वयंसेवकों का रचनात्मक कौशल, सब कुछ, पूरा वातावरण ही स्वयंसेवकों के प्रति श्रद्धा जगाने वाला था। उन टैण्टों में रह रहे लोगों की सारी जिम्मेदारी संघ द्वारा निर्वहन की जा रही है। वहाँ रह रहे लगभग सभी परिवारों ने अपना कोई-न-कोई आत्मीय खोया है। उनके मुख से भूकम्प का वर्णन सुनकर करुणा का सागर उमड़ पड़ता है। वहीं पर मेरी भेंट 'रक्षित' नाम की सात वर्ष की प्यारी-मासूम बच्ची से होती है। उस मासूम बच्ची ने इतनी छोटी अवस्था में ही प्रकृति के इस विकरालतम रूप को देखा है। उसने अपने पिता, दादा, भाई जैसे कई आत्मीयजनों को खो दिया है। आज भी वह पिता की बाँहों में झूलने के लिए मचल उठती है। रह-रहकर पिता को याद करती हुई सिसक पड़ती है। ईश्वर उसे ऐसे कठिनतम क्षणों से उबरने का बल दे, इसी प्रार्थना के साथ मैं आगे बढ़ जाता हूँ। लेकिन इन सारी प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच भी धन्य है वहाँ के लोगों की जिजीविषा और उनकी मानवता। इसी स्थिति में भी वे आगत मददगारी का मुस्कराकर स्वागत करना नहीं भूलते और न ही भूल पाते हैं उनको सम्मान देना, बिठाना, चाय-पानी पूछना। वहीं पर और अन्य भी कई जगहों पर से सोनिया गाँधी के इस कथन के सम्बन्ध में बात करने पर कि "भूकम्प-पीड़ितों के साथ धर्म के आधार पर भेद-भाव किया जा रहा है" लोग बिफर पड़ते हैं और सोनिया गाँधी को बुरा - भला कहने लगते हैं। वे उनके इस कथन को गन्दी राजनीति से प्रेरित मानसिकता का परिचायक बताते हैं।

संकट की इस घड़ी में गुजरातवासियों के साथ सम्पूर्ण राष्ट्र की संवेदना जुड़ी है। इस संवेदना को उभारने में मीडिया ने भी बढ़-चढ़कर अपनी भूमिका निभायी है। परन्तु, डर है तो केवल इस बात का कि गुजरातवासियों के प्रति मीडिया द्वारा जगायी गई यह विश्व-व्यापी संवेदना क्षणिक न सिद्ध हो। आवश्यकता केवल इस जागृत संवेदना के स्थायीकरण की है। अगर ऐसा हुआ तो गुजरातवासियों के ही कथनानुसार "हमें इस स्थिति से उबरने में एक-डेढ़ वर्ष से ज्यादा समय नहीं लगेगा।" परमात्मा उनके इस आत्मविश्वास और नैतिक बल को बनाए रखें, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

प्रणय कुमार

वार्षिकोत्सव : एक रिपोर्टाज

“तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहें”, का जीवन-मन्त्र लेकर चलने वाले दीनदयाल जी ने भारतमाता के चरणों में अपना सम्पूर्ण जीवन न्यौछावर कर दिया। हम उनके वंशज अपनी पूरी आस्था के साथ कहते हैं कि पण्डित जी का जीवन हमारे राष्ट्र की अनुपम थाती है और उनकी साधना देश का जीवन्त इतिहास। युग पुरुष पं० दीनदयाल जी की स्मृति में राष्ट्र - निर्माण के संकल्प के साथ स्थापित पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय ने पण्डित जी के ८५वें जन्मोत्सव को अपने ३० वें वार्षिकोत्सव के रूप में मनाया। प्रस्तुत है कार्यक्रम की झलक -

प्रथम दिवस (२४ सितम्बर) -

भारतीय संस्कृति का साहित्य, संगीत, कला आदि से अटूट सम्बन्ध रहा है और संगीत ही देश की तरुणाई को प्रेरित करने का एक सशक्त माध्यम है। इन्हीं भावनाओं का प्रकटीकरण करते हुये विद्यालय ने अपने वार्षिकोत्सव का शुभारम्भ अन्तर्विद्यालयीय राष्ट्रीय गीत-गायन प्रतियोगिता के साथ किया जिसमें नगर के अनेक छात्र-छात्राओं ने भाग लेकर अपनी-अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भाजपा के अवध प्रान्त के तत्कालीन संगठन मन्त्री माननीय जयप्रकाश त्रिवेदी जी ने पण्डित दीनदयाल जी के चित्र पर पुष्पार्पण करके कार्यक्रम का उद्घाटन किया। पण्डित जी का कर्म के प्रति समर्पण, सादगी, सहृदयता के उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा “एकात्म मानववाद के इतने बड़े प्रणेता की यह सादगी व कर्मप्रियता सभी के लिये प्रेरक है।”

प्रतियोगिता में छात्रा वर्ग में कानपुर विद्या मन्दिर की छात्रा सोनम भदौरिया ने “अखिल विश्व में अतुलनीय हमारा भारतवर्ष” गीत प्रस्तुत करके प्रथम स्थान प्राप्त किया। सरस्वती ज्ञान मन्दिर, इन्दिरानगर की छात्रा वसुन्धरा मिश्रा ने “तू जिन्दा है तो जिन्दगी की जीत है” गीत सुनाकर द्वितीय स्थान तथा कैलाशनाथ बालिका विद्या मन्दिर की छात्रा प्रियंका तिवारी तृतीय स्थान पर रहीं।

छात्र वर्ग में दीनदयाल विद्यालय के अमित सिंह ने “मेरी मातृभूमि मन्दिर है।” गीत सुनाकर प्रथम स्थान व सरस्वती ज्ञान मन्दिर के छात्र सुमित राय ने “सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।” गीत सुनाकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

द्वितीय दिवस (२५ सितम्बर) -

२५ सितम्बर को विद्यालय का मुख्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि भारत सरकार के केन्द्रीय मन्त्री श्री शान्ता कुमार जी थे। कार्यक्रम का प्रारम्भ विद्यालय के छात्रों की आकर्षक एन.सी.सी. परेड से हुआ इसके पश्चात् विद्यार्थियों ने योग-व्यायाम का प्रदर्शन किया। मुख्य अतिथि जी ने हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट में प्रदेश में स्थान प्राप्त करने वाले मेधावी छात्रों को पुरस्कृत किया। विद्यालय रत्न का पुरस्कार द्वादश कक्षा के छात्र चि० अंकुर सिंह गौर को दिया गया। मुख्य अतिथि श्री शान्ता कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि “दीनदयाल विद्यालय, पण्डित जी का सच्चा स्मारक है।” पण्डित जी की सरलता, सहजता, कर्मठता और देश-प्रेम के कई प्रसंगों

को सुनाते हुये उन्होंने एकात्म मानववाद को पूँजीवाद और समाजवाद के परिप्रेक्ष्य में सर्वाधिक अनुकूल बताया। स्वामी विवेकानन्द के अनेक प्रसंगों को उद्धृत करते हुए श्री शान्ता कुमार जी ने कहा कि स्वामी जी गरीबी देखकर रो पड़ते थे और कहते थे कि मुझे मोक्ष नहीं चाहिये। मैं बार-बार जन्म लेकर दरिद्र-नारायण की सेवा करना चाहता हूँ।

उन्होंने कहा, “आजादी के बाद देश की प्रगति के लिये योजनायें तो बनीं परन्तु उन्हें क्रियान्वित करने वाले मनुष्य को बनाने की योजना नहीं बनी इसीलिये हम आज भी अँधेरे में भटक रहे हैं और इसके लिये दीनदयाल विद्यालय एक दीपक की भाँति सम्पूर्ण समाज को जीवन्तता प्रदान करने का कार्य कर रहा है”। वर्तमान सन्दर्भों में शान्ता कुमार जी ने कहा कि राजनीति को पेशा नहीं समझना चाहिये यह तो सेवा का एक माध्यम है। पैसे लेकर काम करना, धन के लिये ही सोचना यह गुलाम देश का लक्षण है। जब हम सभी लोग देश में इस भाव से काम करेंगे कि हम अपनी माँ का काम कर रहे हैं तो राष्ट्र फिर से अपने परम वैभव को प्राप्त करेगा।

विद्यालय के कर्मयोगी प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर त्रिपाठी जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि विद्यालय व्यक्ति निर्माण के कारखाने होते हैं जहाँ राष्ट्र देवता का प्राणवान-विग्रह स्थापित रहता है। विद्यालय प्रबन्ध समिति के यशस्वी सचिव श्री वीरेन्द्र जीत सिंह जी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात् कार्यक्रम अपनी पूर्णता को प्राप्त हुआ।

तृतीय दिवस (२६ सितम्बर) -

वार्षिकोत्सव के तृतीय दिवस में विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था ‘युग भारती’ का वार्षिक सम्मेलन आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विद्यालय कार्यकारिणी के सदस्य एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अखिल भारतीय सम्पर्क प्रमुख डा० जगमोहन गर्ग ने विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था युग भारती के साथ बैठकर उनका मार्ग दर्शन किया। युगभारती ने विद्यालय के छात्रों और इण्टर उत्तीर्ण कर चुके छात्रों के लिये ‘कैरियर काउन्सलिंग’ तथा विद्यालय में उन्नत कम्प्यूटर विज्ञान संस्थान के विकास की योजना बनायी।

सायं ६ बजे से विद्यालय के ‘माधव स्मृति’ क्रीड़ा परिसर में छात्रों ने इतिहास को जीवन्त प्रदान करने वाले अनेक रंगमंचीय कार्यक्रम प्रस्तुत किये। छात्रों की रंगमंचीय प्रस्तुतियों के क्रम में सर्वप्रथम विद्यालय के छोटे छात्रों द्वारा माँ भारती की वन्दना स्वरूप अभिनय गीत का प्रस्तुतीकरण किया गया। इस वन्दना गीत के प्रमुख पात्र-कुशाग्र द्विवेदी, कुशल द्विवेदी उत्कर्ष पाण्डेय, शिवनाथ सिंह, अंकुर रस्तोगी आदि थे। इसके पश्चात् छात्रों ने कव्वाली “ये उथल-पुथल उत्ताल लहर, पथ से न डिगाने पायेगी, का प्रस्तुतीकरण किया। इसे सौरभ त्रिपाठी, सुमित यादव, अमित यादव, निशान्त आनन्द ने प्रस्तुत किया। नाट्य प्रस्तुतियों में प्रथम प्रस्तुति पुनर्मूषकोभव (व्यंग एकादमी) मंचित किया गया। इसके प्रमुख पात्र मयंक गुप्त व निशान्त आनन्द थे। इसके पश्चात् “लोक-परलोक” ने भ्रष्टाचार और घूसखोरी पर गहरे कटाक्षों से प्रभावित कर दिया। इसके मुख्य पात्र- राजीव वर्मा, ऋषभ गुप्त, अंकित अग्रवाल, पुनीत दुबे, गौरव श्रीवास्तव व गौरव कुमार सिंह ने अपने अभिनय सभी दर्शकों का मन मोह लिया।

इस कार्यक्रम की सबसे सशक्त रंगमंचीय प्रस्तुति “कलिंग-विजय” थी। इस नाटक के प्रस्तुतीकरण की भावना इस बात को बताना था कि किस प्रकार “लाखों का सिर काटने वाला अशोक अहिंसा और मर्यादा के सामने नतमस्तक हो गया जिसका मुख्य सन्देश मानव को मानवता प्रदान करना है।” इस नाटक में सम्राट अशोक के रूप में संजय सिंह और कलिंग कुमार के रूप में अभिषेक अग्निहोत्री थे। इसके अन्य मुख्य पात्र मयंक गुप्त, आशीष शुक्ल, धर्मेन्द्र सिंह व अभिनन्दन तिवारी थे। अपने एकल अभिनय से सभी दर्शकों को मोहित करने वाले अभय मिश्र ने आर्थिक समस्याओं को दर्शाने वाला जीवन्त अभिनय प्रस्तुत किया।

इस मौके पर गतवर्षीय रंगमंचीय कार्यक्रमों में सम्मिलित छात्रों को पुरस्कृत किया गया जिसमें सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार चि० अभय मिश्र को गाँधी जी के जीवन-चरित्र के लिये तथा संजय सिंह को चन्द्रशेखर आजाद के लिये दिया गया।

मुख्य अतिथि जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि वर्तमान परिस्थितियों का परिसंस्करण छात्रों के द्वारा ही हो सकता है। जिस समाज में आदर्श छात्र अपनी भूमिका का सशक्त निर्वाह करते हैं, वह समाज श्रेष्ठ होता है।

चतुर्थ दिवस (२७ सितम्बर) -

वार्षिकोत्सव के अन्तिम दिन प्रातः वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसका विषय था “बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को खुला आमन्त्रण राष्ट्र के लिये घातक है।” इस ज्वलन्त विषय पर छात्र-छात्राओं ने अपने विचार प्रस्तुत किये। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डा० प्रकाश अवस्थी जी थे। इस कार्यक्रम का संचालन तरुण भारती के उपाध्यक्ष संजय सिंह व अभय मिश्र ने किया। वक्ताओं ने जोर देकर कहा कि “एक ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने हमें २०० वर्षों तक गुलाम बनाये रखा। आज तो देश में ४०० से भी अधिक विदेशी कम्पनियाँ हमारे देश से मुनाफा कमाकर विदेशों में भेज रही हैं। यह देश की तरुणाई के लिये खुली चुनौती है।

इस प्रतियोगिता में शिवाजी इण्टर कालेज के छात्र ‘सुरजीत सिंह’ ने पक्ष में प्रथम व विपक्ष में पं० दीनदयाल विद्यालय के छात्र ऋषि तिवारी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

मुख्य अतिथि जी ने भी विषय के पक्ष को अधिक महत्व देते हुये अपने विचार प्रस्तुत किये। इसी दिन सायं ६ बजे एक भव्य कवि गोष्ठी आयोजित की गयी जिसमें पं० धर्मपाल जी अवस्थी, श्री कमलेश द्विवेदी, निर्मलेन्द्र शुक्ल, सुमन जी दुबे, पं० ओमशंकर जी त्रिपाठी, मोहम्मद नदीम, श्रीष जी, व देवल आशीष आदि प्रमुख कवि थे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रीष जी ने सरस्वती वन्दना के साथ किया -

“बिसरैहों न मइया हमार सुधिया,

वीणावादिनी वरदायिनी हो,

श्वेताम्बरा हंसवाहिनी हो,

झलकाई द्यो मइया आखर निधियाँ,

विसरैहों न मइया हमार सुधिया।।”

“विद्यालय के छात्र कवि चि० शौर्यजीत सिंह ने शौर्य को ललकारते हुये कहा -

माता का दुग्ध पिया हमने, हममें उसका ही रक्त बहे
हम सबका पालन करने में, उसने अनन्त नित कष्ट सहे।

पुस्तकालय प्रभारी मयंकमणि जी ने इतिहास से प्रेरणा लेने के लिये प्रेरित किया :-

“हमने जब जब दर्शन खोया, पगलापन तन्हा ही रोया
चन्दा से डर जाने वाला, सूरज बाहों में ले सोया
सपनों को जी करके देखा, खुद ही विष पीकर के देखा
नीलकण्ठ सुकरात बनाना, गम खुलकर मुसकाया गोया।”

निर्मलेन्द्र शुक्ल जी ने राष्ट्र का ज्वलन्त विषय - कश्मीर की धरती पर यौवन के सिसकारी
भरने की बात कही -

साँझ उतर आयी है फिर मकान में आँगन में उजियारा सिसकियाँ भरे।

युवा कवि व छात्रों के चहेते देवल आशीष ने अपने अस्तित्व की रक्षा करने के लिये प्रेरित
किया-

हम दीपक हैं किन्तु गुलामी नहीं करेंगे सूरज की,
आखिर दीपक का भी स्तर होता है।।

बाह्य आडम्बरोँ पर कटाक्ष करते हुये देवल जी ने कहा -

यूँ भरम दिल को दिलाकर लौट आये,
फूल पत्थर पर चढ़ाकर लौट आये।
क्या करेंगे आचरण अपना बदलकर,
पाप धोने का तरीका जब सरल हो।

हास्य-व्यंग्य के कवि सनकी जी ने अपनी शैली में पाकिस्तानी घुसपैठियों को ललकारते हुए
कहा -

“सीमा के उस पार से कौं आये इस पार,
तुमको कुछ दिखता नहीं, उल्लू हो क्या यार।”

कबीर रहीम की परम्परा के कवि नदीम भाई ने कर्म की पवित्रता पर जोर देकर कहा -

काम कभी कोई ऐसा न करेंगे व्यक्ति,
रात में चैन से नींद न आ सके।
और कभी रात में ऐसा न कोई काम हो,
जो दिन में समाज को मुँख न दिखा सके।
साल भर ऐसा काम करना नहीं चाहिये,
कि बरसात भर रूखी - सूखी न खा सके।।

विद्यालय आचार्य व राष्ट्रीय स्तर के कवि श्री सुमन जी ने देश-प्रेम की भावनाओं को जगाते हुये कहा-

शौर्य की कथा ज्वलन्त लेखनी लिखेगी कैसे,
स्याही सूख-सूख जाती शब्द मिलते नहीं।
माँ के लाड़लों की गाथा कवि क्या बखान करें,
कण्ठ काँपता है और होंठ हिलते नहीं।
धन्य होती मौत भी लगा के इनको गले से,
आग के ये फूल रोज-रोज खिलते नहीं।
जाने कौन साँचे में विधाता इन्हें ढालता है,
आम साँचे में तो ये शहीद ढलते नहीं॥

विद्यालय के प्रधानाचार्य माननीय श्री ओमशंकर जी ने करगिल पर लिखी कविता के माध्यम से देशवासियों को सन्देश प्रस्तुत किया :-

विजय संकल्प अपने देश के घर गाँव में पहुँचा।
भरी चौपाल से चल नीम वाली छाँव में पहुँचा।
कि आसूँ पोंछती माँ की विजय मुस्कान में पहुँचा।
भविष्यत् को छिपाये कोख की सन्तान में पहुँचा।

इस कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण पं० धर्मपाल अवस्थी जी ने दूरदर्शन पर कटाक्ष प्रस्तुत किया-

“दूरदर्शन नहीं, दुष्प्रदर्शन है ये,
छोड़ कुछ सीरियल, सब बिना सार के,
देख सकते नहीं, साथ परिवार के,
हेय का श्रेय हेतु वर्जन है ये,
दूरदर्शन नहीं दुष्प्रदर्शन है ये॥

पं. धर्मपाल अवस्थी जी के कविता पाठ के उपरान्त कार्यक्रम का समापन हुआ।

कार्यक्रम संकलन

प्रसून गुप्त

संजय सिंह

एकादश

ये ऐसा क्यों हुआ?

तबाही का नयामंजर, जो देखा औ सुना हमने।

तो सीने में चुभा खंजर, जो देखा औ सुना हमने।

मगर हम देख ना पाये नो भीषण त्रासदी मन की
जिसे भुज कच्छ की मिट्टी बताये, क्या सुना तुमने?

कहीं पर चीख निकली है, कहीं पर चीख घुटती है।

कोई तड़पा बहुत अरसा, कोई बिन मौत मरती है।

हमारी खुशियाँ सच रोई, हमारे संग दो चीखे।

किसी को मिल गया फ़ोई, किसी को कुछ नहीं दीखे।

कहीं पर हाथ के कंगन, कहीं पर पैरों की पयल।

कोई थोड़ा कोई एकदम, किसी की आत्मा धायल।

ये पहले भी हुआ था दोस्तो! जिसे देखा नहीं हमने।

मगर कुछ ना समझ आया, वो देखा और सुना हमने।।

दफन कोई है कमरे में, कोई चौके में घुटता है।

किसी की माँग उजड़ी है, किसी का घर उजड़ता है।

कहीं माँ बेटे को खोजे, पुकारे बाप बेटी माँ।

कई सच अनसुने होंगे, निहारे पगली सी इक माँ।

हमारे दूध का कर्जा, चुकाने वाला खोया है।

हमारे साथ हँसता था, वो बिन माँ बाप रोया है।

ये दहशत से भरा माहौल ना देखा कभी हमने।

मगर सच भुज में गुजरा है जो देखा और सुना हमने।

न जाने कौन सी बात, धरती जो न सह पाई।

वो किसका कौन सा था पाप, जिससे धरती थर्रायी।

बदलते एक ही करवट, हजारों चीखें निकली थी।

किसी पर मौत मुसकायी, कहीं पर मौत फिसली थी।

कोई मलबे के नीचे से, खुदा को याद करता था।

मरी माँ से लिपटकर, कोई शिशु फरियाद करता था।

नहीं अब दूध मिलता माँ मुझे तो भूख लगती है।
 लहू पीकर रहा जिन्दा ये सच भी था सुना हमने॥
 मगर भूकम्प तो अरसे से, आता ही रहा घर में।
 मगर ऐसी तबाही तो कभी, लाता न था घर में।
 ये ऐसा क्यों हुआ अब की, समझ कुछ हम नहीं पाये।
 प्रकृति का कोप है शायद, ये हमको कौन समझाये।
 मुनाफा ज्यादा हो जिसमें, उसी सामान के कारन।
 बनाई जिसने थी बिल्डिंग, उसी हैवान के कारन।
 हज़ारों जाने अब की से गयी क्या कुछ किया तुमने।
 हज़ारों जाने जायेंगी अगर कुछ ना किया हमने॥

मयंक मणि

मैंने सपना देखा था -

थी तो वह पृथ्वी ही, पर पहचानने योग्य नहीं।
 पहली बार आने पर तो, थी यह हरी-भरी।
 क्या पता था, मनुष्य का छद्म -
 ऐसा कर जाएगा? सोचा भी नहीं था कभी -
 धरती का पुत्र ही, धरती को छल जायेगा।
 स्वार्थी था मनुष्य ही, जो धीरे-धीरे अपने को ही
 उसमें उलझाता गया, कहाँ गया उसका विज्ञान?
 क्या वह नहीं कर सकता
 दस हजार गुना ज्यादा आक्सीजन -
 देने वाले वृक्ष का आविष्कार?
 पर पृथ्वी को बनाया
 आधुनिकता ने ही जीवहीन
 वास्तव में वह प्रदूषण ही था।
 रो पड़ा था मैं यह नजारा देखकर,
 पर शायद, मैंने सपना देखा था।

शशांक पचौरी

नवम - 'ग'

अभिमान देश का यौवन है

धिक्कार सदा उस यौवन को श्लथ शान्त पड़ा जो सोता हो,
वह पौरुष भी है व्यर्थ जिसे आवेश न अरि पर होता हो,

बदनाम लहू वह है जिसमें किञ्चित् गरमी का नाम नहीं
नाहक जन्मा वह जीवन जो आया माता के काम नहीं।

भिक्षा पर पलना या जीवित रहना औरों की करुणा पर,
गंगा को भूल बिसार मनौती मान रहे तट वरुणा पर।

अभिमान देश का यौवन है वह भूखा या सूखा न रहे,
पश्चिम का लोभ बिसार कहीं कोई तुझको रूखा न कहे।

माता का दूध पुनीत इसे पानी के मोल न जाने दे,
भाई-बहनों का प्यार जिन्दगी के आँगन में आने दे।

पुरखों का ले आशीष मौत से जूझ निडर हो नौजवान,
रख लाज दूध की, शान पिता की, आगे बढ़ तू शक्तिमान।

उत्तर दो तोड़ो मौन, नहीं कायर हो, तुम हो वीर पूत,
लो शपथ चढ़ो उत्तुंग शिखर भारत माता के तुम सपूत।

कथनी-करनी का भेद मिटा तुम बनो अग्नि जैसे प्रचण्ड,
हो नाश विश्व की कुत्सायें, लिप्सायें हों सब खण्ड-खण्ड।।

- अभिषेक अग्निहोत्री

एकादश 'क'

गुजरात की धरती

गुजराती लोगों को हमने विलख-विलख रोते देखा है,
धरती के कुछ हेर-फेर से लाशों को ढोते देखा है।

जो बच्चे माँ की लोरी पर निशा बिताते थे,
स्तन से जो दुग्धपान करके इतराते थे,
जो माँ की वत्सला गोद में अकुलाते थे,
मैंने उनको रातों को सड़कों पर कटते देखा है।
मैंने उनकी किलकारी को गुमसुम हो जाते देखा है।

जो पीढ़ी उज्ज्वल भविष्य की तैयारी थी,
शिक्षा के विकसित विटपों की जो क्यारी थी,
शिक्षक के आँगन की जो फुलवारी थी,
मैंने उस नूतन पीढ़ी को खुद पर ही रोते देखा है।
बैसाखी खेतों पर मैंने दाना ही चुनते देखा है।

जो धन अर्जित कर रोज शाम को अपने घर को आते थे,
दिन भर बच्चे आशा लेकर पलकें रोज बिछाते थे,
जिनके घर वापस आने से बच्चे सब मुस्काते थे,
उनको मैंने तन्हाई में सुबक-सुबक रोते देखा है।
मैंने उनके अरमानों को खण्ड-खण्ड होते देखा है।

जिनकी उँगली थाम के बच्चे युगनिर्माता बनते थे,
जिनकी आँखों से अनुभव के अमृत निर्झर झरते थे,
जिनके माथे की धारी को हम युग के वक्ता पढ़ते थे,
उस बूढ़ी पीढ़ी को हमने काल ग्रास बनते देखा है।
धरती की अँगड़ाई को भी महाप्रलय बनते देखा है।

सुन्दर घर बनवा करके जो जीवन का सुख पाते थे,
ताजमहल सा दिखे इसलिये ईट-ईट सजवाते थे,
उन पीड़ित बेचैन जनों के जितने महल धरौंदे थे,
उन महलों को क्षण भर में ही माटी होते देखा है।
मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारों को एक साथ ढहते देखा है

क्या कोई उम्मीद नहीं है, उस धरती के जनजीवन में?
 क्या कोई अरमान नहीं है? उनके सूने मन-कानन में?
 एक नया उत्साह जगा है, पूरी दुनिया के लोगों में
 सर्जन का सैलाब उठा है, कोटि - कोटि बढ़ते हाथों में।

- कुलदीप सिंह राजपूत
 एकादश 'ख'

शुभकामना

मुदित मानस में सरस मंगल बहे
 सूर्य की ज्योतिर किरण हो भाल पर
 गो मुखी सा परम पावन तन सदा
 कर्म का ध्वज - दण्ड रोपे काल पर।

साधना की शक्ति संयम में बँधे
 कामनायें भावना में लीन हों
 सत्य-निष्ठा सतत् हो अनुषङ्गिनी
 प्राण गीता ज्ञान सर का मीन हो।

वर्ष नवप्राण परिपोषित करे
 गात सात्विक शक्ति से भरपूर हो
 इन्द्रियाँ विश्राम संयम में करें
 ताप तीनों कर्म पथ से दूर हों।



गुजरात काँप उठा

धरती ने जो ली अँगड़ाई,
गली-गली थर-थर थराई,
कैसी थी दरार वह आई,
घटा घोर सी आकर छायी।

ऐसे नहीं अगर दिन आते,
साथ हमारे वे मुस्काते,
वे भी होली साथ खेलते,
वे फिर ऐसे दुःख न झेलते,
जाने ये कैसे दिन आये,
सुख के समय में दुःख ले आये,
छोटे-छोटे थे वे बच्चे,
उम्र के थे वे अभी भी कच्चे,
अपनी माँ के राज दुलारे,
हो गये सब भगवान को प्यारे,
मुख पर होती शुभ किलकारी,
होली की सुन्दर पिचकारी,
अपनी माँ से सुनते लोरी,
पर रही कहानी कोरी-कोरी।

कुछ खेलते आँख मिचौली,
कुछ देखते अपनी पहली होली,
पर हुई ऐसी आँख मिचौली,
कि सज गयी खून की डोली।

मेरे प्यारे देश वासियों,
सुनो सुनो सब सुनो साथियों,
देश प्रेम का भाव जगाओ,
उन दुखियों से घुल मिल जाओ,
इस दुःख में होली न मनाओ,
फिर से नया गुजरात बसाओ,
होली में तुम रंग न भरना,
अपना यह व्रत-भंग न करना,
देता हूँ आवाज भाइयो,
आओ चलें गुजरात भाइयो।

हे भगवान करो अनुकम्पा,
कभी न आये धरती कम्पा
मिले सभी को खुशियाँ सारी,
हो हम सबकी यह तैयारी।

उत्कर्ष पाण्डेय

अष्टम - 'क'

“भारतीय परम्परा है कि राज्य धर्माधिष्ठित हो, धर्मनिष्ठ हो। अतएव आज भी यदि हम आदर्श जीवन-व्यवस्था को लाना चाहते हैं तो वह धर्म का आधार लेकर ही आयेगी। यदि इसके विपरीत हुआ तो वह व्यवस्था अभारतीय विचारों को लादना होगा। वह ग्राह्य न होगी और न टिकेगी ही।”

- पं० दीनदयाल उपाध्याय

दिनानुदिन के विविध आयोजन



वार्षिकोत्सव

हास्य प्रस्तुति लोक परलोक में चि० गौरव श्रीवास्तव,
धर्मराज की भूमिका में



वार्षिकोत्सव

चि० अंकुर सिंह गौर को विद्यालय रत्न का पुरस्कार
प्रदान करते केन्द्रीय मन्त्री श्री शान्ता कुमार जी



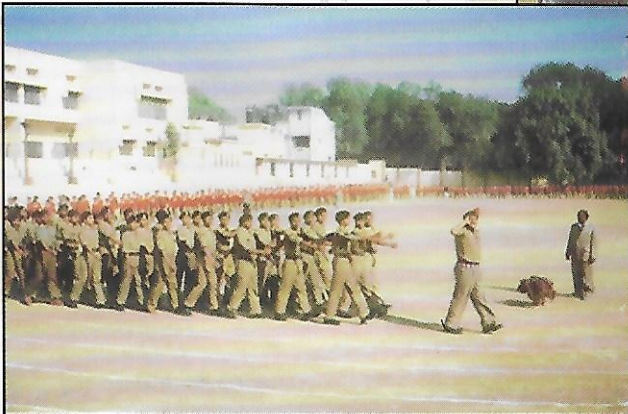
विद्यालय के 'संगणक केन्द्र' का शुभारम्भ।



आशीर्वचन

'साध्वी ऋतम्भरा'

श्री कृष्ण षष्ठी उत्सव पर विशाल कक्ष में
प्रवचन की मुद्रा में।



वार्षिक खेलकूद

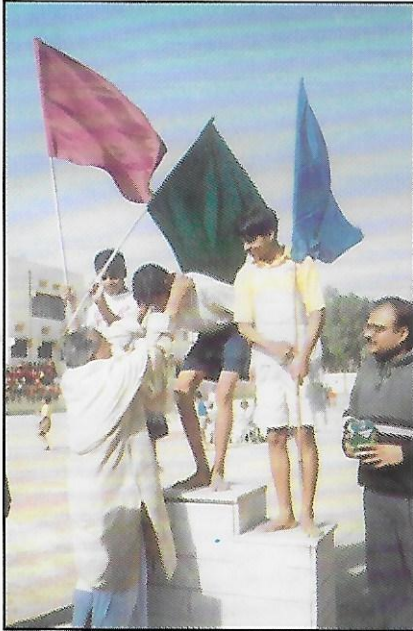
विद्यालय की एन०सी०सी० के छात्र मुख्य अतिथि
को सलामी देते हुए



वार्षिकोत्सव
पण्डित दीनदयाल जी के चित्र पर
पुर्ष्पापण के बाद
केन्द्रीय मन्त्री श्री शान्ता कुमार जी



वार्षिकोत्सव
सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार
छात्र चि० अभय मिश्र को
पुरस्कृत करते प्रसिद्ध समाजसेवी
डा० जगमोहन जी गर्ग



वार्षिकोत्सव
वार्षिक खेलकूद कार्यक्रम में
विजयी छात्रों को पुरस्कृत करते प्रधानाचार्य जी

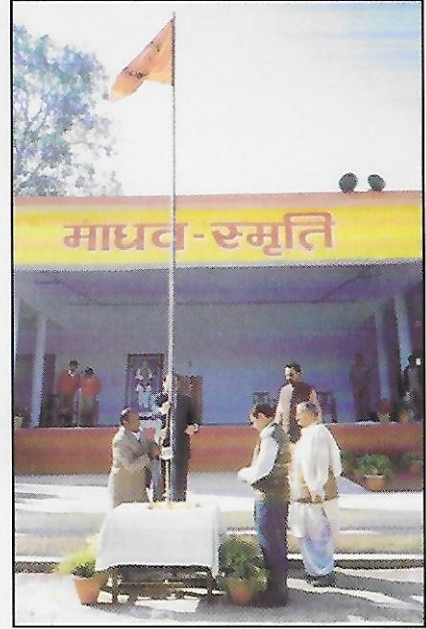


संस्कारों को जीवन्त रखने की पहल
बसन्त पञ्चमी पर विद्यालय के विशाल कक्ष में
आयोजित सामूहिक यज्ञोपवीत कार्यक्रम



वार्षिकोत्सव

इंटरमीडिएट की परीक्षा में प्रदेश में चौदहवाँ स्थान प्राप्त छात्र चि० आकाशदीप तिवारी को पुरस्कृत करते केन्द्रीय मन्त्री श्री शान्ता कुमार जी साथ में हैं प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर जी



ध्वजारोहण करते मुख्य अतिथि

श्री एन० एन० प्रसाद

(उपाध्यक्ष, कानपुर विकास प्राधिकरण)



वार्षिकोत्सव

विज्ञान प्रदर्शनी का दीप जलाकर उद्घाटन करते एच० बी० टी० आई० के 'आयल एण्ड पेण्ट' विभाग के अध्यक्ष डा० आर० सी० सिंह जी



श्रद्धांजलि,

पं० दीनदयाल जी की प्रतिमा को
निहारते केन्द्रीय मन्त्री श्री शान्ताकुमार जी

कश्मीर नहीं जाने पाये

भारत माता के मन्दिर में
दुश्मन कोई नहीं सुहाये।
चाहे जान भले ही जाये,
पर कश्मीर न जाने पाये॥
कहती माँ आज सपूतों से
कश्मीर बुलाता है तुमको।
जागो राणा, जागो भामा
कश्मीर जगाता है तुमको॥२॥
थी रात भयद सैंतालिस की
जब भारत का दिल दहल गया।
रो पड़ा बिलख कर ननकाना।
लरकाना उससे बिछुड़ गया॥३॥
कट गयीं भुजाएँ जननी की,
बन गया पाक का अलग देश
शोणित जल गया शहीदों का
टुकड़े-टुकड़े हो गया देश।
रक्षा कर लो डल, झेलम की
कहीं स्वर्ग न अपना छिन जाए।
यह जान भले ही जाये, पर
कश्मीर नहीं जाने पाये॥५॥

सुमित जायसवाल

नवम - 'क'

भारत देश

विश्व गुरु कहलाने वाला,
भारत देश हमारा है।
इस धरती का एक-एक कण,
हमें प्राण से प्यारा है॥१॥
वीर, शिवा राणा प्रताप ने,
इस धरती पर जन्म लिया।
गुरु गोविन्द लक्ष्मीबाई ने,
इसके हित बलिदान दिया॥२॥
आजाद, भगत, नेता सुभाष ने
इसका भाग्य सँवारा है।
विश्व गुरु कहलाने वाला
भारत देश हमारा है॥३॥
मिली हमें आजादी फिर भी,
कठिनाई में देश है।
आतंकवाद, घुसपैठ आदि की,
दिवक्त बड़ी विशेष है॥४॥
भारत माँ ने व्यथित हृदय से,
हमको पुनः पुकारा है।
विश्व गुरु कहलाने वाला,
भारत देश हमारा है॥५॥

गौरव मिश्र

नवम - 'क'

स्वतन्त्र भारत की कहानी

नई सुबह थी नया सूर्य था,
लालकिले पर बजा तूर्य था,
अंग्रेजों ने मुँह की खाई,
तब स्वतन्त्रता हमने पाई,
जन-जन के मन में उल्लास,
अपनों पर सबको विश्वास,
कुटिल चाल से पर अज्ञान,
खण्डित हुआ स्वदेश महान
शुरू हुआ नासूर रिसाव,
सत्ता की अब अन्धी दौड़,
स्वारथ ने दी आँखे फोड़,
कहलाते हैं जो रक्षक,
सही अर्थ में है वो भक्षक,
यह स्वतन्त्रता बलिदानी,
हम परखें अपना पानी,
क्या विदेशियों के हम दास?
बने रहेंगे दीन हताश,
नहीं नहीं यह कभी नहीं,
त्याग धर्म भी कभी नहीं,
हम सबके पूर्वज आदर्श,
हर्ष हर्ष हम सबको हर्ष।

रंजीत सिंह
नवम - 'क'

हे तुलसी

उद्भट कवि, 'मानस' प्रस्तोता
राम कथा के मानस होता
वन्दे तुलसी भक्ति विधायक
सौम्य-शील के हैं परिचायक
अगणित बार करूँ मैं वन्दन
स्वीकारो कवि मानस-पूजन।
शंखनाद कर राम कथा का।
पन्थ दिखाया मर्यादा का।
धन्य-धन्य तुम धन्य मनस्वी।
तुमसा कोई नहीं यशस्वी।
आज धन्य जगती है प्रमुदित,
नवयुग का मार्तण्ड मुदित।
पाकर राम कथा की गंगा,
नर-नारी का मन है चंगा।
रहती नहीं कुटिलता किञ्चित्,
इसका मिले प्रसाद कदाचित्।४।
सो, हे भक्त शिरोमणि तुलसी,
तेरी वाणी अमृत जल सी।
फिर अवतार तुम्हारा वाञ्छित।
सत्य नहीं तब होगा लाञ्छित।५।

निखिल सचान

नवम 'क'

सैनिक का संकल्प

उच्च हिमालय की चोटी पर खड़ा नौजवान था वह
अपनी माता की आँखों का चाँद था वह
भूल जगत् की सुख सुविधा को
मातृभूमि की रक्षा में तत्पर वीर जवान था वह
अपनी नव वधू को छोड़ यहाँ आया था वह
अपने कुल के भावी दीपक को देख नहीं पाया था
वह भूल कर सारे सुखों को
मातृभूमि के ऋण से उन्मत्त होने आया था वह
माता की रक्षा हेतु देना बलिदान था लक्ष्य उसका
शत्रु को घुसने न देना ही था प्रण उसका
भूल परिवार की चिन्ता को
मातृभूमि की रक्षा करने आया था वह
मरेगा तो शहीद होगा, जीवित रहेगा तो विजयी होगा
न संसार की चिन्ता उसे, न और कोई मन्तव्य था
बात थी तो एक ही बस
मातृभूमि की रक्षा करना ही कर्तव्य था उसका
युद्ध हुआ और विजयी हुआ वह,
लौटा जब अपने घर
देख माता का प्रफुल्लित मन,
देख पुत्र की बाल क्रीड़ाओं को
पत्नी की आँखों की चमक
जलमग्न हुई उसकी आँखें जब,
देखीं पिता की पुलकित बाँहें।

पुलकित अग्रवाल

गंगा तू है बड़ी महान

तू है पतित पावनी गंगे।
सचमुच बड़ी महान॥
नीति, धर्म का पाठ पढ़ाती।
देती सदाचरण का ज्ञान॥१॥
विष्णु के चरणों से तू झरती।
ब्रह्म कमण्डल में तू बसती॥
शिव के शीश विराज रही तू।
तू देती पुण्य का अतुलदान
तेरा कल-कल तीव्र प्रवाह।
हर मन को हरपाता है॥
रूप मनोहारी तेरा
सब को पास बुलाता है॥३॥
हे गंगे तू है बड़ी महान।
करूँ तेरी सुन्दरता का गान॥
तेरी उदारता को प्रणाम
दिलाया भारत को विश्व गुरु स्थान॥४॥
शुद्ध - सात्विक जल है तेरा।
जिससे जीवन रक्षित मेरा॥
जल जीवों का यहाँ बसेरा।
तू है परम पुण्य का धाम॥५॥
हे पतित पावनी गंगे
तू है बड़ी महान॥
नीति धर्म का पाठ पढ़ाती ।
देती सदाचरण का ज्ञान॥६॥

आशीष पाल
नवम - 'ख'

शौर्य की परिभाषा

बहुत दिनों के बाद बर्फ में लगी भयंकर आग,
बहुत दिनों के बाद नींद से जागा पौरुष आज,
बहुत दिनों के बाद हटा है वाणी का अवरोध,
बहुत दिनों के बाद जगा है सौ करोड़ का क्रोध।

बहुत दिनों के बाद मनोबल ने आकाश छुआ,
बहुत दिनों के बाद जवानी का अहसास हुआ।
बहुत दिनों के बाद भटक कर पायी हमने राह,
बहुत दिनों के बाद सुप्त मानस में नया उछाह।

बहुत दिनों के बाद हुई है छाती चौड़ी आज,
बहुत दिनों के बाद सिले होठों से फूटी आवाज,
बहुत दिनों के बाद शौर्य को मिला उचित सम्मान,
बहुत दिनों के बाद मिली है हमें सही पहचान,

बहुत दिनों के बाद निमन्त्रण देता है रणक्षेत्र,
बहुत दिनों के बाद रुद्र का खुला तीसरा नेत्र,
बहुत दिनों के बाद मरण बन गया पुनः त्योहार,
बहुत दिनों के बाद भावनाओं का ऐसा ज्वार।

बहुत दिनों के बाद लगे हैं तरुणार्ई के पंख,
बहुत दिनों के बाद बजा है पूर्ण विजय का शंख।

अमित कुमार गुप्ता

नवम - 'क'



पंचशील से और शान्ति के सिद्धान्तों से

अपनी कायरता को नाहक और छिपाना
 भारत माँ का दर्द न मिटा सके तो,
 रहने दो अब शान्ति नहीं तुम ला पाओगे,
 जनता को ही युद्ध भूमि में अब जाने दो।
 करना था जो किया न अब कुछ और करो तुम,
 घायल माँ के शिशुओं को ही बढ़ जाने दो।
 कवि का यह आह्वान कि वीर जवानों जागो
 हल्दी घाटी की माटी से हिम्मत माँगो।
 और देर मत करो कि आगे बढ़कर आओ,
 जो कुछ हुआ उसे भूलो, अब शस्त्र उठाओ।।
 देश-मान के लिए जवानी होम करो तुम,
 समझौतों का कोई नया न ढोंग करो तुम।
 राजनीति के मक्कारों को पहले मारो,
 इसके बाद विदेशी ताकत को संहारो।।
 गिरफ्तार करने का कोई झाम नहीं हो,
 गोली मारो सीधे कोई काम नहीं हो।
 अणु बम के धमाकों से कोई कभी न डरना
 टक्कर देकर अभी हिसाब बराबर करना।।
 दुनिया चिल्लाए तो उसको चिल्लाने दो,
 कोई दादा पड़े बीच में तो आने दो।
 अभी-करांची पर अपना झण्डा फहराना

इससे पहले नहीं लौटकर वापस आना।
 जितने भी मर जायें मरे कुछ सोच न करना,
 पीछे पाँव कभी मत अपना वापस धरना।
 मक्कारों की रूह काँप जाये वह बल हो,
 सौरज-धीरज से परिपूर्ण हमारा दल हो।
 लाशों के ढेरों पर चढ़कर आगे जाना,
 हिजबुल हो या उल्फा सब को सबक सिखाना।
 खून का बदला खून से लेना, दया न करना
 बीच में आये जो भी टुकड़े-टुकड़े करना।।
 प्रहरी भारत माँ के हो तुम, डरना कैसा,
 भारतवासी नहीं जानते मरना कैसा
 ऐसी मारो मौत पीढ़ियाँ थर-थर काँपे
 दर-दर भटके रूह कब्र की दूरी नापे
 ताण्डव करो मृत्यु का ऐसा दहल जायें दिल,
 पाक-परसती गद्दारी की जड़ें जायें सब हिल
 चाह यही जैसे भी हो आतंक मिटाओ
 समझौतों की यह बेसुरी न बीन बजाओ।

ओम कुमार शुक्ल 'साहिल'

द्वादश 'क'

भारत की अमिट निशानी है।

कैसे तुम्हें बतायें भैया! यह धरती की रानी है?
यह घाटी कश्मीर-भूमि जो आज बनी वीरानी है?
कैसे तुम्हें बतायें भैया, यह धरती की रानी है।

हर दिन आता चक्रवात, हर रात यहाँ तूफानी है,
स्वार्थ पूर्ति हित देखो कैसी पागल बनी जवानी है,
बहिनों का कोई भाई नहीं, हर गोदी आज मसानी है,
कलहण का प्यारा काश्मीर, यह पावन भूमि भवानी है,
कैसे तुम्हें बतायें भैया यह धरती की रानी है।

क्षण-क्षण मरता इंसान यहाँ, कोई प्रकोप हैवानी है,
हर ओर हो रही हाय-हाय, भाई चारा बेमानी है,
भक्तों की रक्षा में अक्षम, हो गए शम्भु वरदानी हैं,
धरती हुई खून की प्यासी, उसकी प्यास बुझानी है,
कैसे तुम्हें बतायें भैया! यह धरती की रानी है।

जूझते सहोदर काल बने, कलियुग की यही निशानी है,
बेफ़िक्र हाथ धो रहा शत्रु बहती गंगा का पानी है,
अफ़गानी, चीनी, अमरीकी, बस लेबल पाकिस्तानी है,
हँसती खिलती कश्मीर धरा बेनूर उदास मसानी है,
कैसे तुम्हें बतायें भैया? यह धरती की रानी है।

यह बटवारे का घाव बना नासूर नीति शैतानी है,
आतंकवाद है विप्लव रूप शैतानी रुह पुरानी है,
पर बालू की दीवार नहीं यह नींव पताल समानी है,
इसके शिखरों पर फहराती बलिदानी ध्वजा पुरानी है।
कैसे तुम्हें बतायें भैया? यह धरती की रानी है।

हम जाग गए भारतवासी, माता की लाज बचानी है,
ये मुटठी भर आतंकी हैं, हम एक अरब सेनानी हैं,
फिर काश्मीर के दुश्मन को यह बात आज समझानी है,
भारत माता का मुकुट यही, भारत की अमिट निशानी है,
हम तभी गर्व से कह सकते, हाँ, यही विश्व की रानी है।

प्रशान्त द्विवेदी

एकादश 'क'

चिरन्तन शान्ति

हम मुस्काते फूल धरा के, तुम भी तो पहचानो उपवन।
धरती के शृंगार के लिए, न्यौछावर तन-मन-धन-जीवन।
सुन्दर, सजल लग रहे निर्मल, सब प्रपञ्च हैं छल या माया।
अखिल विश्व की साँस, साँस को छल जाती उसकी ही छाया

धरती को हम स्वर्ग बनाएँ, ऊँच नीच का भेद मिटाएँ।
प्रेम-वृत्त में पल्लव फूटें, देश प्रेम की ज्योति जगाएँ।
अखिल विश्व परिवार सदृश हो, शान्ति धर्म को मिले प्रतिष्ठा।
कर्मशील हर मानव जग का, जनकल्याणी जागे निष्ठा।

मिटें दुष्ट-दुर्जन, भय भागे, सम्मानित युग के सज्जन हों।
फिर से दीनदयाल जनम लें, देश-प्रेम पूरित जन-जन हों।
साक्षर हों बालक बाला सब, ज्ञान दीप का बड़े उजाला।
उग्रवाद मिट जाय धरा से, भड़के कहीं न कोई ज्वाला।

एक ईश के सभी उपासक, नाम अलग हों तो भी क्या है?
पुष्प सदा ही पुष्प रहेगा, उपवन भिन्न रहे तो क्या है?
हो मुस्कान सभी चेहरों पर, पीड़ा से न किसी का नाता।
धर्म सनातन विश्व मान्य हो, मन-मन्दिर हो दीप सजाता।

बीते काल-रात्रि कलयुग की, उपजे दीन-विश्व में आशा।
सतयुग का वैभव हो फिर से, बुझे सभी की स्वर्ण पिपासा।
अब प्रमाद का समय नहीं है, बड़ा परिश्रम करना होगा।
बलिदानों से हिचक न क्षण भर, दुष्ट दमन भी करना होगा।

हे! द्रष्टा हे! युग के त्राता, दे दो शक्ति मुझे भी थोड़ी
पुनः एक कर सकूँ विश्व को, सत्य-शील की अनुपम जोड़ी
बहुत युद्ध सह चुकी धरा यह, चाहे मन की शान्ति चिरन्तन
उन्नति के पथ पर हर मानव, प्रेम गीत गाए हर कण-कण।

शौर्यजीत सिंह "अंकुर"

एकादश (क)

॥महात्मनस्तुलसीदासस्य युगबोधः॥

महान् चासौ आत्मा महात्मा स एव भवति, यः देशकाल-वातावरणानुसारम् आत्म-समकालस्य युगस्य स्वरूप-स्वभावयोः युगानुरूपम् उदारबुद्ध्या स्वसाहित्येन निजाचरणेन वा समकालिक समाजस्य सुखाय हिताय च यथार्थं प्रातिनिध्यं विदधाति/दृष्ट्याऽनया तुलसीदासः महात्मा तु आसीदेव, बहुज्ञः अपि आसीत्। अतएव-नानापुराण निगमागम संमतस्य रामचरित मानसस्य रचनायां प्राभवत्।

युगस्य वर्तमान समस्यानां सम्भावनानाञ्च अनुरूपम् आर्य संस्कृतेः यत् परिष्कृतं रूपं तुलसीदासः अद्यतः प्रायः सपादचतुःशत वर्ष पूर्वमेव अस्माकं समक्षं समदर्शयत्, तत् तदानीं यावदासीत् सत्यम्-अद्यापि तावदेव यथार्थम् अस्ति। दृष्ट्या अनया वयं तं “युगर्षिः” इत्युपाधिना विभूषयितुं वाञ्छामः। “युगर्षिः” तस्यदिव्यात्मनः एकः भौतिकः उपाधिः, यो निजयुगस्य नानाविधबहुक्षेत्रीयसमस्याः अन्तर्दृष्टिसात्कृत्य, अतीतात्तन्मूलं गवेष्य, भविष्यत्सम्भावनानां तादृशं यथार्थं चित्रम् अस्माकं समक्षं कर्तुं प्रभवेत्, यदस्मान् सततमेव नवीनानुभूत्यनुरूपं सुसंस्कृतमानवजीवनस्य आदर्शमयेन आलोकेन प्रतिभासितान् प्रत्याययेत् सममेव च यस्मिन् ऐतिहासिक पृष्ठभूमौ यथार्थजीवनरङ्गैः, समाजस्य वाञ्छितस्वरूप कल्पनां रूपायित्रीभिः रेखाभिः, आदर्शमयी रमणीयता स्पृहणीयता च उद्भाविता स्यात्।

सन्तकविना तुलसीदासेन निजे “रामचरितमानसे” यद् यथार्थं चित्रं प्रस्तुतम्, तत्र उपरितनाः सर्वा एव विशेषताः समुपलभ्यन्ते, रामचरितमानसे युगस्य-कलियुगस्य-तत् समग्ररूपम् अङ्कितम् अस्ति, यदस्य युगस्य सामाजिक-सांस्कृतिक धार्मिक-राजनैतिकादीः प्रायः निखिल क्षेत्रिय जनजीवनस्य नानाविधसमस्याः परिपाच्य उद्भूतम्, यच्चानेन सन्तकविना लोककल्याणस्य तूलिकया यथाविधि, यथासमयं यथेष्ट-रूपेण च संवरीय (सुशोभनीकृत्य) सर्वेषामेव कृते रमणीयं वरेण्यं च व्यदधात्।

रामचरितमानसं कलियुगस्य एकमात्रं प्रतिनिधिमहाकाव्यम्। किंवा महाशास्त्रम् अस्ति। कलियुगस्य समस्याभिः समं जायमानानां तास्वेव च योयुद्धमिग्रयमाणानाम् अस्माकं कृते इदमेव हितकरतरं यद् वयं - रामचरितमानसस्य समकालिकोपादेयतोपयोगितयोरेव विशेषं सावधाना भवेम तदैव च वयं ततो यथेष्टं लाभान्विता भवितुमर्हाम।

सन्तकवेः तुलसीदासस्य संकल्पः स्पष्ट एवासीत्। सः स्वान्तःसुखस्य सोपानात् लोकमंगलस्य क्षेत्रमवातरत् तस्यान्तरिकानुभूतेः अयं निर्णयः सर्वथा सत्यम् आसीत् यद् वास्तविक-स्वान्तःसुख-लोकहितयोश्च न कोऽपि तात्त्विको भेदो वर्तते, भेदः केवलं नामोपाध्योरेव तस्य “सर्वभूतहितवादः” न केवलं तस्यान्तश्चेतनायां समरस अभवत् अपितु तस्य दृष्टौ वाण्यामपि च स एव भावोऽभिव्यज्यमान आसीत्। तस्यकवित्वप्रतिभा सर्वत्र सर्वदैव च लोकहिताय “रामचरितमानसे प्रतिभासिता अभवत्। तस्य काव्यस्य शुभारम्भ एव समष्टेः समष्टये एव प्रवृत्तो दृश्यते। विलोक्यताम्-नानापुराणनिगमागम ...मातनोति (बा०का० मंगला०-७)” अत्र ध्यातव्यानि पंच मुख्य वस्तूनि सन्ति - (१) सर्वेषां वेद-पुराण-शास्त्राणामन्य प्रकारस्यापि लौकिकसाहित्यस्य निजरामचरितमानसे उपयोगः (२) वैयक्तिकसुरव-रूपस्य मनःसुखस्य स्थाने समष्टिसुखरूपस्य “अन्तःसुखस्योपयोगः आत्मसुखलाभस्य सङ्कल्प इत्याशयः। (३) कस्यापि प्राकृतजनस्य अतिसाधारण-व्यक्तेर्वा स्थाने लोकनायकस्य रघुनाथस्य गाथाया एव - यत्कृते कालिदासाद्याः कालजयिनो महाकवयोऽपि नितरामस्पृहयन्, निजराचरितमानसस्य कथावस्तु-रूपेण चयनम्। (४) सन्नपि संस्कृते विद्वान् संस्कृतस्य समकालीनां

सृष्टृपरिपार्टी विहाय तत्स्थानेऽत्यन्तं संघर्षं सोढ्वाऽपि हिन्दी भाषायाः स्वीकरणम् । (५) तथा च आत्मानं प्रथमपुरुषैकवचनात्मिकां व्यक्तिवाचिकां संज्ञां (लोकसेवकः तुलसी) रूपेणोपस्थापयन् तत्र आतनोति” इति विस्तार-बोधिकायाः प्रथमपुरुषैक वचनान्तक्रियायाः प्रयोगकरणम् ।

एभिरशेषैरेव संकेतैस्तस्य “लोकहितं” परिलक्ष्यते यतः- उपर्युक्ताभिः सर्वाभिः दृष्टिभिः सः “अहम्” (मैं) इत्यस्य स्थाने “वयम्” इति शब्दम्, व्यष्टेः स्थाने च समष्टेः प्रतिष्ठापनरूपस्य निजं संकल्पं व्रतम्-व्यक्तमकरोत् । एतदतिरिक्तंच-सियाराम मय सब जग (बा०का० दो० ७-८) अनेन कथनेन सः सम्पूर्ण विश्वस्यहित सम्पादन एव निजाराधनोपासने चरितार्थे सफले च मन्यते । तस्य वाणी कथं सर्वभूतहितंलक्ष्यमकरोत् इति तावद् विलोक्यताम् - “कीरति भनिति भूतिभलिसोई । सुरसरि समसबकर हितहोई ।। (बा० दो० १३-१४)

वयं कदाचित् आशंकिता भवेम यत्-यत्कार्यं या प्रेरणा, या च भविष्यवाणी तुलसीदासः कलियुगस्य जनजीवनाय प्राकटयत्, किं तत् तत्पूर्ववर्तिनौ परमसिद्धोमहाकविः व्यासः वाल्मीकिश्च नैव कर्तुं प्राभवेताम्’ अस्य स्पष्टं समाधानं तावद् इदमेव सम्भवति यत् - कोऽपिकविः देश-कालयोः दृष्ट्या अन्य-कविभिः कवित्वमय्याचेत् दृष्ट्या सजातीय एव भवति, न तु विजातीयः सर्वेषामेव कवीनां कवित्वधातुः समान एव भवति, परन्तु कश्चनापि कविः निजसामयिक देशकालयोः सीमानं लङ्घयित्वा समकालिकीः समस्याः टुक्कृत्य न्यक्कृत्य वा न किमपिलिखति सः यत् किमपिलिखति तत्र सर्वाभिः दृष्टिभिः “वर्तमानः” एव सर्वथा मुखरः प्रसरश्च राराजते ।

तुलसीदासस्य युगबोधः तस्य भावराशेः, विचारसम्पत्तेश्च, सन्तुलन-समन्वयाभ्यामेव प्रादुर्भूत आसीत् । सः न केवलं भावुक मात्रं, न वा केवलं शुष्को विचारशीलश्च । तत्र द्वयोः तत्त्वयोः समुचितः सन्निवेशः आसीत् । सः निजं सिद्धान्तगतमौचित्य निर्वाहमपि रामचरितमानसे तस्मादेव स्तरात् समपादयत्-यस्मात् स्तरात् काव्यसाहित्यगतयोः औचित्यस्य ।

तुलसीदासस्य युगबोधः, काकभुशुण्डिसंवादे कलियुग-वर्णने काकमहाशयस्य शब्दः अतितरां स्पष्टः अस्ति । कलियुगस्य-स्पष्टं चित्रं दर्पणइवास्माकं समक्षमायाति । भवेत् पुनः काममिदं चित्रमधुनातनं चतुःपंचशत वर्ष पूर्व-कालीनं वा । तस्य युगबोधः कलियुग वर्णने कियान् शुद्धोऽवतीर्णः पश्यन्तु - पूरब कल्प एक प्रभु जुग कलियुग मलमूल । नर अरुनारि अधर्मरत सकल निगम प्रतिकूल ।। (उ० का० १६)

यावदवधि तस्य युगबोधस्य प्रतिक्रियायाः प्रश्नः अस्ति, सम्पूर्ण रामचरितमानसस्य घटनाः चरित्राणि च अस्य प्रश्नस्य समाधानाय अलम् । तस्य युगबोधस्य प्रतिक्रिया तस्य लोक कल्याणमय्यां साधनायाम् आसीत् । सा च तेन रामचरितमानसस्य माध्यमेन समपूरयत् रामचरितमानसस्य-साहित्यिकी, धार्मिकी, सांस्कृतिकी, सामाजिकी, आध्यात्मिकी च सिद्धिः, तस्य लोकहितैषिण्याः साधनाया एव सः परिणामः, यदर्थे न केवलं हिन्दीभाषी भारतवर्ष एव, अपितु अन्यान्यभाषा भाषी समग्रसंसारोऽपि समान-रूपेण कृतज्ञो वरीवर्तत इति ।।

- डॉ० विश्वम्भरनाथ द्विवेदी

अनुशासनम्

निर्धारितानां नियमानां पालनं गुरुणाम् आज्ञा-पालनम् अनुशासनं कथ्यते। अस्मिन् संसारे समाजस्य विकासाय अनुशासनस्य च महती आवश्यकता अस्ति। अनुशासनेन मनुष्यस्य उच्छृंखलता विनश्यति मानवीय गुणानां च विकासः भवति।

अनुशासनेन एव राजमार्गे यानानि सुरक्षितानि चलन्ति। जनाः समाजे निर्भयाः निवसन्ति। सूर्यः समये उदेति अस्तं च गच्छति। यत्र अनुशासनस्य पालनं न भवति तत्र संकटमेवापतति। अनुशासनं सहजं कर्म अस्ति।

अनुशासनेन जनः सर्वेषां स्नेहभाजनं भवति। तस्य भविष्यं च उज्ज्वलं भवति। तस्य संसर्गेण अन्येऽपि प्राणिनः पूताः भवन्ति। अनुशासनम् एकः दिव्यः गुणः अस्ति। यः मानवः यादृशाणाम् पुरुषाणाम् संगतिं करोति। सः तादृश एव भवति। यथोक्तम् -

“संसर्गजाः दोषगुणाः भवन्ति”

सर्वेऽपि जनाः अनुशासनं स्वकर्तव्यत्वेन पालयेयुः। अतः सर्वे स्वजीवने समुन्नतिं वाञ्छन्ति। अनुशासनं विना मनुष्यस्य जीवनं सफलं न भवति। जीवनस्य साफल्यं अनुशासनेनैव वर्तते।

अतः अस्माभिः सदा स्वजीवनसाफल्यायानुशासनं पालनीयम् ॥

सोम कान्त मिश्रः

कक्षा - नवम्

अस्माकं मातृभूमिः

“जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी”

जननी जन्मभूमिः च स्वर्गात् श्रेष्ठतरा अस्ति। अस्माकं जननी जन्मभूमिः च भारतभूमिः अस्ति। यथोक्तम्-

“माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।”

जन्मभूमिः अस्माकं जननी अस्ति। यतो हि अस्याः, एव क्रोडेक्रीडित्वा वयं स्वशैशवम् अतिक्रम्य कौमारं प्राप्ताः। अस्माकं प्रियदेशः भारतवर्षः अद्वितीयः अनुपमः चास्ति। वयं एवं मन्यामहे यत् सर्वदा सर्वथा च भायाम् तेजसि रतत्वात् एव भारतमिति अस्माकं प्राणप्रियस्य देशस्य प्राचीनं नाम। अस्य उत्तर दिशायाम् स्थितः हिमालयो नाम गिरिः अस्ति। हिमालयस्य हिमधवलानि, विविध पुष्प-फलयुक्तानि वनानि च शोभन्ते। अयं पर्वतराजः भारतवर्षस्य उत्तरसीमायां स्थितः सः प्रहरी इव सततं शत्रुभ्यः रक्षति। यथोच्यते -

“उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।

वर्षं तद् भारतं नाम, भारती यत्र सन्ततिः॥”

भारतस्य दक्षिण भागे विशालः हिन्दमहासागरः स्थितः अस्ति। अयं महासागरः दक्षिणभागे अस्माकं मातृभूमेः

भारतस्य चरणौ प्रक्षालयति । अस्माकं देशे समये-समये च अस्य उत्थानाय, एकतास्थापनाय, घृणायाः विनाशाय च अनेके महापुरुषाः प्रादुर्भूताः । भगवान् श्री रामः, श्री कृष्णः, महाराणा प्रतापः, गुरु गोविन्द सिंहः, चन्द्रशेखरः आजादः, भगतसिंहः, चेत्यादयः अस्माकं देशस्य गौरवमवधयन् ।

अत्र धेनुः माता इव पूज्यते । शास्त्रेषु अपि अस्य गौरवस्य वर्णनमस्ति । अस्य निवासिनः सम्पूर्ण विश्वस्य जनान् भ्रातृ समान् स्वीकुर्वन्ति । ते सम्पूर्ण विश्वं स्वगृहमिव मन्यन्ते

“अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम् ।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥”

तथा मनुस्मृतौ -

“एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादत्र जन्मनः ।

स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्याः सर्वमानवाः ॥”

अस्माकं देशे विविधाः भाषाः सम्प्रदायाः च सन्ति । परमस्माकं भारतभूमिः एका । ते सर्वे एव भारतस्य सुताः सन्ति । भारतीयाः जनाः धन्याः, भारतस्य संस्कृतिः धन्या, भारतवर्षः हि धन्यः ।

“धन्यो हि भारतो वर्षः, धन्या भारत संस्कृतिः ।

भारतीयाः जनाः धन्याः, धन्याऽस्माकं परम्परा ॥”

देवाः अपि अत्र जन्मप्राप्तुम् इच्छन्ति यत् शास्त्रेष्वपि कथ्यते । तेऽपि भारतस्य गौरवगीतानि गायन्ति ।

“गायन्ति देवाः किल गीतकानि,

धन्यास्तु ते भारत-भूमि भागे ।

स्वर्गापवर्गास्पद मार्ग भूते,

भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥

कलाकृतिषु अपि अस्माकं देशः जगति सर्वश्रेष्ठः अस्ति । खजुराहो कोणार्कादि मन्दिराणि, राजमहलम्, कुतुबमीनारः च भारतस्य शिल्पकलायाः उदाहरणानि सन्ति । अन्ते अहं ईश्वरं प्रार्थये-”

“वयं मातृभूमेः सुताः पुण्य भूमेः,

प्रतिष्ठास्वदेशे विदेशे च यस्याः ।

ऋषीणां मुनीनां कवीनाञ्च माता,

भवेत् रक्षकः सृष्टिकर्ता विधाता ॥”

रोहित कटियार

सप्तम - 'क'

आदर्शः गुरुः

शास्त्रेषु गुरोः अतिमहत्त्वं वर्णितम् अस्ति। उक्तं च -

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

कोऽपि गुरुः सदैव स्वशिष्यस्य उत्कर्षं वाञ्छति एव। आदर्शः गुरुः सः अस्ति, यः यथा छात्रान् उपदिशति, तथैव स्वयमपि आचरति। छात्राः अपि गुरुं दृष्ट्वा, तस्य आचरणं व्यवहारं च दृष्ट्वा तथैव आचरणं कुर्वन्ति। अतः छात्रेभ्यः आदर्शगुरोः महती आवश्यकता सदैव भवति। आदर्श गुरोः इदं कर्तव्यम् अस्ति यत् सः शिष्यं पुत्रवत् गणयेत्, तं पापात् निवारयेत् सन्मार्गम् च आनयेत्। तस्य इदं कर्तव्यम् अपि अस्ति यत् सः छात्रं सद्गुणान् शिक्षयेत्, तं सत्कर्मसु योजयेत्, तं हितकार्येषु नियोजयेत्, तं सर्वाः विद्याः स्नेहेन पाठयेत् च।

आदर्शः गुरुः सदा छात्राणां हितम् इच्छति। सः शिष्याणां हितार्थं बहूनि दुःखानि अपि सहते, परन्तु सदैव तेषां हितं करोति। सः सदा स्वसमयं पठने-पाठने च व्यतीतं करोति। सः सदैव आस्तिकः, धार्मिकः विनयशीलः सुशीलः सदाचारी च भवति। अधुना एकम् उदाहरणं पश्य -

रामकृष्णपरमहंसः विवेकानन्दश्च गुरुशिष्योः आदर्शयुगलः आसीत्। एकस्मिन् आदर्शगुरोः रूपे परमहंसस्य जीवनचरित्रम् धर्माचरणस्य व्यावहारिक विवरणम् विद्यते। तस्य कृपया विवेकानन्दः न केवलं भारतवर्षे अपितु पाश्चात्यदेशेष्वपि व्यापक डिण्डिमघोषं कृतः। एवमेव विधा रामकृष्णः अध्यात्मं ईश्वरं च लब्ध्वा महतः आदर्शगुरोः प्रतिष्ठाम् अलभत, विवेकानन्दः तस्य आदर्शशिष्यः चाभवत्।

आदर्शगुरुः शिष्यः चापि ईश्वरम् इति प्रार्थयतः -

सहनाववतु, सहनौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवावहै।

तेजस्विनावधीतमस्तु, मा विद्विषावहै॥

सन्तपुरुषः कबीरोऽपि ईश्वरात् श्रेष्ठतरं गुरुमन्यते।

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागौ पाँय।

बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय॥

वर्णाश्रमप्रधाने भारतवर्षे पुरा गुरुकुलशिक्षायाः प्रचलनमासीत्। गुरुकुलं प्रविष्य ब्रह्मचारिणः गुरुकुलस्य नियमान् यथावत् परिपालयन्तः विद्यायाः अध्ययनम् अकुर्वन्। हन्त! अधुना तेषां अस्तित्वं केवलं स्मरणमात्रं एव अस्ति। तेन भारतस्य भारतीयता समाप्तप्राया दृश्यते। अतः निष्कर्षरूपेण नूतन पुरातन शिक्षाव्यवस्थयोः मध्ये समन्वयं विधाय नूनं राष्ट्रपुरुषाणां राष्ट्रोन्नतेः विधानं शक्यते।

इत्यलम्।

सुबोध राजपूत

नवम् 'क'

संस्कृत भाषायाः माहात्म्यम्

संस्कृत भाषायाः भारतीय जीवने महत्वपूर्णस्थानं विद्यते। संस्कृत-भाषायाः सुरभारती, देववाणी, देवीवाक् गीर्वाणवाणी, देवभाषा, अमरभारती इत्यादीनि बहूनि नामानि प्रसिद्धानि सन्ति।

इयं भाषा न केवलं भारतस्य अपितु विश्वस्य प्राचीनतमा भाषा मन्यते। इयं भाषा एतावती समृद्धा अस्ति यत् प्रायः सर्वासु भारतीय भाषासु न्यूनाधिकरूपेण जननी मन्यते।

विश्वस्य आदिमः ग्रन्थः ऋग्वेदः संस्कृत भाषायामेवास्ति। अन्ये च वेदाः यथा यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदश्च संस्कृत भाषायामेव सन्ति। आयुर्वेद धनुर्वेदगन्धर्व वेदार्थर्व वेदाख्या चत्वारः उपवेदाः अपि संस्कृते एव विरचिताः। सर्वे उपनिषदः संस्कृत भाषायामेव उपनिबद्धाः। शिक्षाकल्प निरुक्त ज्योतिष छन्दोव्याकरणानि समस्तानि वेदाङ्गानि संस्कृते एव प्रणीतानि। षड् भारतीय दर्शनानि सम्पूर्णानि धर्मशास्त्राणि अष्टादश-पुराणानि तावत् संख्यकानि उपपुराणानि च संस्कृते एव विलिखितानि। आदि काव्यं वाल्मीकि-रामायणम् अध्यात्मानंदाद्भुतरामायणानि व्यासकृतं महाभारतं कौटिल्य प्रणीतम् अर्थशास्त्रं कालिदासाश्वघोष भारवि माघ श्री हर्ष प्रभृतिभिः महाकविभिः प्रणीतानि चान्यानि महाकाव्यानि संस्कृत भाषायामेव विद्यन्ते। पंचतन्त्रहितोपदेशादिक ग्रन्थाः संस्कृते एव लिखिताः। एवमस्माकं सम्पूर्णं प्राचीनं ज्ञानं विज्ञानञ्च संस्कृते एव निहितम्। किं बहुना अस्माकं देशस्य संस्कृतिरपि संस्कृते एव संनिहिता।

संस्कृत भाषायाः साहित्यमतीव सरसं वर्तते तथास्याः व्याकरणं नितान्तं व्यवस्थितम् अस्ति। व्याकरण छन्द बन्धनेऽपि संस्कृत साहित्यं वैदिककालादारभ्य अद्यावधि सुललितं विराजते। वर्ण्य विषयाणां बाहुल्यात् अस्याः भाषायाः शब्दकोशः अति विशालः। वाण्येका समंलकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते इति प्रसिद्धाः सूक्तिः संस्कृतस्यैव। अन्यानि च बहूनि जीवनोपयोगीनि प्रेरणाप्रदानि सुभाषतानि संस्कृते एव प्राप्यन्ते।

समस्तानां मानवीय संस्काराणां च उद्गमस्थानं संस्कृतमेव। राष्ट्रस्य एकतायाः अखण्डतायाश्च स्थापनाय संस्कृतमेव समर्थमस्ति यतः न केवलम् अस्याः भाषायाः शब्दाः एव मूलरूपेण सर्वासु भारतीय भाषासु लभ्यन्ते, अपितु सर्वत्र भारते भाषाणामेकतायाः रक्षा अपि केवलं संस्कृतेनैव क्रियते। भारतीय जीवने संस्कृतमित्थम् अभिव्याप्तं यत् तस्य पृथक्करणम् असम्भवम्। संस्कृताध्ययनेनैव वयं भारतीया स्मः। संस्कृतं विना वयं कथं भारतीयाः भवितुमर्हामः।

इत्थम् अस्यां भाषायां न केवलं भारतस्य अपितु निखिलस्यापि संसारस्य मानवानां कृते हितसाधकाः जीवनोपयोगिनः सिद्धान्ताः प्रतिष्ठिताः सन्ति। इयमेव सा भाषा यत्र ध्वनेः लिपेश्च सर्वत्रैकरूपता वर्तते। अतएव यदेव दृश्यते श्रूयते तदेव लिख्यते पठ्यते च इदमेव अस्याः भाषायाः वैज्ञानिकं महत्वम्। अतः संस्कृत भाषा अस्मीकं सर्वेषां समाराधनीया। केनापि विदुषा सत्यमेवोक्तम् -

भाषासु मधुरा मुख्या दिव्या गीर्वाण भारती।

- शरद कश्यप
सप्तम 'ख'

Autobiography of Copper Coin

My readers will perhaps ask why a little paisa should write its own biography. Autobiographies, I know, are generally written by very important persons. I am not a politician or a millionaire, I am not even a hundred rupee note. But I consider that **the true marks of greatness are not money and power, but experience, wisdom and Character.** If that is so, I can claim to be great in my small way. I have travelled a great deal and suffered much, and I have a lot to tell that, I think, is a good reason for writing this autobiography.

To begin I was born in an underground rock in the earth. That was millions of years ago when the earth was still a red hot ball. I do not remember much about that time because I was a little child and it all happened very long ago. About over hundred years ago I was dug out of the earth, melted, and turned into a bar of bright red copper. That was the beginning of my adventures. After a time I was taken to a mint, melted again, and minted into a small coin on my face was stamped the figures of George V and my name was written on the other side. I was a quarter of an anna and was called a pice.

I had a number of brothers in the mint, looking like myself. We were a very big family; but in a short time we were all sent out into the world. I was not at all sorry to leave the mint, for I always felt that I was born for great adventures. We were taken to a bank; from there some of us were taken to a big business house and put into a money-box. At that time I was very proud of my beauty and youth. My brothers and I laughed and sang, and made a great deal of noise. In the corner of the box there was an old hundred rupee note with ink-marks on his face. He was the proudest person I have ever known. He looked hard at me and said. "You, worthless fellow! I don't touch people like you." I disliked his proud character and rude manners, but said nothing **Pride goes before a fall;** the next day he was taken out and locked up in an iron safe. I guess the fellow had a long rest there. We were considered worthless, so we were not put into the iron safe, but left free to travel and see the world.

In the business house my brothers and I had to part, and I never saw them again. I have learned by long experience that **life is like that; for every meeting there is a parting.** Many of my brothers were given out as change. I was given to the office boy. He took me out and exchanged me for six beedies at a pan shop. The shopkeeper gave me to an old woman, and she dropped me into a beggar's bowl. I remained in the bowl for a day in the hot sun, but

next day my travels began again I changed hands quickly and moved from place to place, meeting all kinds of people, beggars and kings, policemen and pick-pockets.

Once a miser locked me up in a box, but only for a few days; after that he exchanged sixty-four of my kind for a rupee note. Misers have always been good to me; in fact I have a soft corner for them in my heart. **Misers do harm only to themselves; spendthrifts bring suffering to themselves and others. Still, the world hates misers and has a kind of liking for spendthrifts; I have never understood the secret of this.**

I was never harmed by misers, but I suffered a great deal because of the superstitions of some people. A superstitious gentleman once got the idea that I was a lucky coin. He wrapped me up in a small piece of cloth and put me in a leather purse. He believed that he should never let his purse be completely empty; so he never took me out. I remained there nearly for a year. In a way he was a very nice man. I never heard him use bad language and never saw him do a bad thing. But he was very cruel to me because of the superstition I have mentioned. I was indeed a lucky coin, as the superstitious gentleman believed; for, at the end of a year freedom came to me in a way I never dreamed of. One day a pick-pocket lifted the fine leather purse from the gentleman's pocket thinking that it was full of rupee notes.

"It is an expensive leather purse," he said to himself. He opened it with great hopes but found only me inside. "I have wasted an hour over that fool," he said, and threw me away angrily. A lawyer picked me up from the side of the road and put me in his purse. The week after, the lawyer's wife gave his coat to the washerman forgetting to take out the purse.

On his way home I heard the washerman say to himself, "I need a rupee very badly. If God gives me a rupee today, I will give one pice out of it to the temple." At home he found the lawyer's purse in the coat; there were 63 pice in it, that is, one pice less than a rupee. Ah! God is very clever indeed!" said the washerman. **"He did not trust me; he took his one pice and gave me only the balance". But his wife was afraid.**

"You are trying to cheat both God and man," she said "The purse itself costs more than a rupee."

"All right, I will give one pice to God," he replied But his wife did not trust him. She took out two pice from the purse; I was one of them - She called her little daughter and said, "Take these two pice. Go quickly and put one pice into the temple box. You may buy sweets with the other." The girl ran off with one pice in each hand. On the way I fell on the road and rolled

along. She saw me fall, and ran after me, but I rolled on and fell into the drain. **"My God," she said, "There goes your pice"**. I lay in the dirty drain for many days. I consider these the unhappiest days of my life. Luckily for me, after six months a sweeper found me when he was cleaning the drain.

"It is only a pice," he said, "but finding a copper coin means luck." I was covered all over with dirt, but he washed me and gave me to a pan-seller in the street for a pan. It cost only half a pice in those days; so he bought a sweet with the balance. The sweet caused the poor man's death, for it was covered with flies carrying the germs of cholera. The germs went into his stomach with the sweet; he caught cholera and died in a few days. I am sorry to think of the poor man; in a way I was the cause of his death.

A great event in my life took place in the year 1957. When I heard people talking about decimal coinage, I did not understand them at first. Then I saw a naya paisa; a bright, smiling, little fellow; and I heard that the 'naya paisa' was going to take my place. The Government was going to withdraw the old coinage. This caused me a great deal of unhappiness. But it was really unnecessary; I was soon taken back to the mint, melted again and turned into a naya paisa. I was made smaller in size and value. The old coins were soon withdrawn and new coins took their place. Then people began to call me simply paisa. The change to decimal coinage was welcomed by everyone, clerks, school boys, shopkeepers - in fact, everyone except beggars. **I once heard one of the beggars say, It is our bad luck. Formerly we earned a rupee by meeting sixty-four people, now we have to meet a hundred.** Some times I too feel a little sorry, because my value is less than before. **But I should not forget that one's real value lies in one's character and in the service one does to others!**

VIRENDRA SINGH PANDEY
ACHARYA



So long as the millions live in hunger and ignorance I hold every man a traitor who having been educated at their expense, pays not the least heed to them.

SWAMI VIVEKANANDA

GRAMMAR FAMILY

Grammar family lives in a large area called "Parts of speech". Head of the family is **Mr. Noun**. His wife's name is '**Mrs. Verb**'. She has three children one son and two daughters. Son's name is '**Pronoun**'. He loves his father very much and he has to do all the work in absence of his father (**Noun**). The first daughter is '**Adjective**'. She loves her father and brother and always praises them. Second daughter is '**Adverb**'. She loves her father and mother very much and praises her. Mr. '**Preposition**' is Mr. Noun's bodyguard and official servant. He has a neighbour '**Mr. Interjection**'. He always joins the family in the time of sorrow and happiness. A member always comes to their house and joins people when they are in need. Children call him uncle '**Conjunction**'. All the people living in the area of part of speech are happy in their circle.

VARUN KUMAR MISHRA

IX-B.

MY GOAL

Night of life began to roll
what is my goal?
I asked the stars
The rocks were mute
I asked the river
She was Cute.
She gurgled melodiously
khal khal khal
You came from where
You must see there.
As the river is running
towards the sea
The sea is God, the river is soul
union with God is my goal.

DURGESH VAJPEYI

FAILURE

'Failure' - when we think about this word, our heart is filled with disappointment and a feeling of grief. Is this not the word that forces a man to work hard and to grapple in the adverse situations? Our answer is in the positive.

In some ways failure is the first step towards success for only after stumbling a man gives proper attention to his object. This formula is also favoured by our great ancestors. We have many examples that our historical heroes became great only after stumbling. As the great Mughal emperor Humayun increased his strength after being defeated by Sher Shah Suri.

Failure informs us that there was certainly a lacuna somewhere in our efforts. So we have to fill this lacuna to get success. Most probably failure comes in our part when we do not give proper attention to our object.

Sometimes man curses and abuses God and his Fate for his failure, but he does not try to understand that it is the boon of his work given by God. It is an admonition to prevent failure in future. It is the alarm to be awakened at the right time. After having failed; the faith of this type of people is shaken. They do not search where the sweet of success is hidden they do not try to know their own unmeasurable strengths.

There is also a group of people whose faith in God is increased after achieving failure. They thank God for his blessings and warnings at the right time and take inspiration from their failure.

Failure is also a rare thing to get. It can not be achieved so simply. If it is so simple then why a successful man can not get this failure?

We have to try to join the group of the second type of people. We need not be disappointed by our failure. Failure is the pre-step to success. Failure is the indicator of coming success. for a man who has achieved inspiration and will try to avoid his mistakes and shortcomings.

ASHISH TIWARI

XI-A

HARD WORK AND PRACTICE

We have heard the story of the king and the spider. Spider failed many times but at last he found his goal. The king learnt some thing by this action of spider. He was encouraged and tried to win the wars. At last he found victory.

To find the victory the king worked hard. This is the secret of success. If we want to achieve our aim we should work hard in a planned way.

We should do our work whole heartedly. Purity of heart is a must to achieve the goal. We should not put stones in our wheel. This is a bad habit. If we want success; we should learn something by toppers and follow them.

Winners do their work whole heartedly and complete their task perfectly. The ability to achieve their aim is not God gifted, they improve their ability by practice. The given statement is totally right.

Winners don't do different things.
they do things differently.

SHIV KHERA

Every one must have seen the boundary wall of well. We may see clearly the marks of string which is rubbed on the wall. If a string made by soft choir leaves patches on hard stone then we are human beings.....

Nothing is impossible in this world. An Urdu poet said.

कौन कहता है कि आसमां में छेद नहीं हो सकता।

एक पत्थर तो दिल से उछालो यारो।

त्मउमउइमतए सुंले जीज उंदल तम जंदकपदह पद जीम जंतजपदह चवपदज व तिंबम
इनज मिू बंदकपकंजमे मंतद जीम इंपसपजल जव जंदक वद अपबजवतल जंदकय उमंदे मिू
बंदकपकंजमे पिदक पितेज ऐमववदक दंक जीपतक चसंबम

Their sweat of hard toil turns into the brightness of medals and rewards.
Every day they do their work whole heartedly.

WINNERS NEVER QUIT & QUITERS NEVER WIN.

- VIKAS SHUKLA

XI - B

DON'T INVITE THE BIG DELUGE

The word of 'Big Deluge' comes to my mind many times. I read that Nostredames said that the deluge will come after some centuries. The forecast came true in the 20th century. There is the truth of it.

Two worldwars have happened in 1914-1918 and 1939-1945. Whole world knows its result. In second world war America attacked Japan. These bombs not only destroyed the cities, but also left traces of their deadly effects.

The explosion emerged as an eight mile high poisonous cloud. It was so bright that anyone who looked at it even from 20 miles, became totally blind. In the hospitals there were left only those who were handicapped forever. These weapons make us think about the 3rd worldwar. Almost every country has access to nuclear weapons, therefore, it is not very hard to imagine that they may trigger the 3rd world war anytime. This worldwar will be the most dangerous and destructive like a comet striking the earth. This worldwar will destroy the earth. This earth will be a sphere of fire in the space.

The radio-active rays coming out of the nuclear-waste will make our life miserable. If that nuclear waste is thrown in the sea, that will come in our daily-use by water cycle and our life will be destroyed.

I have no doubt that the scientists of modern times are capable and intelligent, but let me warn them that they may succeed in stopping a man-made disaster, but they can never stop a natural one, no matter how hard they apply their science.

Earth is being excavated from inside by redundant mining of natural resources without any reason. This will make earth's condition worse.

The fume which is emitted by the factories and motors is mixed in the air and it makes the deadly Carbon-di-oxide gas. And in America and other countries the lather is being sold in closed boxes for shaving in which the chemical used is Aerosal, it destroy the ozone, which is the amulet of the earth and saves us and our earth from the ultra-violet rays. So Carbon and aerosal are dangerous for the earth. There has become a big hole in the layer of ozone and it is increasing. The ultra violet rays will enter from this hole in so much quantity that this earth will burn. There will be nothing besides the ash in the world.

Now the trees are only the rays of hope. Man is cutting trees in a big quantity, so the temperature, seasons and the rain are becoming unmanageable.

It is raining in torrents, with more summer, more winter and soil erosion. These trees take a small quantity of CO₂ gas and give us a big quantity of oxygen gas. CO₂ gas is a hot gas and it will melt the ice of snow-capped mountains and snow covered places and the earth will become watery.

Disturbing the environmental balance is a way of inviting "Big Deluge" and death when I say this, I feel that I am not exaggerating.

If we want to save our life from deluge, we have to check cutting of trees, stock-piling of nuclear weapons and air-pollution. We have to cover 38% land of every country by forests and do away with anti-environmental factors.

MAYANK GUPTA

10th 'B'

THE HOPE

There has been a basic difference in the oriental and western outlook. Being materialists, the westerners could not comprehend that the material and the non-material are the two facets of the same coin and the exclusive emphasis on the material aspect would create imbalance in the individual as well as social life. In the materialistic west liberty soon degenerates into licentiousness and the discipline into regimentation. The west could never conceive of basic organic unity in the midst of apparant diversities, for it mistook uniformity for unity. The west considered national self reliance as incompatible with the spirit of international co-operation. In the west, nationalism degenerated into imperialism and internationalism into disloyalty to one's own nation.

But the world state of our concept will evolve out of a federation of autonomous and self-contained nations under a common centre linking them all. It is the grand world unifying thought of Hindus alone that can supply the abiding basis for human brotherhood, that knowledge of the inner spirit which will change the human mind with sublime urge to toil for the happiness of mankind, while opening out full and free scope for every small life specially on the face of the earth to grow to its full stature.

'For mercy has a human heart,

Pity a human face,

And love the human form divine'

[Excerpts from the address delivered by our student Ankur Singh Gaur at the "World Parliament of Children" at Paris.]

HEALTH IS WEALTH

It has been rightly said that Health is Wealth. Without health, life becomes a burden. An unhealthy man is always gloomy and Persimistic . On the contrary a healthy man is always cheerful and optimistic. Health ensures success in all walks of life. In the want of health, all other fortunes of life prove futile.

It is also said that if money is lost nothing is lost, health is lost, Something is lost but if character is lost everything is lost. But in my opinion if health is lost every thing is lost. Loss of health is the root-cause of other grievances. The Neglect of health invites many other evils,. A sick man can not discharge his duties properly. A man with broken health is constantly worried. He is always dejected and desponded. He has no vigour or zeal to do any thing. He can't think of the welfare of society and country. He is confined to his own problems. He picks holes in others. He easily yields to the circumstances. He loses the power of taking firm decisions.

On the other hand a healthy man is always energetic and zealous. He is ever-ready to do what is expected of him. He is like a blooming flower that scatters its fragrance everywhere. He strives for success. He is not easily disheartened. Nothing can hinder him, nothing can prevent him from going ahead. He gets over all the hurdles and meets the challenges of life with courage.

A common saying of 'sound mind in sound body' also points out the importance of health. Health and mind are inter-related. A sound mind is the gift of sound body. A healthy man enjoys peace of mind. But sometimes a healthy man suffers from mental agony if he fails to do his moral duty. A sound physique devoid of morality is also despised. Health does not allow a person to harm anyone. It is inclined to help and protect the weak. Health and happiness go together. Live and let others live is the motto of a healthy man.

Health is the greatest possession of a man. Howsoever rich and educated man may be but he can not be happy unless he enjoys good health. It is therefore our first and foremost duty to take care of our health. There are several ways to improve health. Students and youngmen should take part in games and sports. They give them ample exercise. Children can have enough exercise by playing games. The people doing mental work must spare some time for physical exercise. For the old and aged men, morning walk is the best exercise. Most of us avoid physical labour. The people working in fields and factories do a lot of manual labour hence they are already fatigued and require a rest.

To conclude we can say that health is key to success. In this way we can achieve our goal and serve human being if we possess sound health.

G. P. VERMA

Deptt. of English

DIVISION IS DISTURBING

What a pleasant day ! but suddenly it changed,
Oh ! the winter has set in and the spring is over.
The bird flew away from the place-where it found satisfaction,
Where it found the warmth of emotions,
Where it saved its eggs and hatched
them with precaution.
Atlast she found a place in beautiful sights and charms,
And is doing her work in nature's calm.
How lovely this is for him,
The words of 'selfishness' & 'woe' become dim,
It hatches the eggs in its nest,
Feeling a joyful and tremendous rest.
How can I write how much she was happy,
Her babies were twittering and looking fairies dummy.
She gained a 'swan', a 'nightingale' as well as 'crow'
And found the God of Tree which had a 'bow'.
But O cruel weather ! why are you not stable,
And for stopping your wheel we are not capable.
O ! we can't read between the lines hidden in you,
And slowly the sun became dim and seems old rather than new.
The young ones were getting the wind of west,
They wanted to go there and build a new nest.
All the living beings of tree were sad except the snake,
The snake was also guilty, why he can't give the shake.
The bird became sad, her young ones had gone.
Keeping the experience & losing a lot of fun
But she with a heart of gloom went on singing her song:-
"All may be well after division, but the Division itself
is the most disturbing and painful for ever".

ABHAYA MISHRA

XII (B)

MORAL EDUCATION

The attempt to make boys moral and religious by the teachings of moral and text-books is a vanity and a delusion, precisely because the heart is not the mind and to instruct the mind does not necessarily improve the heart. The danger of moral text-books is that they make them Kings of high things mechanical and artificial, and whatever is mechanical and artificial is inoperative for good.

You can impose a certain discipline on children, dress them into a certain mould, lash them into a desired path, but unless you get their hearts and natures on your side the conformity to this imposed rule becomes hypocritical and heartless, a conventional, often a cowardly compliance.

The first rule of moral training is to suggest and invite, not command or impose. The best method of suggestion is by personal example, daily converse and the books read from day to day. These books should contain, for the younger student, the lofty example of the past given, not as moral lessons but as things of supreme human interest, and for the elder student, the great thoughts of great souls, the passages of literature which set fire to the highest emotions and prompt the highest ideals and aspirations, the records of history and biography which exemplify the living of those great thoughts noble emotions and aspiring ideals. This is a kind of good company, satsanga, which can seldom fail to have effect so long as sententious sermonising is avoided, and becomes of the highest effect if the personal life of the teacher itself is moulded by the great things he places before his pupils. It cannot, however, have full force unless the young life is given opportunity, in its limited sphere, of embodying with action; the moral impulses which rise within it.

Sri Aurobindo Ghosh
(From - "India's Re birth")

HOW TO GET SUCCESS

The higher the goal,
The harder the climb.
But taken each day,
One step at a time,
The goal is accomplished,
The dream is attained,
And the prizes ?
The wisdom and strength,
That are gained.

Collected by - **Ramji Shukla**
class IX (B)

AUTHOR'S GALORE

1. The most cheerful author
Samuel Smiles
2. The most fiery author
Robert Burns
3. The quickest author
Jonathan Swift
4. The coloured author
John Brown
5. The tallest author
Long Fellow
6. The richest author
Oliver Goldsmith
7. The boldest author
Thomas Hardy
8. The strongest author
Richard Steele
9. The wildest author
Oscar Wilde

Ashish Shukla
IX B

POINTS TO PONDER

1. There is always room at the top.
2. Unsuccess is the first step of success.
3. The great invention of man is education.
4. Character tells the behaviour of people and behaviour tells the character of people.
5. Experience is the best teacher of life for living.
6. Life is the name of emotional thinking or feelings.
7. The combination of pleasure and pain is the name of real life.
8. A long pain hides the glorious pleasure of life.
9. Helping others is the real reward of life.
10. A friend is great helper in this world.
11. Friendship is a golden light which shines in the darkness.
12. Love is the power of life.

Somkant Mishra

IX 'A'

COMPUTER

We are living in the Science age. Life is governed and conditioned by the off shoots of science and It is very difficult to imagine existence without them. Computer is also the result of science. It is invented by Charles Babbage in 1833. If we define the Computer, we get that Computer is an electronic machine which has a memory to store data, which has an ability to process data into meaningful information and which has an ability to perform fast and accurate calculations or Computer is a man made machine which faithfully follows given orders and shortly gives wanted results. The computer essentially consists of four basic components.

1. Input Unit
2. Output Unit
3. Central Processing Unit
4. Memory Unit

Computer uses input device to convert data to bits and bytes and sends into the C.P.U. for further processing. Input devices are like Key Board, Mouse, Scanner etc. Key Board is used for typing. A Key Board resembles a type writer.

Output devices are used by the Computer to communicate with man. They are Monitor and Printers. The C.P.U. is often referred to as the brain of the Computer. Processing the Data, storage of Data, controlling the input etc. are its main functions. Floppy Disk Drives are rectangular boxes that contain a head which reads or stores the Data on Floppy Disks as directed by the C.P.U. Mouse is an output device that substitutes the Arrow and the enter keys of the Key Board. Pointing, Clicking, Double Clicking and click and drag are its main functions. Window was developed in 1992-93 by a company called MICROSOFT CORPORATING INC. U.S.A. It was started by Bill Gates. Window is a very lengthy program and we might need some more peripherals inside our Computer to run Window. The brain of any Computer System is the micro-processor designed and manufactured by a Company known as INTEL.

The latest, in this series of micro-processors is 80486 & The Pentium. Even the Pentium Processors has its advanced Version as I, II,III and in future we may see many more complex and advance processor.

These are some few facts about Computer - but its advantages are uncountable. Computer is used in life in so many fields that it is difficult to discuss each point in detail. Computer is used in predicting weather. It helps us in educational institutions also. It works wonderfully in the field of finance, management, medical , astronomy, banks etc. At last we can say that Computer is a human brain, with more speed and accuracy, It will enable man to get

rid of heavy mental load. Now Computer is the heart of development in any sphere.

Full form of COMPUTER-

Common Operating Machine, Particularly used For, Technology, Education and Research.

Pushkar Singh

10th 'C'

POWER OF WORDS

A wise old owl
Sat on an oak,
The more he saw
The less he spoke,
The less he spoke
The more he heard,
Why aren't we like
That wise old bird ?

Whenever we say something our words portray our image in the mind of the person in front of us. It is our tongue that declares our position in the society.

There is a very simple way to be loved by everyone - always speak sweet. Simultaneously we should have command over what we say. Words should be first measured in scale of our heart and then should be allowed to come out. It is also important to hear what the next person is saying. Only to speak and not to hear does not show our intelligence. In fact the process should be like this - first to hear what the next person is saying, then to finalize what we ourselves think about the matter and to see if it is right; and if we get it right, then we should say it.

Remember - words are the wealth that never decrease on spending. By sweet words we may win the world. So speak gently and be cheerful.

Himanshu Verma

XII 'B'

A VISIT TO CENTRAL INSTITUTE OF MEDICINAL AND AROMATICAL PLANTS (CIMAP)

Now a days Science and Technology are the criteria of development. In old days our progress was wonderful but now we are behind in this sphere. In spite of this there are many institutes, which are working in this field. Government has also provided necessary Infrastructure to these institutions.

"Central School of Medicinal and Aromatical Plants" is one of them. Fortunately I found an opportunity to visit this institute. 'CSIR' made a planning and gave permission to some students to visit such institutes. I was one of them. 25 December was the date when I started my journey for C.I.M.A.P. in Lucknow.

After a long journey the building of C.I.M.A.P. was in front of me. This is very beautiful and attractive. I was very glad. I was unable to control my feelings. Gate-keeper showed me my room. All comforts were present in the guest room. But laboratories and workshop of eminent scientist impressed me much.

Next morning I was ready to visit this institute. First of all I entered in a big hall with a famous scientist. Many other students from different schools were also with me.

In this room there was a wonderful collection of herbs and their products. I also saw species on the verge of extinction plant species as archidocal, solanaceas, Balanaphoraceal, siascareoceal etc. I also saw medicinal and aromatical plants as Apocynoceal, Quisins, Papaveraceal, Belladona etc.

After this we went to another lab. This was equipped with modern apparatus. There were many solutions of D.N.A. and R.N.A. Scientists were doing their experiments on these solutions.

Now we were in another big hall. There was a big and wonderful apparatus in front of us. This was 'Electron Microscope'. A scientist showed it's function. He also told us about it's theory. Suddenly the light of the room was switched off. Function of microscope had started. A slender cell was in a big form in front of us. We were seeing the miracle of science.

Then we entered another air-conditioned room. This was a symbol of progress of science. Many years ago parasites used to destroy crops but science gave us insecticides. In spite of this its use was harmful for fields, so science

developed such species which could save themselves from these insects. One of these species was developed in this lab and was in front of us.

In the end we had speeches of eminent scholars. I can never forget this visit.

Once upon a time man was a Gypsy but his curiosity and hard work gave him this position. Science is the main reason of this upliftment.

I can present only a synopsis of this visit but I can not express my feelings because it is impossible to express it in words.

In the rush of development we can equal other developed countries only when we promote such institutes. It is deplorable that we do not give importance to our ancient discoveries. But we should be optimistic because future is Golden.

Amit Ranjan Trivedi

Class - XI (a)

IMMORTAL THOUGHTS OF GREAT MEN

- ★ A great deal of bitterness amongst people arises from an imperfect understanding of another. **-Charles Dickens**
 - ★ What we have to learn to do, we learn by doing. **- Aristotle**
 - ★ Religion is behaviour, not mere belief. **- Dr. S. Radhakrishnan**
 - ★ Imagination is more important than knowledge. **- Einstein**
 - ★ Life levels all men. Death reveals the eminent. **- George Bernard Shaw**
 - ★ The power to do great things generally arises from willingness to do small things. **- Saint Kabir**
 - ★ Most of our troubles are caused not by ignorance but by in action **- Dab Carnegia**
 - ★ To do injustice is more disgraceful than to suffer it. **- Plato**
- Truth is mighty and will prevail.
- Thomas Brooks**

BIOTERRORISM

Chemical and Biological warfare is the method of warfare in which toxic or incapacitating chemicals or biological agents are used to further the goals of the combatants. Until the 20th century such warfare was primarily limited to starting fires, poisoning wells, distributing smallpox - injected articles and using smoke to confuse the enemy.

BIOLOGICAL WARFARE

Several nations have worked to some degree on the development of biological agents for use in warfare. Selected or adopted from pathogens causing various diseases that attack humans, domestic animals or vital food crops, such agents include bacteria, fungi and viruses or the toxins they produce. The pathogens causing botulism, plague, foot and mouth disease, and rust in wheat are among the many that could be directed against opposing armies or the civilian economics supporting them. Genetic engineering also offers the possibility of developing new virulent strains against which an opposing force could not be prepared in advance.

Large-scale biological warfare has thus far remained theoretical, although in the 1980s it was learnt that Japan used biological agents against the Chinese in the 1930s and early 40s. In the early 1980s, claims were also made that the Soviet Union, in Afghanistan and Vietnam in Laos and Kampuchea, were using fungal toxins in a form called 'yellow rain'- as biological weapons. The charges, however were controversial and have not been proved.

DISSEMINATION AND PROTECTION

The earliest method of disseminating biological agents was simply to release them from pressurized containers, as the Germans did in world war I. This made the use of these weapons dependent on the wind; quite often the wind would change and bring the biological agents onto friendly troops. Thus armies turned to better ways of projecting weapons, including mortars, artillery, rockets, aerial bombs and aerial spray. Biological agents can also be disseminated by releasing insects or animals - in a target area whatever the means of dissemination, care must be taken to protect friendly forces and populations. Most nations are developing programmes to detect lethal agents and decontaminate them. Efforts are also being made to develop offensive weapons that are less dangerous to store and use. The U.S. also has an extensive programme for the safe

demilitarization of these weapons.

Chemical and biological agents have possibilities for use in limited wars. The fact that it does not take a very sophisticated industrial base to produce lethal chemicals makes this a viable means of warfare for Third World countries. Use of chemical weapons by Iraq and Libya's chemical warfare capability in 1988 reinforced the danger that these weapons will spread. The attraction of such weapons for terrorists is also a matter of great concern, since release of relatively small amounts of toxins in a water supply or into the air might cause a widespread catastrophe.

FACTS ABOUT BIOTERRORISM

- (1) Experts say that any country is at risk of a bioterrorist attack—using germs to kill instead of bombs, it will fall to doctors, not the military or police to spot that an attack has occurred and fight off the disease.
- (2) The risk of a mass attack killing thousands is low but possible, smaller attacks are more likely, they said. The world agents would be smallpox and anthrax.
- (3) More than 10 countries have, or are developing a biological warfare capability including India.
- (4) Production of biological warfare agents does not require specialized equipment of advanced technology.
- (5) When comparing equivalent amounts of biological and chemical warfare agents, the biological agent is far more potent.
- (6) Small amounts can produce large numbers of casualties.
- (7) It is difficult to limit spread of biological warfare agents because of the dual nature of the equipment and technologies.
- (8) Biological war is more dangerous than atomic war.

Ashish Kumar

12th B



**Nuclear war won't be a question of
what is right, but rather what is left**

- Albert Savage.

SECRET OF SUCCESS

Real meaning of life is to live cheerfully and give cheerfulness to others. It states that life should be full of ideals, thoughts, good deeds and values. Values change as per change of environment and all of us should cope with very changing environment. It is also related with the search of self-identity. It is only India's philosophy even among teachers and students to picture and build themselves different despite same creation of God.

In this anarchical and unruly world where people are under utter confusion with the brain out of the hinge, three categories of men are generally observed. Ist those who live their lives smoothly, cheerfully and do the best service to the society and nation. Their lives are well-planned and consistent.

IInd those who live their lives unplanned, full of confusions, tensions and irritations. Success is in all the times far behind themselves.

The IIIrd are those who do not live their own lives but live on the mercy of others. Everyone wants to make his identity but without deserving. In all the times he wants to keep and count himself in first observed category. For this there should be limited ambitions relating with the present environment with unblinkered eyes and single mindedness. In this respect personal independence should be sub-ordinated to themselves. They should not be sub-ordinated by their independence. To achieve this the transmission of not only skills and techniques but also ideals and loyalties is required. The considerations and appreciations are really applicable for the directives of all walks of life. Society, family environment and capacity is also countable.

Ambitions give acceleration to the life, they are related, co-ordinated with nature, behaviour, social environment.....and family background. Keeping all these characteristics in mind selection of goal is easy to approach. Failure does not count for them and they get relaxed and feel happy even in that moment.

Transparency is another factor in ambition achievement. It should be in hearts, thoughts and deeds. Then real picture of life will be reflected. One who does it, gets good experiences everyday and sees the new ray of hope in every movement.

High ambitions can never be achieved if present environment is ignored. Then knowledge, emotions, relations and humanity become worthless and remain objects of only imaginations, such persons never reach their goal and become the patient of nervous breakdown. They remain limited only to flight of fantasy. They lead their life into tension, frustration, duality and panic. This is due to improper use of their own minds and more pressure of their parents ambitions. Such persons are always ignored by all even by their own selves.

In spite of above drawbacks, in order to achieve all these high ambitions one should wait for suitable time and place. Then you will be for world and World will be for you.

Sri U. C. Tiwari
Deptt. of Biology

"NOTHING BUT EVERYTHING"

Our culture and civilization is a treasure. Hinduism has been famous in this world for its spiritual bent of mind. We have taught the world to unite themselves with the infinite. Our classics tell us about the sacred object of human life which is 'Mukti' or our emancipation from these worldly pains and peril.

Our knowledge is worldly and materialistic. It is relative to the sense that we know things only by a process of comparison and differentiation. But the spiritual knowledge tells us about the divine reign of almighty. It tells about the omnipotent, omniscient, omnipresent God.

Spiritual knowledge tells us about the world above time and space, above words and imagination, above limits and dimensions. It gives us a clear idea of that perpetual world, holy and baffling.

It tells us about the highest of highest, about the largest of the largest, about the smallest of the smallest and about nothing but everything.

Now-a-days when we have fallen with our moral and philosophical values, we are facing many problems. The economics of our country is ruined but I feel that our lack of happiness is because of our spiritual poverty.

So, we have to develop an atmosphere filled with pleasure, to hear the unbeaten beats and to describe the undefinable and indescribable. Then only we can get the true happiness, which is "Satya, Shiva, Sundara".

Hence our aim must be to purify our contaminated thoughts unite the individual with the supreme spirit, and lead a life of pure existence and infinite consciousness and possess anantajnana, anantadarsana, anantavirya and anantasukha. Because escape from this body is entry into blessedness that has no end.

Anubhava Nigam

XII A.

Our sweetest songs are those that tell of saddest thought'

The above lines of P.B. Shelley convey the reality of human life. Human life is a mystery; a riddle that few have been able to solve. Man has to face endless struggle in his life. He yearns for what he had in the past and looks forward to his future; with anguish. But the future like a mirage continues to elude him and the present never satisfies him. Such is the story of man - the supreme creation of God.

Since times immemorial, man has been charmed by the tragic aspect of life. We always enjoy sad songs. Then, is sadness the reality of life? The literature of the world is replete with the stories of the heroic struggle of world's greatest heroes against the vicissitudes of their lives. The more tragic the story, the greater is the charm it has for people.

Tears and not laughter hold their sway over us. Thomas Hardy has rightly said "Happiness is an occasional episode in the general drama of pain." In his view man is never free from sorrow and we have to agree that "our sincerest laughter with some pain is fraught."

In the world famous epics The Ramayana, The Mahabharat and the Greek epic Odyssey we find the heroes suffering great trials and turbulences. We are drawn towards these great works of poetry for the tragedy that they portray.

"Ramayana" continues to inspire us today because we are moved by the hardships that 'Ram, Sita and Laxman' had to face - If we take away the period of 14 years of exile that Ram faced, from the 'Ramayan'; the epic will become lifeless. We love Ram as the prince of Ayodhya but we venerate him as "Lord Ram" only after he suffers the tragedy of his life when he decides to abide by the wishes of Raja Dasharatha and Queen Kakeyi. The trials of life begin when he leaves the luxuries of the palace to live the life of an ascetic in the jungles. The road from the palace to the jungles becomes the path that leads him to the pedestal of "Maryada Purushottam". The examples are numerous. Can we forget the injustice done to the Pandavas?

Is the "Mahabharata" not a saga of sobs and miseries? But Mahabharata too became endeared to the masses because of the tragedy of the myriad characters that are depicted in it. We are equally moved by the tears of Draupadi and Gandhari. The 'Geeta' by Lord Krishna is a remarkable treatise on man's ideal code of conduct while facing the tragedies and tests of life.

Thus it is the pain attached to human life, that lends to it a unique glory. Even God takes birth on this earth only to feel the tinge of pain which He has bestowed on His creations.

Aristotle, the great philosopher, considers tragedy as an essential phenomenon in the psychological development of human beings. In his view, when a person reads about the sufferings of people who are eminent and powerful

he is cured of his own emotions of pity and fear. Tragedy brings about 'Catharsis'- a purification of one's deep feelings.

To conclude, all literature that is noble and inspiring has some or the other tragic aspect of human life as its base. It is not pessimism; but it tends to convey the reality of life. We should be prepared to face life the tough way. It is not easy to live life. Life is a challenge. The greater the hardships; the bigger the reward. Shakespeare has said - " Sweet are the uses of adversity" because adversity brings out the best in a man. But there is always a ray of hope to dispel the darkness of despair and it would be apt to conclude in the words of Shelley -

"If Winter Comes Can Spring be far behind"

Sharda Rao

A VISIT TO BHAKRA DAM

In May last, I happened to pay a visit to the Bhakra Dam. The Dam is well worth a visit. It is remarkable on earth. It is the biggest Dam in the world. It is 740 feet in height. The canal of Bhakra Dam is the biggest canal in the world. It is a multi-purpose project. The Dam is now complete. It stands stately against the deep blue of the sky. The Gobind Sagar is the biggest man-made lake. It has a capacity of storing 75 lac cubic feet of water.

It is a glorious workmanship. The signs of success are already there. The Punjab has become the granary of India. It supplies electricity to Delhi, Rajasthan and some parts of U.P. also. Every village in Punjab is being electrified. Millions of units of electricity are being produced for domestic, industrial and agricultural purposes. This project is rapidly changing the face of Northern India. The project is a gift to the country.

I saw at Bhakra the two huge tunnels through which the water of the river was let out when the Dam was under construction. Now these tunnels have been plugged. I also paid a visit to Nangal. It is a feat of engineering skill. The Nangal Hydel Canal is a huge canal. It is as big as a river. The Bhakra Dam is indeed a place of pilgrimage.

Vinod Kumar

IX 'A'

APPLICATION OF SCIENCE IN EVERYDAY LIFE

Science has completely revolutionized human existence. Its applications have become an integral part of our daily lives. There is hardly any sphere of our work which has not been influenced by Science and Technology. We can, however, appreciate the role that science and technology have played in transforming our lives over the last two hundred years or so, if we recall the conditions in which we lived prior to the advent of science.

A person born a few centuries ago, could hardly hope to live on an average, beyond forty years. More than fifty percent of children did not survive beyond infancy. Flood and famine which occurred not too infrequently also took a heavy toll of human lives.

Many people living just fifty miles away from Delhi, could hardly hope to see this great city during their life time. The facility of sending communications and messages to others was available only to a few privileged and well-to-do people; who could afford to depute personal messengers for the purpose, since no other means of communication was available to the people.

Basic necessities of life could be procured only through hard manual labour, except in case of a few rich and powerful people who could lead a comfortable life at the cost of others. There were no printed books, the teachers and the taught followed the oral tradition except in the case of very few who cared to copy the available manuscripts for acquiring and retaining knowledge.

The situation, during the last couple of centuries, has undergone awe-inspiring almost an incredible change. To these must be added the lifesaving achievements of biology and medicine, especially the discovery of pain-relievers and preservative methods of storing food. Science and Technology have been progressing at such a phenomenal speed that the things that were current just a couple of decades ago, have gone out of circulation or are about to do so. Referring to the revolutionary changes that Science and technology have brought about in our lives, the reputed scholar Burtrand Russel had stated that science has changed the face of the earth.

As a result of researches in the field of medicine and spectacular development of medical technology. Improvement in means of communication and transport have lessened the rigours of flood and famines. All these factors coupled with improvements in medical, health and sanitation facilities have considerably

reduced infant mortality and increased longevity. If he succeeds in exploiting the full scientific potential in this regard and ensuring more equitable distribution of all that he produces, it may be possible to remove poverty and hunger from the face of the earth.

We can talk to any person in any part of the world, by direct dialling his telephone number. In that case he can ask the person on the line, to hold on and by pressing a button, he can talk to the other person and then revert to the first caller. We have also now the hotline facility in which the phone can be programmed to call up a certain number as soon as phone is picked up.

Incidentally all these facilities are also available in our country at places equipped with electronic exchanges.

Applications of science have proved a boon for the house-wife. The electronic ovens, toasters, mixers and grinders, refrigerators, coolers and washing machines, vacuum cleaners and of course electric fans and lights have all helped to make her life far more comfortable and cheerful.

Modern instruments of knowledge and means of entertainment have added a lot to the enrichment and pleasure of life. The computer, the television, the radio, the cinema, books, newspapers, journals and other printed materials, the modern games and sports and modern musical instruments have given a new dimension to entertainment and techniques of learning. In short, science has made our lives safer, happier and more comfortable.

Shailendra Porwal

Ninth 'A'



Sweet are the uses of Adversity

GOOD HEALTH

Health is better than wealth. It is one of the best gifts to us. But it can easily be lost. It seems natural to us to be well when we are young. We can't think what illness is like. So, we don't think much about our health. We are often careless about it. Without thinking we spoil our health by indulging in bad habits and doing silly things. When we have lost it we realize it's value. How can we keep our good health? only by knowing and obeying the canons of healthy living. First, we must eat good plain food. We must eat enough and not too much. Secondly, we must have plenty of fresh air. Thirdly, we must get enough sleep. "Early to bed and early to rise, makes a man healthy, wealthy and wise". Fourthly, we must work. Lastly, we must avoid indulging in bad habits.

Pradeep Awasthi

12th 'A'

THE FLOWERS

*So beautiful are the flowers,
Like the red jam in the jars,
Tulip, Lotus and Rose,
That we smell with our nose,
Beautiful butterflies are flying
around them,
The trees look wonderful
shining like a gem,
Flowers are lovely and
very colourful,
Look, around them, are gathered
insects so beautiful.*

Pradeep Awasthi

12th 'A'

OUR INDIA

*Punjab for Fighting,
Bengal for Writing,
Sikkim for Duty,
Kashmir for Beauty,
Rajasthan for History,
Maharashtra for Victory,
Karnataka for Silk,
Haryana for Milk,
Kerala for Brain,
Uttar Pradesh for Sugar-Cane,
Himachal Pradesh for Apples,
Orissa for Temples,
Madhya Pradesh for Tribals,
Bihar for Minerals.
Each Place; Each State,
Makes India; so GREAT.*

Pradeep Awasthi

12th 'A'

INDIA : OF MY DREAMS

*"Be proud that you are an Indian;
Proudly claim I am an Indian."*

These are the words of Swami Vivekanand. But can we, the citizens of today claim so ? What has happened to this beautiful country, so rich in heritage and culture handed down to us by our ancestors ? Is this the India we dreamed of ? Is this the India that our freedoms fighters fought for ?

Well India of my dreams is different. I visualise an India which is led by a leader who is genuinely interested in the welfare of India; a leader in every sense of the word; one who places the needs of people above every thing a corruption-free leader worthy of leading this country in the 21st century full of new challenges.

"Unity in diversity" is how we describe our country. True to this, we the citizens should be in all our efforts. We should break all the geographical, linguistic cultural and state barriers and stand together for the cause of the well being and prosperity of our country. I dream of India with 100% literacy. This we can do, only if we wake up. We should soon bid farewell to the period when becoming a literate country was a distant dream and welcome the time when every one of us is academically qualified and adequately qualified to be a judicious exerciser of his voting right. The country I have in mind is one where children are allowed to be children playing, laughing and not working dawn to dusk as child labour and their childhood snatched from them, deprived of all childhood pleasures.

India of my dreams realises the importance of small families and it is high time that the people should awake to the damages of population explosion where by India's population has already crossed billion in May 2000. People should be not only literate but they should also be conscious of the family planning. India of my dreams does not have to expand beyond its present state of economic development to absorb its teeming citizens. Rather we should be the one that are proud of sheltering its citizens under concrete roofs in rain apart from funding them adequately and employing them gainfully. Every one should have a job to his/her credit.

I dream of India with a sound government, a government not just of the people but truly for the people also. An India where globalisation and domesticity are properly balanced, where industrial growth is good, but is not allowed to

get an upper hand over our mainstay - Agriculture.

Agriculture, which was neglected in favour of industry previously, once again assumed importance in the 70's when the green-revolution took place. But later it was pushed to the back-seat. However the N.D.A. government has realising its importance, rightly accorded it, along with rural development top priority in the on going Ninth five-year plan and the 2000-2001 budget. When the British ruled they thought of some good projects like linking of some important rivers of the south like the Godawari, Mahanadi, Tungbhadra, Krishna, Cauvery with Ganga for improving production and overcoming water shortage in the lean season. As this involved crores of rupees they were not ready to spend so much for the development of the country. But now after more than 50 years of independence we have not given a single thought to such projects which will pay us huge returns. It will not only increase agricultural production tremendously, but will also enable the agrobased industries to thrive. We can then be self-sufficient and also export surplus food grains. We should concentrate on inventing technology rather than importing it by giving due incentives to our scientists and engineers and allocating sufficient funds for science and Technology.

Ours is a multi-religious country with secularism as one of our prime citadels. But we are guilty of misusing the rights and have allowed casteism and communalism to creep in to our society. Such detrimental tendencies spread faster than fire and cause more harm. The India I have dreamt of is one where just the religion of humanity exists and where merit rather than reservation is the criterion for selection to jobs of course, I stand for extending fullest benefits not only to the SC/ST/OBCs but also to poor people of upper castes. B.R. Ambedkar and Jagjiwan Ram did not come up on the national horizon through reservation. Finally India of my dreams is a country free from crimes like theft, murder, robbery, rape and kidnapping.

If we can dream we can achieve it too but the best way to make our dreams come true is to wake up. Let us wake up to a new morning and go about making this dream come true. Let us together make our India, an India which the people who sacrificed their lives for its freedom and our Kargil heroes would have been proud of!

Jai Hind.

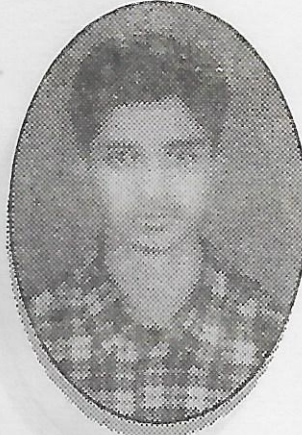
MANIKANT KISHOR

IX-A

सुरभि सुमन



चि० दीपक त्रिपाठी (षष्ठ कक्षा)
सम्पूर्ण विद्यालय में सर्वोच्च
अंक 89.85%



चि० अभिषेक अग्निहोत्री
सम्पूर्णानन्द वाद-विवाद
प्रतियोगिता में
कानपुर मण्डल
में प्रथम स्थान



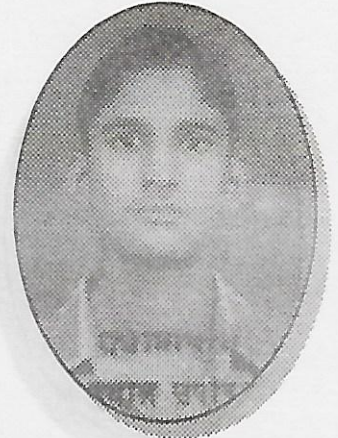
चि० अमित रंजन
हाई स्कूल परीक्षा में
प्रदेश में 99वाँ स्थान



चि० आलोक कुमार सिन्हा
इण्टरमीडिएट परीक्षा में
प्रदेश में 96वाँ स्थान



चि० आनन्द प्रकाश यादव
इण्टरमीडिएट परीक्षा में प्रदेश
में 92वाँ स्थान

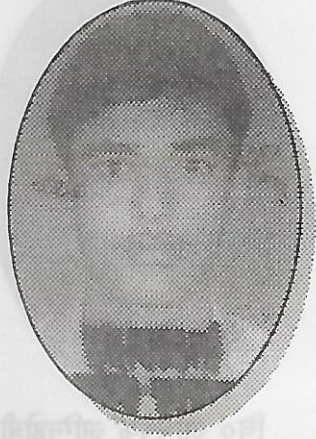


चि० इनकान्त अवथी
इण्टरमीडिएट परीक्षा में प्रदेश
में 92वाँ स्थान साथ ही
अर्थ शर्त में नगन

सुरभित सुमन



चि० अविजित सिंह
इण्टरमीडिएट परीक्षा में
प्रदेश में २३वाँ स्थान



चि० गौरव यादव
इण्टरमीडिएट परीक्षा में प्रदेश में
२३वाँ स्थान साथ ही आई.आई.टी.
में उच्च स्थान पर चयन



चि० अनीश वात्स्य
हाईस्कूल परीक्षा में प्रदेश
में २३वाँ स्थान



चि० रोहित वर्मा
इण्टरमीडिएट परीक्षा में
प्रदेश में २४वाँ स्थान



चि० आशीष आचार्य जी
इण्टरमीडिएट परीक्षा में प्रदेश
में २५वाँ स्थान



चि० आशीष ओमर
इण्टरमीडिएट परीक्षा में
प्रदेश में २५वाँ स्थान

(श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल, कानुपर द्वारा संचालित)

पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

स्थापना

युग-दधीचि पं. दीनदयाल उपाध्याय का आज ८५वाँ जन्म-दिवस है। “तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहें” का जीवन-मन्त्र लेकर चलने वाले इस आर्ष परम्परा के ध्वजवाहक ने भारत माता के चरणों में अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। सामान्य जनमानस के लिए यह वाक्य एक रूढ़ शब्दावली हो सकती है; किन्तु हम उनके वंशज अपनी पूरी आस्था के साथ कहते हैं कि पण्डित जी का जीवन हमारे राष्ट्र की अनुपम थाती है और उनकी साधना देश का जीवन्त इतिहास।

वास्तव में यह विद्यालय उनके आदर्शों को मूर्त रूप देने का शपथ-पत्र है। इसका एक-एक अक्षर अंकित करने का महत्वपूर्ण कार्य जिन महनीय पुरुषों ने किया, उनमें इस विद्यालय की कल्पना-मूर्ति गढ़ने वाले मौन तपस्वी पूज्य भाउराव, इसकी आधारशिला रखने वाले युगद्रष्टा परम पूज्य श्री गुरु जी, भव्य भवन को मूर्त रूप देने वाली त्यागमूर्ति ममतामयी बूजी और इसकी कंचन-काया में प्राण भरने वाले निष्काम कर्मयोगी माननीय बैरिस्टर साहब सदा ही स्मरणीय रहेंगे।

सम्वत् २०२६ की गुरु पूर्णिमा (१८ जुलाई १९७०) के पावन पर्व से प्रारम्भ अपना यह विद्यालय आज अपना तीसवाँ वार्षिकोत्सव मना रहा है।

इस विद्यालय के कल्पना-शिल्प का आधार उदात्त भावना तथा प्रारूप विवेक है। हमारा लक्ष्य यह भी है कि जिन देशद्रोहियों के घिनौने षड्यन्त्र तथा सत्ता की गर्हित लिप्सा के कारण पण्डित जी की क्रूर हत्या की गयी, उन विषैले विचारों को आमूल समाप्त कर दिया जाये और ऐसे विष-वृक्ष फिर कभी न पनपें, इसकी सुनिश्चित व्यवस्था भी की जाये।

पं. दीनदयाल जी भारत, भारतीयता के मूर्तिमान स्वरूप थे। इस विद्यालय के प्रयोग और परिणाम उनकी इसी भावना की प्रतिकृति हैं। विद्यालय द्वारा संस्कारित दृढ़ इच्छा-शक्ति सम्पन्न आदर्शप्राण पीढ़ी शनैः-शनैः समाज को अपने अस्तित्व का बोध कराने लगी है। अतः हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि ब्रिटिश दासता के काल से चली आ रही पब्लिक स्कूलों की भ्रामक चकाचौंध से सर्वथा अलग यह विद्यालय भारतीय संस्कारों की पुनर्स्थापना में एक सुस्पष्ट, गतिमान, तेजोद्दीप्त और प्रभावी उपक्रम है तथा वर्तमान व्यावसायिक प्रलिप्सु कदम में एक उन्नत-अडिग शैल-शृंग। यथा विज्ञान वीथी, भाउराव भवन तथा नरेन्द्र-निवास छात्रावास, प्राचार्य-आवास, माधव-स्मृति क्रीड़ा-परिसर व प्रेक्षागार तथा आचार्य और कर्मचारी आवास आदि।

इस समय षष्ठ से द्वादश तक ७ कक्षाओं के १६ अनुभागों में छात्रों की संख्या ७६७ है। इनमें से २१० छात्रावासीय हैं जो कि विद्यालय के ऊपरी खण्ड, पीछे भाउराव-भवन तथा नरेन्द्र-निवास में रहते हैं। इनमें उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के साथ ही बिहार प्रदेश के छात्र भी हैं, जिनके भोजन, स्वास्थ्य,

स्वाध्याय, अनुशासन आदि की चिन्ता विद्यालय-परिसर में ही निवास करने वाले सुयोग्य आचार्यों द्वारा की जाती है। वास्तव में हमारी अभिलाषा और प्रयास भी इस विद्यालय को पूर्णरूपेण आवासीय विद्यालय बनाने की है, जिससे अपना व्यक्ति-निर्माण का कार्य हम और अधिक प्रभावी ढंग से कर सकें। विद्यालय में पढ़ाने वाले आचार्यों की संख्या प्रधानाचार्य सहित वर्तमान समय में ३० है। लगभग सभी प्रशिक्षित परास्नातक हैं।

विद्यालय के पास लगभग एक लाख रुपये से अधिक मूल्य की १५००० पुस्तकों से सम्पन्न पुस्तकालय भी है। वाचनालय में ७ दैनिक, ३ साप्ताहिक तथा ६ मासिक पत्र-पत्रिकायें आती हैं। मुख्य समाचार, सुभाषित, सामान्य ज्ञान इत्यादि श्याम-पटों पर लिखे जाते हैं।

इस विद्यालय को शासन द्वारा विशिष्ट विद्यालय के रूप में कुछ विशेषताओं के आधार पर ही मान्यता दी गयी थी, जिनमें छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान प्रमुख है। इसी विशेषता के प्रति सचेत रह कर हम विद्यालय के छात्रों के समग्र विकास में सफल हैं।

शैक्षिक उपलब्धियाँ परिषदीय परीक्षाएँ

विद्यालय की दशम कक्षा का प्रथम दल १९७५ में तथा द्वादश का प्रथम दल १९८१ में उत्तर प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा परिषद की परीक्षा में सम्मिलित हुआ। परीक्षा-परिणाम प्रारम्भ से ही अत्युत्तम रहा है। प्रदेश में सर्वोत्कृष्ट परीक्षा परिणामों के आधार पर ही शासन विगत वर्षों से विद्यालय को इण्टरमीडिएट का सर्वश्रेष्ठ विद्यालय घोषित कर रहा है। वर्ष २००० का परीक्षा-परिणाम निम्नांकित है :

	दशम	द्वादश
कुल छात्र	६१	१०६
उत्तीर्ण	६१	१०६
प्रथम श्रेणी	८७	१०५
द्वितीय श्रेणी	०४	०१
तृतीय श्रेणी	००	००
ससम्मान	१५	६५
प्रदेश में स्थान	४	१२

अद्यतन समेकित (Cumulative)

	दशम (२६ वर्षों का)		द्वादश (२० वर्षों का)	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
कुल छात्र	२१६६	-	१७७२	-
उत्तीर्ण	२१५१	९९.३०	१७५८	९९.२०
प्रथम श्रेणी	१८३६	८५.३५	१४१८	८०.६५
द्वितीय श्रेणी	०३५	१४.१७	०३३५	१९.०५
तृतीय श्रेणी	०१०	००.४६	०००५	००.२८
ससम्मान	८४८	३९.४२	३८५	२१.८९
प्रदेश में स्थान	८३		६३	

प्रतियोगी परीक्षायें

इंजीनियरिंग, मेडिकल तथा प्रशासनिक प्रतियोगी परीक्षाओं में विद्यालय के छात्रों की सफलता का गौरवशाली अध्याय भी प्रथम बैच से ही प्रारम्भ हो गया था। गत वर्ष की उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं:

जे.ई.ई./संयुक्त प्रवेश परीक्षा (आई.आई.टी., मर्चेण्ट नेवी तथा धनबाद खनन विद्यालय हेतु)	१८
रुड़की इंजीनियरिंग कॉलेज	१५
UPCEAT/(क्षेत्रीय अभिर.नेत्रकी विद्यालय)	३०
कुल (इंजीनियरिंग)	६३
सी.पी.एम.टी./संयुक्त चिकित्सा प्रवेश परीक्षा (मेडिकल कॉलेजों हेतु)	०३

इसके अतिरिक्त सैन्य-सेवा की परीक्षाओं में भी अपने विद्यालय के अनेक छात्र चुने जा चुके हैं तथा विद्यालय से प्राप्त संस्कारों के आधार पर राज-जीवन में नये आयाम स्थापित कर रहे हैं। विश्ववस्तरीय भौतिक विज्ञान ओलिम्पियाड में छात्र चि. रचित अग्रवाल ने प्रदेश स्तर पर तथा छात्र चि. गौरव यादव ने राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

संघ लोक सेवा आयोग की प्रशासनिक परीक्षा में भी अपने विद्यार्थी पीछे नहीं हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.)में दो छात्र चयनित हुए जिनमें से एक छात्रचि. संतोष कुमार मिश्र ने पूरे देश में द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा प्रान्तीय प्रशासनिक सेवा (पी.सी.एस.) में अपने विद्यालय के तीन छात्रों का चयन हुआ जिनमें से एक छात्र चि. राहुल मिठास ने पी.सी.एस. में पूरे प्रदेश में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है।

शिक्षा विभाग द्वारा संचालित 'एकीकृत छात्रवृत्ति' तथा 'राष्ट्रीय प्रतिभा खोज' परीक्षाओं में भी हमारे छात्र कीर्तिमान स्थापित करते रहे हैं।

विद्या भारती द्वारा संचालित 'संस्कृति ज्ञान परीक्षा' तथा हिन्दी समिति की 'हिन्दी ज्ञान परीक्षा' में भी अपने छात्र प्रति वर्ष शत प्रतिशत सफलता पाते हैं। श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा आयोजित मानस तथा गीता-परीक्षाओं में अपने विद्यालय को सदैव महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है।

छात्रवृत्तियाँ

विगत वर्ष छात्रवृत्तियों का निस्तारण उ.प्र. शासन के वित्त विभाग से न हो सकने के कारण इसकी अद्यतन संख्या नहीं दी जा सकती है, विगत वर्ष की सभी छात्रवृत्तियाँ सतत् चल रही हैं।

इसके अतिरिक्त हमारे अनेक छात्र अन्य स्रोतों से भी छात्रवृत्ति पा रहे हैं। यथा -

श्री हरि भार्गव ट्रस्ट

श्री सोमनाथ चोपड़ा

श्री इन्द्रजीत जैन

पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मारक शिक्षा समिति

श्री प्रेम नारायण जी सोमानी

श्रीमती सावित्री अग्रवाल

श्री कन्हैयालाल गोपालदास अग्रवाल

श्रीमती सरस्वती देवी एवं श्री हरि मोहन गर्ग छात्रवृत्ति

श्रीमती प्रेमा गुप्ता छात्रवृत्ति

श्री जयनारायण चेरिटेबल ट्रस्ट छात्रवृत्ति

तथा पूर्व छात्र चि. अजय शंकर दीक्षित, चि. प्रवीण भागवत, चि. महेश सिंह चौहान, चि. नितिन मित्तल, चि. सन्दीप मेहरोत्रा एवं चि. शशि शर्मा।

विद्यालय के पूर्व छात्र स्व. गुरुवर शरण अवस्थी की स्मृति में उत्कृष्ट अभिनेता छात्र को पुरस्कार दिया जाता है। यह स्थायी पुरस्कार उनके पिता डॉ. सन्त शरण अवस्थी ने प्रारम्भ किया था।

पाठ्येतर गतिविधियाँ

खेल-कूद व शारीरिक शिक्षा

विद्यालय में शारीरिक शिक्षा की भी व्यवस्थित योजना है। सामूहिकता की भावना विकसित करने

हेतु योगासन व समता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। साथ ही अपने सीमित साधनों में हमने खो-खो, कबड्डी, वॉलीबॉल, टेबल टेनिस जैसे खेलों में पर्याप्त कौशल प्रदर्शित किया है।

गत वर्ष १९९९-२००० में कबड्डी तथा खो-खो में विद्यालय जनपद स्तर पर प्रथम रहा। खो-खो की पूरी टीम तथा कबड्डी में ६ छात्रों का चयन मण्डल स्तर पर हुआ। विद्यालय में सैनिक शिक्षा को भी महत्व दिया जाता है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.) की वरिष्ठ तथा कनिष्ठ इकाइयाँ विद्यालय में सफलतापूर्वक चलायी जा रही हैं इनके प्रभारी विद्यालय के ही आचार्य हैं।

घर के सुरक्षित व सुविधाभोगी वातावरण से निकलकर छात्र स्वावलम्बन एवं कठोर जीवनचर्या का अभ्यास करते हुए देश का प्रत्यक्ष अध्ययन करें, इस दृष्टि से विद्यालय के छात्र देशदर्शन हेतु जाते रहे हैं। विगत वर्षों में अपने छात्र देशदर्शन हेतु देश के लगभग सभी कोनों में जा चुके हैं।

नैतिक शिक्षा

हमारी समय-सारणी में नित्य प्रातः मानस, गीता आदि ग्रन्थों के शिक्षाप्रद अंशों से युक्त प्रार्थना के बाद सदाचार बेला का प्रावधान है, जिसमें पूर्व निर्धारित आचार्य कथा, जीवनी आदि के माध्यम से छात्रों को आदर्श जीवन का पाठ पढ़ाते हैं। छात्रों में सर्वगुण-सम्पन्न व्यक्तित्व की स्थापना के प्रोत्साहन हेतु नियत मापदण्डों पर खरा उतरने वाले सर्वश्रेष्ठ छात्र को विद्यालय-रत्न पुरस्कार दिये जाने की भी योजना है।

समग्र व्यक्तित्व विकास

निर्भीक-सुचारु अभिव्यक्ति, उत्तरदायित्व तथा नेतृत्व भावना छात्रों की मानसिकता का अनिवार्य अंग बने, इस दृष्टि से विद्यालय में तीन संस्थायें कार्य करती हैं - अष्टम कक्षा तक बाल-भारती, नवम-दशम में किशोर-भारती और एकादश-द्वादश में तरुण-भारती - जिनके अन्तर्गत छात्र विद्यालय के विविध सामूहिक कार्यक्रमों का संचालन करते हैं। छात्रावास में भी विभिन्न पदों पर नियुक्त छात्र निर्णय-प्रक्रिया तथा छात्रावास-संचालन में गम्भीर भूमिका निभाते हैं।

विद्यालय के बाहर नगर, जनपद, प्रदेश स्तरों पर आयोजित वाद-विवाद, लेखन, ललित कला प्रतियोगिताओं में विद्यालय के छात्र लगातार भाग लेकर प्रतिष्ठा पाते आये हैं।

कम्प्यूटर शिक्षण

हमारी पूर्व-योजनानुरूप इस वर्ष कम्प्यूटर प्रयोगशाला को एक विस्तृत रूप दिया गया है। जिसमें बारह अत्याधुनिक मल्टीमीडिया युक्त पेण्टियम-१११ मशीनों को सम्मिलित किया गया है। इसका संचालन

चार अनुभवी शिक्षक कर रहे हैं, जिनमें से तीन इंजीनियर हैं। सबसे हर्ष की बात है कि वे अपने ही विद्यालय के पूर्व छात्र हैं। इस प्रकार यदि यह कहा जाय कि यह विभाग इस समय कानपुर के विद्यालयों में सर्वोत्कृष्ट कम्प्यूटर शिक्षा देने में सक्षम है, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

युग-भारती

बाल, किशोर और तरुण-भारती की शृंखला में अगली कड़ी है युग-भारती अर्थात् विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था। जिस उदात्त लक्ष्य की प्राप्ति हेतु इस विद्यालय की स्थापना की गयी थी, उसकी पूर्ति हेतु यह अनिवार्य था कि दशम या द्वादश उत्तीर्ण करने को ही छात्र के विद्यालय से जुड़ाव की समाप्ति न माना जाये। इसीलिए बहुत पहले ही पूर्व छात्रों की संस्था के रूप में संविधान, कार्यकारिणी इत्यादि के साथ तरुण-भारती की स्थापना हो गयी थी, जो कि अब युग-भारती के नाम से पंजीकृत हो चुकी है। पूर्व छात्रों का विद्यालय से यह जुड़ाव एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और अपने आप में एक इतिहास भी है। यही हमारे विद्यालय को अन्य विद्यालयों से अलग एक पहचान देता है। भारतीय चिन्तन में शिक्षा का उद्देश्य विषय का कक्षा-शिक्षण मात्र नहीं, अपितु व्यक्ति-निर्माण के माध्यम से समाज-जागरण माना गया है। समाज का प्रज्ञा-प्रवाह अवरुद्ध होना भी स्वाभाविक है, अतः आदर्श स्थिति यह होगी कि विद्यालय समाज को ऐसे सुयोग्य नागरिक प्रदान करें जो समस्त सामाजिक विकृतियों से अछूते रह कर अपनी तेजस्विता से निरन्तर नवजीवन का संचार करते हुए प्रज्ञा-प्रवाह की निरन्तरता बनाए रखें। दुर्भाग्यवश आज अधिसंख्य शिक्षा संस्थान इस उद्देश्य को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। ऐसे में युग-भारती के सहयोग से विद्यालय की प्रभावी भूमिका निश्चय ही भारत के स्वर्णिम भविष्य की दिशा में एक आश्वस्त है।

अन्त में ईश्वर से प्रार्थना है कि छात्रों में राष्ट्र-निष्ठा से परिपूर्ण समाजोन्मुखी व्यक्ति के उत्कर्ष में आप सभी समाज-बन्धुओं का सहयोग हमें निरन्तर मिलता रहे।

(वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रधानाचार्य जी द्वारा प्रस्तुत वार्षिक आख्या)

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् की हाईस्कूल परीक्षा में सम्मिलित होने वाले विद्यालय के विद्यार्थी

क्र०	अनुक्रमांक	नाम	क्र०	अनुक्रमांक	नाम
१.	०८६८७८२	चि० अभय चतुर्वेदी	३१.	०८६८८१२	चि० आशीष कटियार
२.	०८६८७८३	चि० अभिजीत सिंह	३२.	०८६८८१३	चि० आशीष कुमार मिश्र
३.	०८६८७८४	चि० अभिनव त्रिपाठी	३३.	०८६८८१४	चि० आशीष कुशवाहा
४.	०८६८७८५	चि० अभिषेक कटियार	३४.	०८६८८१५	चि० आशीष मिश्र
५.	०८६८७८६	चि० अभिषेक बाजपेयी	३५.	०८६८८१६	चि० आशीष सिंह
६.	०८६८७८७	चि० अभिषेक कुशवाहा	३६.	०८६८८१७	चि० आशीष श्रीवास्तव
७.	०८६८७८८	चि० अभिषेक सिंह	३७.	०८६८८१८	चि० आशुतोष गुप्ता
८.	०८६८७८९	चि० अभिषेक उपाध्याय	३८.	०८६८८१९	चि० आशुतोष पाण्डेय
९.	०८६८७९०	चि० आदेश यादव	३९.	०८६८८२०	चि० अश्विनी कुमार पाल
१०.	०८६८७९१	चि० आदित्य कुमार तिवारी	४०.	०८६८८२१	चि० अतुल गुप्त
११.	०८६८७९२	चि० आदित्य सिंह भदौरिया	४१.	०८६८८२२	चि० अतुल गुप्त
१२.	०८६८७९३	चि० आकाशदीप कसौधन	४२.	०८६८८२३	चि० भूपेन्द्र सिंह
१३.	०८६८७९४	चि० आकाश द्विवेदी	४३.	०८६८८२४	चि० चन्द्रेश श्रीवास्तव
१४.	०८६८७९५	चि० अखण्ड प्रताप सिंह	४४.	०८६८८२५	चि० दीपक सिंह
१५.	०८६८७९६	चि० अखिलेश कुमार गोपाल	४५.	०८६८८२६	चि० देवकी नन्दन तिवारी
१६.	०८६८७९७	चि० आलोक द्विवेदी	४६.	०८६८८२७	चि० दुर्गेश सिंह
१७.	०८६८७९८	चि० अमित कुमार गुप्ता	४७.	०८६८८२८	चि० गौरव खरे
१८.	०८६८७९९	चि० अमित कुमार सिंह	४८.	०८६८८२९	चि० गौरव सूर्यवंशी
१९.	०८६८८००	चि० अमित शुक्ला	४९.	०८६८८३०	चि० गौरव त्रिपाठी
२०.	०८६८८०१	चि० अमित बलि रमानी	५०.	०८६८८३१	चि० गौरव त्रिपाठी
२१.	०८६८८०२	चि० अंकित भाटिया	५१.	०८६८८३२	चि० गुञ्जन गर्ग
२२.	०८६८८०३	चि० अंकित भटनागर	५२.	०८६८८३३	चि० हर्ष अग्निहोत्री
२३.	०८६८८०४	चि० अंकित शर्मा	५३.	०८६८८३४	चि० हेमन्त जोशी
२४.	०८६८८०५	चि० अंकुर कुमार राय	५४.	०८६८८३५	चि० हेमन्त कश्यप
२५.	०८६८८०६	चि० अंशु कटियार	५५.	०८६८८३६	चि० हेमन्त पटेल
२६.	०८६८८०७	चि० अंशुल कुमार दीक्षित	५६.	०८६८८३७	चि० हिमांशु गुप्ता
२७.	०८६८८०८	चि० अनुराग पटेल	५७.	०८६८८३८	चि० हिमांशु जोशी
२८.	०८६८८०९	चि० अनुराग शर्मा	५८.	०८६८८३९	चि० हिमांशु मिश्र
२९.	०८६८८१०	चि० अनुराग वर्मा	५९.	०८६८८४०	चि० हिमांशु शुक्ल
३०.	०८६८८११	चि० आशीष गुप्ता	६०.	०८६८८४१	चि० हिमांशु सिंह

६१.	०८६८८४२	चि० जयेन्द्र तिवारी	६४.	०८६८८७५	चि० ऋषभ गुप्ता
६२.	०८६८८४३	चि० जितेन्द्र कुमार	६५.	०८६८८७६	चि० ऋषि दीक्षित
६३.	०८६८८४४	चि० क्रान्तिकंचन मिश्र	६६.	०८६८८७७	चि० ऋषि राज शर्मा
६४.	०८६८८४५	चि० कुमार सौरभ	६७.	०८६८८७८	चि० ऋषि राज शुक्ला
६५.	०८६८८४६	चि० कुशाग्र द्विवेदी	६८.	०८६८८७९	चि० सागर वर्मा
६६.	०८६८८४७	चि० मनोज कुमार त्रिपाठी	६९.	०८६८८८०	चि० समरेन्द्र प्रताप सिंह
६७.	०८६८८४८	चि० मयंक कुमार	१००.	०८६८८८१	चि० सन्तोष द्विवेदी
६८.	०८६८८४९	चि० मृणाल गौर	१०१.	०८६८८८२	चि० सर्वेश सिंह
६९.	०८६८८५०	चि० नमन कुमार अवधवाल	१०२.	०८६८८८३	चि० सौरभ गुप्ता
७०.	०८६८८५१	चि० नवनीत पाल	१०३.	०८६८८८४	चि० सौरभ कुमार अवस्थी
७१.	०८६८८५२	चि० नीलेश द्विवेदी	१०४.	०८६८८८५	चि० सौरभ सचान
७२.	०८६८८५३	चि० नीतेश दीक्षित	१०५.	०८६८८८६	चि० सौरभ सिंह
७३.	०८६८८५४	चि० नितिन दुबे	१०६.	०८६८८८७	चि० सौरभ तिवारी
७४.	०८६८८५५	चि० नितिन द्विवेदी	१०७.	०८६८८८८	चि० शैलेन्द्र केसरवानी
७५.	०८६८८५६	चि० पाहुल कुमार	१०८.	०८६८८८९	चि० शैलेन्द्र यादव
७६.	०८६८८५७	चि० पंकज यादव	१०९.	०८६८८९०	चि० शंकर द्विवेदी
७७.	०८६८८५८	चि० पीयूष त्रिवेदी	११०.	०८६८८९१	चि० शरद गुप्ता
७८.	०८६८८५९	चि० प्रज्ञेश गुप्त	१११.	०८६८८९२	चि० शशांक शेखर
७९.	०८६८८६०	चि० प्रॉजल श्रीवास्तव	११२.	०८६८८९३	चि० शिव सक्सेना
८०.	०८६८८६१	चि० प्रशान्त खरे	११३.	०८६८८९४	चि० शोभित माहेश्वरी
८१.	०८६८८६२	चि० प्रशान्त सिंह गौर	११४.	०८६८८९५	चि० श्रीकान्त वशिष्ठ
८२.	०८६८८६३	चि० प्रियम द्विवेदी	११५.	०८६८८९६	चि० सरोज गुप्ता
८३.	०८६८८६४	चि० पुलकित अग्रवाल	११६.	०८६८८९७	चि० सुदेश राजे
८४.	०८६८८६५	चि० पुनीत श्रीवास्तव	११७.	०८६८८९८	चि० सुगम श्रीवास्तव
८५.	०८६८८६६	चि० पुष्कर सिंह	११८.	०८६८८९९	चि० सुमित पाण्डेय
८६.	०८६८८६७	चि० राहुल मिश्र	११९.	०८६८९००	चि० सुमित टण्डन
८७.	०८६८८६८	चि० राहुल प्रताप सिंह	१२०.	०८६८९०१	चि० सुरजीत सिंह
८८.	०८६८८६९	चि० राहुल सिंह	१२१.	०८६८९०२	चि० सुयश अवस्थी
८९.	०८६८८७०	चि० राहुल तिवारी	१२२.	०८६८९०३	चि० सुयश कुमार मिश्रा
९०.	०८६८८७१	चि० राजेन्द्र कुमार पाण्डेय	१२३.	०८६८९०४	चि० विजयेन्द्र विक्रम सिंह
९१.	०८६८८७२	चि० रजनीकान्त उपाध्याय	१२४.	०८६८९०५	चि० विनय शर्मा
९२.	०८६८८७३	चि० रंजीत कुमार	१२५.	०८६८९०६	चि० योगेन्द्र कुमार दुबे
९३.	०८६८८७४	चि० रत्नेश पाण्डेय			

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद की इण्टरमीडिएट परीक्षा - २००१
में सम्मिलित होने वाले विद्यालय के विद्यार्थी

क्र०सं०	अनुक्रमांक	नाम	क्र०सं०	अनुक्रमांक	नाम
१.	०४१००६२	चि० अभय किशन गुप्ता	३२.	०४१०१२३	चि० आशुतोष शुक्ला
२.	०४१००६३	चि० अभय मिश्रा	३३.	०४१०१२४	चि० अतुल कुमार कटियार
३.	०४१००६४	चि० अभिनव पाण्डेय	३४.	०४१०१२५	चि० अविजित सिंह
४.	०४१००६५	चि० अभिनव त्रिपाठी	३५.	०४१०१२६	चि० अविजित सिंह यादव
५.	०४१००६६	चि० अभिषेक दीक्षित	३६.	०४१०१२७	चि० दीप सिंह वर्मा
६.	०४१००६७	चि० अभिषेक द्विवेदी	३७.	०४१०१२८	चि० दीपक शर्मा
७.	०४१००६८	चि० अभिषेक द्विवेदी	३८.	०४१०१२९	चि० धर्मेन्द्र सिंह
८.	०४१००६९	चि० अभिषेक शुक्ला	३९.	०४१०१३०	चि० धवल प्रताप सिंह
९.	०४१०१००	चि० आदर्श पाण्डेय	४०.	०४१०१३१	चि० गौरव दुबे
१०.	०४१०१०१	चि० आदित्य गुप्त	४१.	०४१०१३२	चि० गौरव गुप्ता
११.	०४१०१०२	चि० अजितेश रंजन	४२.	०४१०१३३	चि० गौरव पाण्डेय
१२.	०४१०१०३	चि० आकाश त्रिपाठी	४३.	०४१०१३४	चि० गौरव तिवारी
१३.	०४१०१०४	चि० अमित कुमार यादव	४४.	०४१०१३५	चि० हिमांशु शुक्ला
१४.	०४१०१०५	चि० अमित शुक्ला	४५.	०४१०१३६	चि० हिमांशु उपाध्याय
१५.	०४१०१०६	चि० अमित सिंह	४६.	०४१०१३७	चि० हिमांशु वर्मा
१६.	०४१०१०७	चि० अमितेश मिश्र	४७.	०४१०१३८	चि० जगदेव सिंह सेंगर
१७.	०४१०१०८	चि० आनन्द पाण्डेय	४८.	०४१०१३९	चि० कन्हैया अवस्थी
१८.	०४१०१०९	चि० आनन्द वशिष्ठ	४९.	०४१०१४०	चि० कुशल द्विवेदी
१९.	०४१०११०	चि० अंकुर दीक्षित	५०.	०४१०१४१	चि० लवकुश अग्रहारि
२०.	०४१०१११	चि० अंकुर सिंह गौर	५१.	०४१०१४२	चि० निखिल गुप्ता
२१.	०४१०११२	चि० अनुभव निगम	५२.	०४१०१४३	चि० निखिल कुमार
२२.	०४१०११३	चि० अनुज सिंह	५३.	०४१०१४४	चि० निकुंज अग्रवाल
२३.	०४१०११४	चि० अनुपम शुक्ला	५४.	०४१०१४५	चि० नीलेश मिश्रा
२४.	०४१०११५	चि० अनुराग दीक्षित	५५.	०४१०१४६	चि० निशान पाठक
२५.	०४१०११६	चि० अनुराग कृष्ण प्रताप सिंह	५६.	०४१०१४७	चि० निशान पाठक
२६.	०४१०११७	चि० अनुराग राठौर	५७.	०४१०१४८	चि० ओम कुमार शुक्ला
२७.	०४१०११८	चि० अनुराग तिवारी	५८.	०४१०१४९	चि० पंकज जायसवाल
२८.	०४१०११९	चि० अरुण भाटिया	५९.	०४१०१५०	चि० परमानन्द त्रिवेदी
२९.	०४१०१२०	चि० आर्य विश्वेप द्विवेदी	६०.	०४१०१५१	चि० पावस शुक्ला
३०.	०४१०१२१	चि० आशीष कुमार	६१.	०४१०१५२	चि० प्रबुद्ध कुमार त्रिपाठी
३१.	०४१०१२२	चि० आशुतोष निगम	६२.	०४१०१५३	चि० प्रदीप अवस्थी
३२.	०४१०१२३	चि० आशुतोष निगम	६३.	०४१०१५४	चि० प्रखर श्रीवास्तव
			६४.	०४१०१५५	चि० प्रशान्त बाजपेयी

६४.	०४१०१५६	चि० प्रियंक उपाध्याय	१००.	०४१०१६२	चि० वैभव सिंह
६५.	०४१०१५७	चि० पुनीत गुप्ता	१०१.	०४१०१६३	चि० वरुण अवस्थी
६६.	०४१०१५८	चि० पुनीत टण्डन	१०२.	०४१०१६४	चि० विकास वर्मा
६७.	०४१०१५९	चि० राहुल रस्तोगी	१०३.	०४१०१६५	चि० विनीत कुमार पाण्डेय
६८.	०४१०१६०	चि० राजीव सिंह	१०४.	०४१०१६६	चि० विनीत सिंह
६९.	०४१०१६१	चि० रामप्रताप सिंह बुन्देला	१०५.	०४१०१६७	चि० विश्वजीत सिंह
७०.	०४१०१६२	चि० रणञ्जय प्रताप सिंह	१०६.	०४१०१६८	चि० विवेक कुमार मिश्रा
७१.	०४१०१६३	चि० रवि वली रमानी	१०७.	०४१०१६९	चि० विवेक सिंह
७२.	०४१०१६४	चि० ऋषभ देव सिंह			
७३.	०४१०१६५	चि० रोहित मिश्रा			
७४.	०४१०१६६	चि० सचिन कुमार गुप्ता			
७५.	०४१०१६७	चि० सागर दीक्षित			
७६.	०४१०१६८	चि० सन्दीप कुमार द्विवेदी			
७७.	०४१०१६९	चि० सन्देश ओमर			
७८.	०४१०१७०	चि० संजय बाजपेयी			
७९.	०४१०१७१	चि० सौरभ			
८०.	०४१०१७२	चि० सौरभ दोसर			
८१.	०४१०१७३	चि० सौरभ केसरवानी			
८२.	०४१०१७४	चि० सौरभ कुमार दुवे			
८३.	०४१०१७५	चि० सौरभ सिंह राजपूत			
८४.	०४१०१७६	चि० सौरभ त्रिवेदी			
८५.	०४१०१७७	चि० शैलेन्द्र चतुर्वेदी			
८६.	०४१०१७८	चि० शशांक मलैया			
८७.	०४१०१७९	चि० शशांक श्रीवास्तव			
८८.	०४१०१८०	चि० शिवाजी चतुर्वेदी			
८९.	०४१०१८१	चि० शुभेष पाण्डेय			
९०.	०४१०१८२	चि० शुभांशु पाण्डेय			
९१.	०४१०१८३	चि० सुजीत प्रताप सिंह			
९२.	०४१०१८४	चि० सुक्रीत चौरसिया			
९३.	०४१०१८५	चि० सूनभ सिंह			
९४.	०४१०१८६	चि० तरुण बाजपेयी			
९५.	०४१०१८७	चि० उमेश कुमार शुक्ला			
९६.	०४१०१८८	चि० उपेन्द्र सिंह			
९७.	०४१०१८९	चि० वैभव अग्निहोत्री			
९८.	०४१०१९०	चि० वैभव गुप्त			
९९.	०४१०१९१	चि० वैभव मिश्र			

विद्यालय-परिवार

प्रबन्धकारिणी - समिति

१. श्री इन्द्रजीत जैन	अध्यक्ष
२. डा० ज्ञान चन्द्र अग्रवाल	उपाध्यक्ष
३. श्री वीरेन्द्र जीत सिंह	सचिव
४. श्री इन्द्र प्रकाश रस्तोगी	सह सचिव
५. प्रो० राजेन्द्र सिंह "रज्जू भैया"	सदस्य
६. श्री रामबालक मिश्र	सदस्य
७. श्री जय गोपाल जी	सदस्य
८. डा० जगमोहन गर्ग	सदस्य
९. श्री गौतम तालवाड़	सदस्य
१०. श्री कृष्ण गोपाल लाहोटी	सदस्य
११. श्री प्रेम चन्द्र गुप्त	सदस्य
१२. श्री यतीन्द्र जीत सिंह	सदस्य
१३. श्री ओम शंकर	पदेन सदस्य
१४. श्री प्रकाश नारायण वाजपेई	शिक्षक प्रतिनिधि
१५. श्री राजेश कुमार शुक्ल	शिक्षक सदस्य

प्रधानाचार्य - श्री ओमशंकर त्रिपाठी

आचार्य-मंडल

हिन्दी विभाग

१. श्री रामतीर्थ मिश्र	(प्रवक्ता)
२. श्री महेन्द्र प्रताप दुबे	(आचार्य)
३. श्री जगपाल सिंह	(आचार्य)

अंग्रेजी विभाग

१. श्री बिहारी लाल मिश्र	(प्रवक्ता)
२. श्रीमती शारदा राव	(प्रवक्ता)
३. श्री वीरेन्द्र सिंह पाण्डेय	(आचार्य)
४. श्री गया प्रसाद वर्मा	(आचार्य)

गणित विभाग

१. श्री कैलाश जोशी (प्रवक्ता)
२. श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव (आचार्य)
३. श्री प्रदीप बाजपेयी (आचार्य)
४. श्री दीपक राजे (आचार्य)

रसायन विज्ञान विभाग

१. श्री राजेश शुक्ल (प्रवक्ता)
२. श्री दिनेश सिंह भदौरिया (आचार्य)
३. श्री अरुण कुमार शुक्ल (आचार्य)
४. श्री सुधीर अवस्थी (आचार्य)

सामाजिक विषय विभाग

१. श्री सुभाष चन्द्र शर्मा (आचार्य)
२. श्री सतीश चन्द्र गुप्त (आचार्य)

कम्प्यूटर विभाग

१. श्री विवेक भागवत
२. श्री अरुण चतुर्वेदी
३. श्री अक्षय माथुर
४. कु० शैलजा त्रिवेदी

भौतिकी विभाग

१. श्री हेमन्त शुक्ल (प्रवक्ता)
२. श्री श्रीप्रकाश ओझा (आचार्य)

जीव विज्ञान विभाग

१. श्री प्रकाश नारायण बाजपेयी (प्रवक्ता)
२. डा० उमेश चन्द्र तिवारी (आचार्य)

संस्कृत विभाग

१. श्री गणेश शंकर बाजपेयी (आचार्य)
२. डा० मनोज कुमार शुक्ल (आचार्य)
३. डा० विश्वम्भर नाथ द्विवेदी (अंश कालिक आचार्य)

कला विभाग

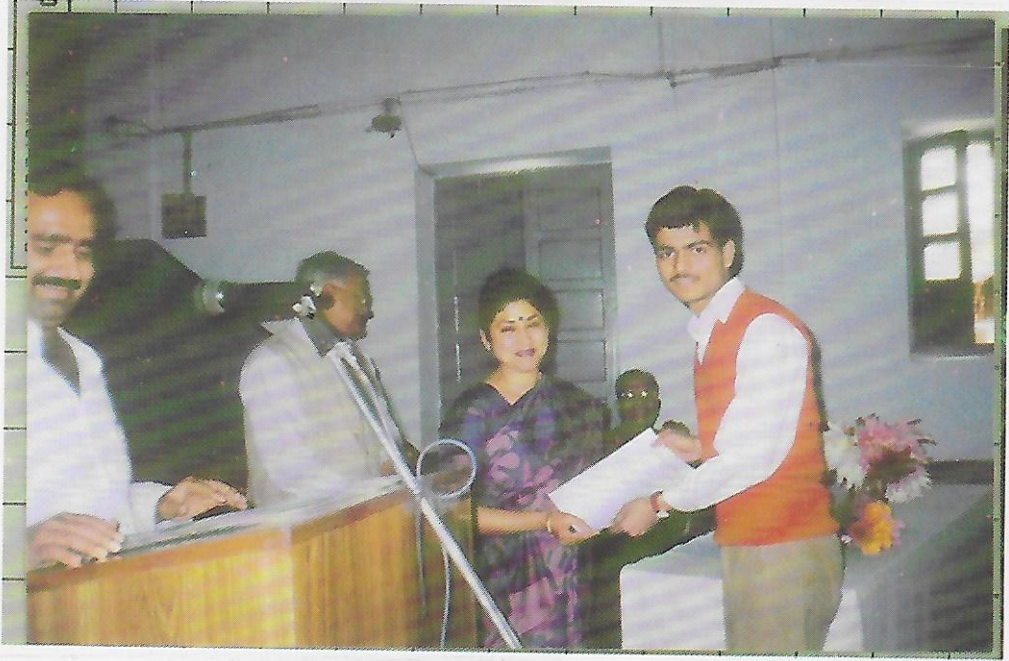
१. श्री आनन्द प्रसाद वर्मा (आचार्य)

छात्रावास अधीक्षक

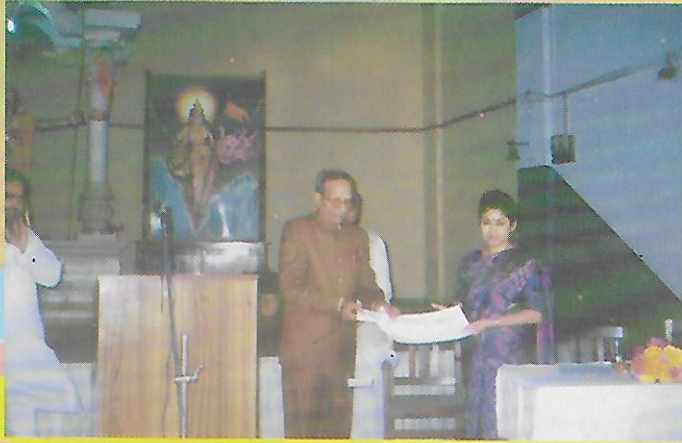
श्री लक्ष्मी शंकर द्विवेदी

कार्यालय

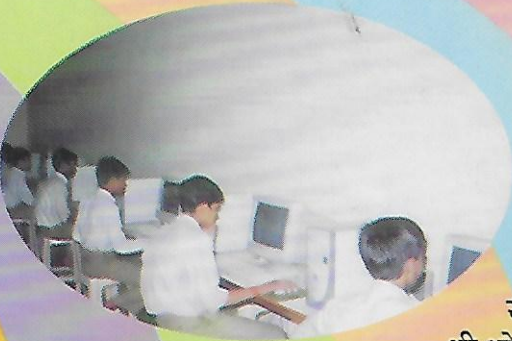
१. श्री मदन मोहन मालवीय
२. श्री ओंकार नाथ गुप्त
३. श्री मयंक मणि
४. श्री अश्विन्द त्रिवेदी



तुम्हारी पीड़ा मेरे अन्तस् को भी कचोटती है
(गुजरात भूकम्प पीड़ित बन्धुओं को राशि समर्पण के पश्चात जिलाधिकारी कानपुर
नगर छात्रावास - प्रमुख चि० आशुतोष शुक्ल को प्रोत्साहन प्रमाण-पत्र
प्रदान करती हुई)



बन्धु पीड़ा का न हो अहसास
हम भी साथ में हर पल तुम्हारे चल रहे हैं।
डा० ज्ञान चन्द्र अग्रवाल



सम्प्रेरण :
श्री ओमशंकर त्रिपाठी

सम्पादन :

श्री महेन्द्र प्रताप दुबे 'सुमन'
श्री दिनेश सिंह भदौरिया

संयोजन

श्री गणेश शंकर वाजपेयी
श्री कैलाश चन्द्र जोशी
श्रीमती शारदा राव